॥ ॐ ॥

॥ सोभासारेजक्तमे, यनममसोभेश्रीराज, अरहतगुरुके ध्यानसे, सुधरे सगलाकाज ॥ १ ॥

॥ श्री जैन पुष्प रत्नमाला ॥

प्रात स्मरणीय, पुज्य श्री श्री १००८ श्री अमरसिंहजी महाराजके, सम्प्रदायके वयोवृद्ध स्वामीजी महाराज, श्री १००८ श्री दयालचन्द्रजी माहाराज,

प्रसिद्धवक्ता,

मुनी श्री १०८ श्री हेमराजजी महाराजके, सदुपदेशसे संग्रह करके, छपाके प्रसिद्ध कर्ता

शाधनराज गुमनाजी लुकड (खंडप)

ग्राम (मारवाड) पोष्ट (समदड़ि)

प्रथमावृत्ति १०००   (वीर समत २४५२)

(विक्रम समत, १९८३ श्रावण सुद १३)

मुल्य सदुपयोग

वसत मुद्रणालयमां चीमनलाल ईश्वरलाल म्हेताए छाप्यु
ठे सीवील हॉस्पीताल-अमदावाद

(नोट)—इस पुस्तकको, उघाडे मुख, जो दिपकके, प्रकाशसे न पढे यतनासे पढे, इस पुस्तकको सावधानसे रखे, यत्नासे,

(नोट)—जिस महाशयको, इस पुस्तककी आवश्यकाहो, वह, चार, आनेके, टिकट डाक महसुलके, लिये निम्न लिखित पतेसे भेजे टिकट पहुचतेही पुस्तक शीघ्र भेजदी जायगि

(पुस्तक मिलनेका पता)

१ गिरधारीलाल गुमनाजी (मु खडप)
पोस्ट समदडी (मारवाड)

२ भाइ गिरधारीलाल सीताराम
मु खुरदारोड पोस्ट जटनी
जिला पुरी

1 Girdharilal Gumnajee
(Village) Khandep
P O Samdari (Marwar)

2 Girdharilal Sitaram
Khurdaroad
P O Jatni Dt Puri
B N R

प्रस्तावना.

आधुनिक विज्ञानमय समयमें मुद्रयालयोंका पूर्ण आविष्कार होनेसे अनेकानेक विषयोंकी पुस्तके पाठक वर्गके सामने उपस्थित होती है और इसी कारणसे वाचनकी लालसा सभ्यसमाजमें बढती जा रही हैं सत्सग और कुसगका परिणाम जैसे मनुष्य हृदयमें अछा और बुरा प्रभाव जमाता हैं इसी तरह वाचनमेंभी अछी पुस्तके और हलकी पुस्तकें अछा व गन्धा प्रभाव उत्पन्न करती है, अछी पुस्तकें समाजमें शुभ भावना फैलाती है एव हलकी पुस्तके अशुभ भावना फैलाती हैं

वर्तमान समयमें बहुतही पुस्तकें मुद्रित हो चुकी है उसमें कितनी शर्कराकी तरह सर्वांश ग्रहण करने योग्य है और कितनी द्राक्षाकी तरह है जिसका बहुत अंश ग्रहण करने योग्य और अल्प भाग त्याग करने योग्य है और कितनी खारिकके समान है अर्थात जिसका आधा भाग ग्राह्य है व आधा त्याज्य है कितनी बेर की समान है जिसका थोडा अश ग्रहण करने योग्य और ज्यादा अश त्याग करने योग्य है और कितनी धूल एव ककरकी तरह है जिसका सर्वांश त्यागने योग्य हैं,

वर्तमान समयमे कितनीही पुस्तकें शृंगार व गायनको सजावटसे सजी हुइ जहा तहा देखनेमें आती है जिन्होंसे विद्यार्थीओंका जीवनपर बहुतही बुरा असर उत्पन्न होताहै

और समाजमें भावी उन्नतीसे वचित रहनेका प्रष्ण उप स्थित होताहै इस लिए एसी पुस्तकोंका प्रचार रोकनेके लिए व उन्हीकी जगह दूसरी ज्ञान और वैराग्यकी पुस्तके प्रकट करनेकी पूर्ण आवश्यक्ता है एसी इच्छा बहुत समय से मेरे हृदयमें लगी हुइथी

संवत् १९८१ का चातुर्मास में अमदावाद माधवपुरा मे विराजमान स्वामीजी माहाराज पूज्य श्री १००८ श्री दयालचंद्रजी माहाराज तथा श्री हेमराजजी माहाराज सावकी सेवा में मैने पत्रद्वारा अपनी हृदयेछा प्रकट करी कि कोइ धार्मिक व औपदेशिक पुस्तक तेयार होयतो मेरे लिए प्रदान करें जिसको मैं निजद्रव्य से छपवाकर समाज में अमूल्य वितीर्णकर निजद्रव्यका सदुपयोग करने का सौभाग्य प्राप्त करु

महाराज साव से मुजे पूर्ण सतोषका ऊत्तर मिला कि मेरे पास हालही में संग्रहकी ऊई एक "जैन पुष्परत्नमाला" है उक्त पुस्तक से मानव संसार का बहुत कुछ उपकार हो सकता है इस में प्रस्ताविक सझाय वस्तवनोका पूरा समावेश कियागया है कितने ही स्तवन प्राचीन मुनिव र्यों के रचित है जो कि धार्मिक उपदेश से पूरित वैराग्य भाव के दर्शक है और तुमारी एसी धर्म भावना से मैं प्रसन्नता प्रकट करता हुवा यह तुझे उपदेश॰रूपसे पुष्प- माला प्रदान करता हु एसी माहाराज साव की फरमायश

से मुझे बहुत खुशी हुई और महाराज साबसे उक्त पुस्त-को ग्रहण कर समाज हितार्थ छपवाकर धर्म प्रेमी भायोंकी सेवा में अर्पण करता हुआ अपने को कृत कृत्य मानताहूं

स १९८३ पौष शुक्ल
५ मगलवार

आपका
धनराज गुमनाजी.
मु गडप, (मारवाड)

(मारवाड) गंडप के निवासी सुश्रावक पुण्यप्रभाविक देवगुरु भक्तिकारक गुमनाजी लुकड के सुपुत्र बडे गिर धारीलालजी सावल चदजी सीतारामजी रुगनाथमलजी वजराजजीने यह पुस्तक छपवाके अमूल्य भेट कीया



अनुक्रमाणिका.

॥ॐ॥

॥ श्री वितरागायनमः॥

॥ श्रीजैनपुस्वरतनमाला ॥

॥ ततूनप्रजाती ॥ ग्रहशांतीनोः ॥

॥नंबर ॥१॥

जविक चोवीस जिनंद सिमरणाः इणविध ग्रहशांतीकरणा. ज० टेक ॥ रविवारमे पद्म प्रजूजी, एक चित दीलमे धरणा; चंद्र दशामां चंदा प्रजुजी भज सर्वने रोग हरणा. ॥ज०१॥ वासूपुज द्वादसमाध्यावो, जोमिसुतग्रहहरणा आठ जिनंद जजबूधवासर; ज्यारा न्यारा न्यारा करु निरणा. ॥ज०२॥ विमल अनंत धर्म शांती कुथुजी, अरयनाथजी उधरणा; नमीनाथ माहाविर जीनेसर, जेटो सदायांरा चरणा.॥ज०३॥ ऋषजअजीतसंजव अभिनंदन सुमती प्रजुजगतरना सुपारसशितल श्रेयंशजीनंदका गुरुकी दशामे लेवो सरणा.॥ज.४॥

सुवधीनाथ नृगूवारे सिवरो राखी मुखपे जरणा, शनीवारे मुनिसुव्रत वंदों, मीट जावे जनम ने मरणा.॥ज०५॥राहूग्रहे होय शांतिजावमे,नेम प्रभु शुण वरणा; मल्लि प्रभु पार्श्वजिन प्रणम्यां, केतु दोस वीसरणा. ॥ज० ६॥ ग्रहे पीडा कबूह नही व्यापे, प्रभूगुण उरमे धरणा; सुपसंपत बहु लील विलासे, आपदसर्वविरूरना. ॥ ज० ७ ॥ चोवीसे जीनवर इणपर ध्यावोथे ओर जंजाल नपरूणा, रीषचंनणमलक हे जीनवरतुठां; पामेलासुषशिवपुरना. ॥ ज० ८ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥नं० ॥२॥

॥ लावणीकि चाल ॥

गणधर डुंदाला, थाने मनावे गोतम देवता; द्वादशांगी सुंमाला; सुरपतनरपतथांने सेवता. ॥ ॥ टेक० ॥ महादेव मोटा माहाविरजी, धरमतात ठेराया जवरी गवरो रंभा तुमची; जिनवाणीसुत

जाया के जिणसे जागीया, मोहनिद्रासे उठ छुट सब त्यागीया. ॥ग०१॥ प्रथम संघेण संठाण विराजे सातहात तनु सोहे, रुपरसाला सुंरु सुंमाला, सुरनरना मन मोहे, सुरनरना मन मोहेके; झिग-मिगदीपता, पार्श्वी करत कोइ नही जीणसे जीपता. ग० ॥२॥ मंगलचरण प्रथम तुं देव विनायक, मे समरीयागण इस; सुपसंपत आणंद वरतायो, संपत करो जगदीश, संपत करो जग-दीसके मे शरणे आवीयो; ऋषनेमीचंद गजानंद एसो गावीयो. ग० ॥३॥ इग्यारे गणधर च वदे सहेंश्रमुनी, सबमे शिरोमणी आप, श्रीसुधर्मग-बइ चाषीयो सकांइ, दिन २ चढत प्रताप, दिन २ चढत प्रताप के लब्धी भंडारहो; अष्टसिद्ध नवनिद्धरधीका दातारहो. ग० ॥४॥ अमरसिंघा-झोपुजपुनमगरु, मे जेट्या वरुभाग; उगणीसे सरुसट असारु, नागोरीयां के वाग, नागोरीयां

या वागके भिलाके आवियादरीषांनाधामी वाल-केचोमासाठावीया. ग० ॥५॥ इती संपूर्णः ॥

॥ नवकारमंत्रकि लावणी लिखंतेः ॥

सवमंत्रांमें श्रीकारयही मंत्र हे महाराज इसी-पेंने चाजोरपताजी नवकारमंत्र प्रन्नावन्नूतपिणवल नही सकताजी. टे १॥ एकहीती प्रतीष्ठहेनगर; राजवल करता, म. ज्यांजीनदत श्रावगरेताजी,एक दीन वर्षाजोर नंदी चढआइषेतांजी; रइयत राजा-नंदी देषने वोचलता, म. आया वीजोरावहेताजी देषतेरूपे लिया करूवाय. नुपकुदीना महेताजी, वहोतस्वादलगे नृपकहेये दरषतकह्याहे; म. लावो तुमपवरा पुगताजी. ॥न॥ १ ॥ नरनंदीतीरगये दूर वगीचाआया म. लोकके चितर न धसनाजी इहा-जक्षकरेगातुंमनक्ष जावोटलजो जुगवसनाजी. पि-ठा आया सुनट कहे जावे सो नही आवे म. नही मीटी नुपके तृष्णाजो, सवनामवको चोठी

झालघझामे बूरीहेरसनाजो नितकुंवारी कन्याके हातसे चिठी निकाले. म. जावेनर वोही चीमकताजी न. २॥ वोतज जीनकी आशनराश हो धता. म. लेफनंवानदीमेंवतांजी वोजुतप्राण ले लुटगयासो पिठा न आताजी इहांतेरुताकतारहेवीजोरालेके. म. जुपकूरोजषीलाताजी इमनितखपता वीनमोत वहोत दूनीया घवराताजी, सब मीलकहे नृपसे नगरखालीहोयजासी म. पीठे कुण राषेगा नुषताजीः न. ३॥ नहीमांनी नृपन्नररोश सवीकुं हटावे. म. लोकतो केके नयेहरानीज एक दीन चीठी आइ श्रावकको जीन दासपहीचांना सागारी कियासंथा राजायवांप ऊंचे म धरया नवकारमंत्रका ध्यान, वोजुतका वलगयाठुट.काजो लुंट नहीसके ऊसीका प्राण नवपदसेदालझो झांन जक्षदि ना म.वो पिठलाभ वकुनिरपताजी.न०॥४॥ लेसंजमकुंदीयाविराध सोविंतरहुवा, म० नहीतो

होता सुरपद निर्वाणाजी,देव लगेसेठके पाय;तुंही
गुरु मेरा जांण्यां भगवान, तुमवर मागो देवद-
र्शन निरस नही जावे. म० सब जीवकुं दो अभे-
दानाजी, ओर मेरे कछु नही चाय; एक बीजोरा
दो नित आंण; जक्षमांन वचन जब सेठकुं ठेट
पहूंचाया. म० नेश्चेसेजपनही भषताजी, न०॥५॥
तेरु कहे बीजोरा नही आया सेठकुं लाया. म०
ठेट नही गया कियातोफानाजी,सेठकिया बीजोरा
भेट; अचंभापायातेराजना, ओर मरथाने तुज
वरथाकहो केसे जाइ, म० सेठने के दीया सवी
वयांनाजी, सुण जमी आसता सुप कहे मंत्र वका
वनवांन; किया नगरशेठ दिवांन देशका थापे.
म० लोकतो सवी हरषताजी, न० ॥६॥ जक्ष करे
बीजोरा भेट सेठ दे नृपकुं, म० नगरमे जस
विस्तरीयाजी,देव करे सेठ किवेठदेषो नवपदकी
किरीयाजी; नितमरत वंचाया सेठ विसुदगत

पाया, म० अमरसिंघजीके गणधरीयाजी, कृष-नेमीचंद कहे पूज पुनमगरु ज्ञानका दरीयाजी; संवत उगणीसे तेसठकी साल जिरूर चोमासा. म० त्रवजीव धर्म करो संतरेवे टिकताजी,

॥ न० ॥ ३ ॥ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० ॥ ४ ॥ खिम्यानो चोक ॥

सार धर्महे प्रथम साङ्का, डुकरषीम्या-करणेका; जीनवर फुरमावे, जगतमे मारगहे वोतिरणेका. ॥ जी० टेक० ॥ द्वारामती नगरीके अंदर, कृस्न माराजा राज करे; हे पिताजीनोके, वसुदेव देवकि मातसीरे.गजसुखमाल नन्दन तसु व्याहो निनांणु अंते भर आनधरे, सामो सोमल कन्या रूपदेखी कृष्णजी मेहलधरे, तिणसमे नेम समोसरथा, नंदनवन मजारजी माधववंदनको

चले, लिये गजकुं लारजी, वाणी सुणी श्रीनेमनी गज लीनोतो संजमभारजी, ओछव कियोश्री कृस्नजी, अंतगढमे इधकारजी. ॥लावणी॥ पूछे जीनवरको एसी जो दिलमे आइ, मने उपरवाके कीसेरी दोदिषलाइ; जिनभिषुनी परीमा द्वाद-शमी फुरमाइ; चल गये मशाणके विच ध्यां नदीयो ठाइ. ॥ दोरू ॥ आये सोमल तिणवार, देषी गज अणगार; भुसे स्वांन गजलार, जेसेकोप किया २ विना गुंनेमेरीवाल; इणठोरी ततकाल, सिर वांधी माटी पाल, पीरा मेल दिया २ हुंते सुसरा ने जमाइ, सगपण गीएया तसु नाइ;मुनिषी म्या चितलाइ, समरस कुंपिया२ दोय घरी केरे म्यांन; मुनी ध्यायो सुकल ध्यांन, पाम्या केवल ज्ञान; अनंतज्ञान लह्या २ मोलत लाषां भवका देणा चुकाया, सोच किया नही मरणेका.॥जी॥ ॥१॥ परदेशी परभव नही माने, मिथ्या मतकी

संग लागी एक केशी मुनीजी जीनोकुं गरु मी-
लगये वकेजागी, प्रश्न इग्यारे पुछे रायजी; जीन
दर्शनका वेरागी, एक वेले २ करे पारणो, गजतणी
त्रीसना त्यागी (सेर) राय तणे राणीहुंती, सुरी
कंता पटनारजी; चितप्रधांनथी स्वारथी एक
सुरीकंत कुमारजी, स्वारथरीसगायां, जोइजोइण
संसारजी; राणी राजाकुं मारवाकों; करत हे वि-
चारजी. (लावणी) थयो धर्म गेलमो कंतराज तज
दीनो, तव कुमरको बुलवाय; मारण मन कीनो;
ए वचन मातका सुण मोन धरलीना, सुण आप
गयो मुकान, कांननही दीना; (दोरू) जबरांणीने
विचारी, कुमर करेगो जहारी, जाय रायपे पुकारी
रांणी एम कहीर थाकोपारणो माहाराज, मांके
मेलां करो आज; राजा जांण्यो न अकाज, अर्ज
मांन लहीर रांणी वणाया हेमाल, माहे जेरदीयो
घाल, आणप हुं तो कालः जांण्यो भुप सहीहे

कथाकार केजो मांय; रांणी टुंपो दीयो जाय, तोइ राजा रूीगीयो नाय, षिम्यातीकी रही २ (मीलत) सुरीयाज्ञ नवकर मोक्ष जावेगा कांम नही नव फिरणेका. जी० ॥२॥ नगरी सावथी कनक केतुकी, मृगावती है पटनारी; सुतषंदक कूमरजी, जीनोके फरजन हे उत्तम प्राणी; जोवनवयमे परण्या लालजी, एक दीवसमे गरुवाणी सुण हुवा वेरागी, जीणोने संजम लियो सुद मन आणी, (सेर) मायतांते हट कीनी घणी; मांन्यो नही लीगारजी, सुभट दीया संग पांचसे वेठानेचालेलारजी, वेनतणे पुर आवीया, मुनी करत एकल वीहारजी; पुरसिंह राजा कूंती नगरी, आयासेर मजारजी. (लावणी) राजाने राणी रांमत गोषां करते, राणी देख्यो निज भ्रात नेण जलजलते, राजा चिंते इसको जारपूरषको रुन-रते; उठ चल्यो सभाके विच कोप दील धरते;

(दोड) जब नफरकूं बुलवाये; मुनीराजको मंग
वाये, स्मशानकुं भीजवाये; एसा हुकम दीया
तिखेपाळणे सेजाल, सब उतारदी वीषाल, ना
सल नही घाल, लोइ वेहगयाश्मुनीपरी साही सहे
सगपण नही कहे; क्षम्या करी शिव लहे; अं
ज्ञान लिया २ जब नृपने विचारा, राजा राण
पेवो पार, मारे गये अणगार; बरु जुलम किया
२ [मीलत] सुन्नट पांचसे लियो संजमसुण
सोच किये नृप डरनेका, ॥जी० ॥३॥ इम अनेक
तरथाक्षम्यासे, किसश कामे दापूं नांम; एकपंदक
रुषीजीशीक्षपांचसे, पीले घाणीमे पहूंता शिव
ठाम, इणहीज आरे नर्तक्षेत्रे; देश पंजाब आं
उतम गाम, एक अमरसिघजी पूजनये शिव
व्रसाधनका (सेर) अर्जीत दीर्लाके पातस्या, वाजे
तो राज रुघनाथजी सवत सतरे पुज पदारे, सुणो
उसी वगतकी वातजी, जीणधर्म सुन दीवानजी

रंगी तो सातुं धातजी, मुरधर देशकी विनती;
उन्ना करजोमी हातजी, (लावणी) मुंनी कहे
किम आवों थारे देश सादकुंमारे, बंदोवस्त कियो
परधान वाइ सरजवाके; एक जोधपूरमे विचरत
पुजपदारे, भूदराज तलेटी विच मुंनीकुं उतारे;
[दोरू] मिथ्याती कुब जांणे नांइ; आसोवकी
हवेली वताइ, प्रधान तो जाणे नांइ, छांने जुलम
किया २ उसमे थादे वजोग; कांइ न जाय सके
लोग, मुनी करे नही चिंता सोग; जठे मुनी समो-
सरयार देवरातकुं चल आये, सर्प सींघवनवाये,
चोत मुनीकुं संताये, क्षम्या करी मुनी नमरथार
जाणुंकार सुणवाये, देव आय लगे पाये; प्रातः
जयेलोक आये,देषा मुंनी नमरथा (मीलत) उद्योत
हुवा रूपनेमीचंद कहे, कांम वडा जीन शरणे-
का, ॥जी०॥४॥ (कलश) पुज जीवराजजी संवत
सोलेमें हुवा;पिंडतपढ अंगजी,तसपाटपुजश्रीलाल

चंदजी, तसपाट पूज अमरसींगजी; तुलछीरांम पूजपाट अमरके, तिजे पाट सुजाणजी, चोते पाट श्रीजीतमलजी, पांचमे मुनी चंद्रग्यानजी, शशि उध्योपूज पुनमचंदजी, छटे मेरा गुरुराज हे, तस पाटे जेष्ट मुनी नेम न्नाषे, सात पिढीरो जश गाजहे१ इति संपूर्ण ॥

॥ नं० ॥ ५ ॥ दांनको चोक ॥

दांन शील तप चोथी न्नावना, कोयक चितसे न्नावेगा, न्नगवत दरसावे; जीनोसे अषे अमरपद पावेगा, न्न० ॥टेर॥ संगम गवालीया पुरव न्नवमे, मुनीवरकुं वेराइपीर, न्नये शालन्न-द्रजी शेठ गोन्नद्र तणे वर वाले सीर, एक दी-वस आये वोपारी, रत्नकांवलतो सोले जीण तीर, राजग्रहीमे फिरे जीनोके विकीनही होगये दलगीर, (सेर) न्नद्रा तो वेठी गोंषमे, लियावो

पारीजांकजी; मुष मांग्यां दाम दीना, मेटी नग
रनी वांकजी, षंक वतीसे करदीया, नारयांने
वेलोराषजी,सासुक्यूंमेलीयाजापला,वहुयांने दीय
नांषजी, (लावणी) एक लेकर जंगण गइ रा
के माही, रांणीने देष श्रेणकको सर्व सुणवा
नृपकर असवारी चले सेठ घर तांइ, जडां
दीयो वहु मांन कुमरको लाइ, (दोरू) वुट
परसेवाकी सेर, मारे माथे धणी फेर; किन
करणी मांइ देर. एसी दिल आइर नारोवत
सुंइलेष, नित तजे एकाएक, सुजद्रा वेनी देष
केसी करी जाइर धनो कहे सुणनार, एतो काय
गिमार, लिया शालाजीकु लार, आवु जीटकाइ
धनो धण संजमधार, गये मुक्ती मजार, शाल
जड़ अणगार स्वार्थसीद्ध मांइ (मीलत) दां
तणा फल परतक्ष देषो, एक जवकर शिव ज
वेगा, ज० ॥१॥ महेंद्ररायकी धूया अंजना, पव

कुमर सेव्या वकीया, जबसे बीटकाइ वर्स वारे कुवर कटक गया, पंषी जोग छांने आये, शती पेरमी गया, जब गर्भ रया उदर वृधी देषी, सासुने शतियांके सीर दोश दीया, (सेर) देषा तो दीश सहे नांणका, सासुतो माने नायजी, वस्त मालाटेरकुटी, घरी एक तेराताथजी, तुम सुत आवे ज्या लगे, राषोतो मोरी मायजी, सासुतो अनका त्याग कीना, पिहर दो पहुंचायजी, [लावणी] कर दोनुके काला वेस पीहर पोचाइ, माइ तां कीनो ढेष कलंक लेआइ; फिरिसोवंधव घरद्वार किणीन वतलाइ, देषो किण हीनपायो निर फेर दी डाइ [दोरु] छुटी आंसुरेके धार, विप्र पाये जलवार, गइ वनके मजार मीले गरुज्ञानीर वूठे पूर्वजव विचार, जायो हणुवंत कुमार, माश चित गया वार, मांमा घर आणी पवन लंकासे जब आए, घरनारी नही पाये,

सब वनकुं ढुंढाए छाती घवरांणी शती प्रगटो हे मोशाल. आए मिले ततकाल, सब उतर गये आल, सति हरषांणी, [मीलत] शियल तणा परन्नाव जब रहे, सुरपती सोइ गुण गावेगा, न० ॥ २ ॥ काकंदि नगरीके अंदर नद्रा स्वार्थवाही हे, सुतधनोजीनोके; उसकुंवतीस रंन्ना परणाइ हे; सुष नोग नोगवंतो विरवांणी सुण एसी तो दीलमे आइ हे, सुधसंजम लिनो जीणांने उती रुऽ छीटकाइ हे, (सेर) दिक्षाके दिन श्रीविरपे, जोड्या तो दोनु हातजी, वेले तो वेले पारणो, जावजीव करायदो नाथजी; रंकादिक तो वंछे नही, जे सातो लेणा नातजी; अन्न मीले तो जल नही, जल मीलेतो नही अनजातजी, [लावणी] मुनीकर२ तपस्या षंपरकर दिवी काया, सुरु नणे इग्यारा अंग राजगृही प्रनु आया तिहां राजा श्रेणक पुछे शिसन माया, करणीमे

ुण श्रीकार विरवतलाया (दोरू) सादु स्वदे
ुजार, रजत जे मांहे सार; धन घनो श्रणगार,
ुणग्रांस किया २ श्रेणक वंदे वारंवार धन्य मुनीनो
श्रवतार, सब नमे नरनार, निज धाम गया २
व माश बंदेधार, पाली सुध संजमन्नार; एक
ाशके संथार. स्वार्थसीध लया २ तप केरा फल-
ांण मिले महा सुषांण, चोष्ट मणके परमांण;
ोती लटक रचा २ (मीलत) मोक्षजाशी माहा-
विदेहक्षेत्रमे, फिर गरन्नावास नही श्रावेगा.
। न० ३ ॥ प्रस्नचंद्र राजा श्रतीताजी, श्री वीर-
ेलियो संजमन्नारजी; वनपंरूके माथ ध्यान ठा-
ीया एक नरक हे तीणवारजी, नगर तुमारो
ारी लुंटे हे सुणी मुनी मन मेतकरारजी. हय
ाय रथ पायक सज करो, वेरी लेवुं मारजी (सेर)
ेणक पुछे विरजंपे, श्रती भये मुनी ध्यानजी,
ीवरूांतो श्रायुष पतजावे, सप्तमी नरक मायजी.

इतरेतो मुनी सीर मुगट जोतां, ध्यायोतो सुकल ध्यांनजी; नाइतो नीरमल नावना, पायोतो केवलझांनजी. (लावणी) नृप श्रुनी दूंदूवी चोमतकार चीतपायो, प्रश्नचंद पांमे मोक्ष विरवत लायो; ए दांन शिल तप नाव च्यारमे गायो, पुज अमरसिंघजी माराजके सिंघाडे मोयो. (दोड) छटे पाटपे विराजे, पुज पुनवचंदजी गाजे; जग चूमामणी ठाजे, गूणके थ्राही २ तस शिष्य नेमीचंद, ए सागरुलिया वंद; चीतपायो हे आणंद, कुंमी कछु नांही. २ संवंत उगणीसे फेर, वर्स बपनेकी लेर; चतुरमासा कीया सेर, जिरूरमांही २ माश कार्तिक हे सुद, झांनपंचमी हे पूद; एतो वार नलो वूध, जोमी चितचाही. २ (मोलत) ये च्यारे अराधे तीरे चोत जीव निज मनकुं वसलावेगा. ॥ न० ४ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ६ ॥ उपदेशी ॥

इणतो कायामे प्रभुजी सात समुद्र छे, कांइ जीण रोतो नीर मीठो षारो १ सुंदर काया छोरू चल्यो वीणजारो, विणजारो धुतारो मोहन-गारो, मारी सुद. ॥ टे० ॥ इणतो कायामे प्रभुजी पांच रतन छे, कांइ परषे छे परषणहारो ॥सु०॥ इणतो कायामे प्रभुजी पांच पणीहारी, नीर भरे छे न्यारोर ॥सु०३॥ इणतो कायामे प्रभुजी नवसे नाकी, तीणरो सभाव न्यारोर ॥ सु० ४ ॥ पुट गयो तेल ने बूज गइ वतीयां कांइ मिंदरमे भयो अंधारो ॥सु० ५॥ ढस गयो मंदरष सगया थंभा, कांइ माटीमे मिल गयो गारो ॥ सु० ६ ॥ कहेत कबीर सुणो भाइ साधों, कांइ जुठो छे सर्व सं-सारो ॥ सु० ७ ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ७ ॥ उपदेसी ॥

देव देवमे प्रत्यक्ष देवरोटी, तांनमांनगीत

ज्ञांन एह वीना सर्व वात हे षोटी; ॥ टे० २ ॥ जीनराजम्मुनी राज, वरू ध्यांन धारो; घडी थाय सोलमो, गोचरी संज्ञारी, ॥ दे० १ ॥ चक्रवृती वासुदेव, पून्यना छे वलीया; घरूी थाय सोलमी तो अंग जावे गलीया, दे० २ छत्रपती पातसाहा, छत्र चमर ढोले; घरूी थाय सोलमी तो रोटीयां संज्ञाले. दे२० सेठ वरू साहूकार, लिषेलापहुरूो, घरूी थाय सोलमी तो आंष जावे उंरूी, दे० ४ स सनेही नगिनदास अंग ज्ञसमी लगावे; घरूी थाय सोलमी तो अलषही जगावे. दे० ५ ध्यान धरे नाशीका रूवक माला मोटी, घरूी थाय सोलमी तो, याद करे रोटी. दे० ६ संग लेइ संगवीने प्रयाण पंथ चलावे, घरूी थाय सोलमी, मुकांम संज्ञावे. दे० ७ पेट पुर रोटला सर्व कांम सुंजे, पेट पुर अनघास गाय ज्ञेंस ठुजे. दे० ८ धन २ वीतराग, रुषवदेवसांमी; एक वर्स आहार

त्यागी, वंदू सीरनांमी. दे० ए विर २ महावीर, जगत वीर दीपे; षटमाश आहार त्यागी, कर्म सहु जीपे. ॥ दे १० ॥ दीपकवो संगतिर्थ, अढी दिप राजे, छट अठम पषमास, धीरमुनी गाजे. ॥दे० ११ ॥ इतो संपुर्ण ॥

॥ नं० ८ ॥ आलोवणा ॥

श्री अरिहंत सिध सात आगलेरे, पाप आलोवुं जोयरे; इण भव परभव जे मे करयारे, ते मीछामी दूकडं सोयरे. १ पाप आलोवुं प्रभु आगलेरे ॥ टे० २ उ १ ॥ पूरव भव मे पापणीरे सोकांने दीधो सरापरे, पुत्र तणो सुष नवो लोयोरे, अथवा जग्या पोटा जापरे. ॥ तें० २ ॥ केमे थापण राषी पारकीरे, केमे दिधो कुडो आलरे, केमे पांणीरे कारणेरे, सरोवर फोडी पालरे. ॥तें०३॥ केमे रांमतरे कारणेरे तरवर तोडी डालरे गर्व ग-

जीवछकायना आरंभसमारंज,तिव्र परीणमिकीनो क्रोध कशाय करी जुटो बोल्यो, अदतादांन वली लीधा ॥ स० ३ ॥ परइस्त्री देखी प्रेम वधार्यो, धन लोभे मन धायो, दिसोदीस इधको वधारी षाबे पेर बेथायो, ॥ सं० ४ ॥ कर्मादांन अनरथा दंरुने, समायक सुध्र आव्यो; दशाविगासी आठम पषी, पोसा भलो ते जाव्यो ॥ सं० ५ ॥ जीमण वेला जीमवा बेठो, साध चिंतवणा वीसरीयो, सलेहणा तप वीरजि भाष्या, एकसो चोवीस दोषण भरीयो; ॥ सं ६ ॥ जांण अजांण जे पडीकमसे, कर्म हलवो थासे वरणनाग नटवा ना मीत्रने दृष्टांते, पेला मुक्ति जासे, ॥ सं ७ ॥ समायक पोसो पडीकमणो, अशातना सहीत जे करसे ऊना नगरमे मुंनी तेजसिंघ जाषे; दया धर्मना साषे, ॥ सं. ८ ॥ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० १० ॥ जुवाका स्तन ॥

उजल कुलने कलंक लगावे, जीणसुया ते मन मोडदेरे; प्यारे बूरा विसन तु ठोरूदेरे, ठोडदे छोरुदे छोरुदेरे. ॥ प्या० १ ॥ जुव विसन ज्यांन गमावे, मत पोवो हलाहल ढोलदेरे, ॥ प्या० २ ॥ हाथ घसे अरु आथनसेला, लगी प्रीतया तोरूदरे. ॥ प्या० ३ ॥ नांम इसीका जुवा जगतमे, नरकादीकमे ठांडदेरे. ॥ प्या० ४ ॥ चोतमल कहे पाली चोमासे, नाथ चरण चीत जोडदेरे ॥ प्या० ५ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ११ ॥ प्रभाति ॥

सोलमा जीनजी शंतनाथ साताकारोजी थांरा दर्शनरी बलीहारी थांरी महीमा जगतमाहे चारीजी, ॥ सो० १ ॥ हथणापुर वासुसेनराया रांणी अचलादे राजायाजी सो स्वार्थसीद्धथी

चवी आया माता चवदे सुपना पायाजि ॥सो०२॥ आगे हुंतो हथणापुर मायो मृगीरो रोग मिटायोजी, सो थयो शंती २ सदा सुपदायो जेजेकार वरतायोजी ॥सो०३॥ नाद्रवा वद सातम आया जेष्टा वद तेरस राजायाजी सो माता पीता नांम ज दीघो शंतीकुंवर पर सीधोजी ॥ सो० ४ ॥ कुवरपणे रह्या सारो वर्स पचीस हजारोजी सो पछे हुवा मंडलीक रायो सहेंश्र पचीस वर्स थायोजी ॥ सो० ५ ॥ पुर्व पुन्य किधा नारी चक्रवृतरी पदवी धारीजी सो लाष चोरासी गजरथ घोडो पायदल छिनु किरोडोजी ॥सो०६॥एकलाष ने वांणु हजारो ज्यारे राण्या रोप रीवारोजी सो दिन २ हरष सजोडो, वेटा हुवा डोडकी रोमोजी ॥सो०७॥ पट पंडके राइसो राजा सहेश्र वतीसोजी सो छोटा राजा वतीस हजारो सगला नमावे सीसोजी ॥ सो० ८ ॥ सोले सहेश्र रतनारी पांनो

विस सहेंश्र सोना रुपारी जानोजी सो ज्यारे घरमे छे नवनिधांनो धनरो किम आवे मांनोजी ॥सो०९॥ चवदे रतन चंडारो देव सेवे पचीस हजारोजी सो एक दीवसनोर सोडो घांन सीजे मण चारकी रोडोजी ॥सो० १०॥ पेले पोरमे त्रावे वीजे पोरमे पावेजी सो तीजा पोरमे पकावे चोथा पोरमे पावेजी ॥ सो० ११ ॥ दस लाष मण लुणो इण सुंन लागे उणोजी सो चालीसमण हींगरो वगारो निनाणु मण वेसवारोजी ॥ सो० १२ ॥ असी लाष मण जाणो ज्यारे वृतरो परमाणोजी सो ओर मशालो सारो गिणतां नही आवे पारोजी ॥सो० १३॥ चक्रवृतरी पदवी सारो भोगवी वर्स पचीस हजारोजी सो इसडी रुद्ध प्रभु पाइ छीन मांहे छीटकाइजी ॥ सो० १४ ॥ वरसीदांन देइ सारो जुरतो मेल्यो परीवारोजी सो जांण्यो इथर संसारो सहेंश्र जीणांसुं हाथ गया त्यारोजी सो०

१५॥ जेष्टा वद चवद लिधो दीक्ष्या किनो छका-
यां रीरुक्षाजी सो एक मासमे केवल पाया सारो
तुरत कियो उपगाराजी ॥ सो० १६ ॥ जीनमार्ग
उजवाल्यो मीथ्यामतने गाल्योजी सो वासट
सहेस अणगारो आरज्यां निवासी हजारोजी
॥ सा०१७ ॥ कवली तीनसेन च्यार हजारो ज्यांने
मारो नमसकारोजी सो श्रावग दोय लाप ने नव
हजारो श्रावगसें ठाव्रत धाराजी ॥सो० १७॥ दश
लाप ने नयांसी हजारो श्रावीकांनो परीवारोजी
सो च्यारुंही तिर्थ तारया भव जीवांरा कार्ज सा-
रयाजी ॥ सो० १९ ॥ दिष्या पाली वर्स पचीस
हजारो जोर कीयो उपगारोजी सो नवसे साधांसुं
संथारो कीधो जेष्टा वद तेरस सिंधोजी ॥सो०२०॥
हुंतो जीनमारग साचो जाणु ओरहि रदे नहीं
आंणुजी सो पाषन्ड देव आपरे आगे पीए मारे
दाय न लागेजी ॥सो०२२॥ मुज उपर कीर्पा कीजो

अजर अमर सुप दीजोजी सो श्री चंद्रनांणज
सांमी ज्यारीमे आज्ञा पांमीजी ॥ सो० २२
रुप सुषलाल करे अरदासो मांने दीजो मुक्तीन
वासोजी सो प्रभाते उठ गुंण गावे ज्यांरे संलह
संत वरतावेजी ॥ सो० २३ ॥ इती सपूर्ण ॥

॥ नं० १२ ॥ बुंसो वाजेरे माहाराज सिरदार
सिंगको ए देशी ॥

मत किजोरे संग गुगटवालीको॥टे०२॥एव
रंगीली आली पांणीरे चाली भाली हजारीसिंग
उरसाली ॥ म० १ ॥ तांम हजारी सिंघता सव
कारी यारी करेगे मोसे मतवारी ॥म०२॥ शिलसु
रंगी नारी मोहनगारी ठमक २ चाली दे गाली
॥ म० ३ ॥ तिजे दीन निज घर बुलाया नेनांकी
कर सनकारी ॥ म० ४ कंत आयो जद डजन
लागो मुज वचादे मे गज थारी ॥ म० ५ ॥ फटे

तुटे सब वसन पेराये सारी पेन वनगी वीसारी ॥ म० ६ ॥ सारी रात वीतावी उसमे अजव मार उस दीन मारी ॥ म० ७ ॥ छोरू दिया गुप चुप चल आयो, वात एह फीर अजमाली ॥म०८॥ चूंनदाल क्या पाली सगरी हसन लगी घणदे ताली ॥ म० ९ ॥ परनारीको पाप कह्यो जीनः जीनसे संग देवो टाली ॥ म० १० ॥ चोथमल नथमुनीको चेलो, जोडी किसनगढ मजारी ॥ म० ११ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० १३ ॥ उपदेशी ॥

मुषका क्या जोवे दर्प्पनमे तेरे दया धर्म नही मनमे. ॥टे०॥ जवलग फूल रहे वागीमे, वास रहेगी उनमे; हंसा छोरू चल्या जवदेही, गंध उठेगी तेरे तनमे. ॥मु०१॥ कवरी २ माया जोडी सुरत रही नीज धनमे, दस दरवाजा घेर

लिया जव रहे गइ मनरी मनमे. ॥ मु० २ ॥ नंदीयां गेरी नाव पुरांणी, उतरा चावे छीनमे सतगरु होयतो पार उतारे नुगरा डवोवे उनमे. ॥ मु० ३ ॥ दादर मोर पपैया वोले कोयल वोले उनमे घरवारी तो घरमे राजी जोगीतो राजी रनमे. ॥मु०४॥ पटीयां पाने पाग सवांरे जुलफी जुलावे तनने कहेत कवीर सुणो भाइ साढु, एक एक दीन वासो वनमे. ॥ मु०५ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० १४ ॥ कंत तमाष्रु परहरो ए देशी ॥

श्री जीनवांणी मन धरी सतगरु दे उपदेश मोरालाल, वावीस अजक्ष माहे कयो अमल अजक्ष विशेस. ॥ मो०१ ॥ अमल मषावो साजना अमल विगोवे तनमां भंग वगास्या घेरणी आवे आषो दीन ॥ मो० अ० २ ॥ अमली अमलने सारसो आवे आनंद थाय मो उतरतां आरत घणी

धीरज जीवन धराय॥मो०अ०३॥आलस उजागरो अती घणो वेठो टचक्यां पाय मो अकल कांइ न उपजे धर्मकथा न सुणाय ॥मो०अ० ४॥ काला अहीथी उपनो नांमे जे अफीण मो संग करे कुंण एहनो पिरूत लोक प्रवीण ॥ मो०अ० ५ ॥ पेला मुष करूवो हूवो वले कंठ घेराय मो उदर वधं नित आफरो इणथी अवगुण थाय ॥मो०अ०६॥ नाक वंधावे वोलता आधो वचन वोलाय मो असीय सुकावे जीवनो, इणने पाय वलाय ॥मो० अ० ७ ॥ डाढीने मुंछां दीसी उगे नही अंकुर मो काया काली जसम हुवे, गावरी गाले नुर. ॥ मो० अ० ८ ॥ पलक अवेलो जो लीये तो आत्म अकुलाय मो नाक चुये नेणां झरे, कांम करी न सकाय ॥ मो० अ० ए अधविच मारगमां पडे, जीवत मृत्यु समांन मो हात पगांरी न सांगले अमली हूवे वेस्चांन ॥मो० अ० १०॥ आगरारो

आछो कयो मालवीमांय भेल मो आपदसुं सषरो नही मिसरी सुं मन मेल ॥मो० अ० ११ ॥ नवटांक जे नर जीरवे तेसु अही वीष न जणाय मो अमल घणो षाधां थकां कंदरप बल मोट जाय ॥ मो० अ० १२ ॥ अमलीने उनो रुचे ठामो न आवे दाय मो षोवी रोटी षांडथी ऊपर दूध सुहाय ॥ मो० अ० १३ ॥ कुलवंती जे कामनी जांण जुगतीसु जांण मो कातीवीषी रण करे अमलीने दीये आंण ॥मो०अ०१४॥ प्रीतम आसा पूरती नं करे रीस लीगार मो कथन न लोपे कंथनो ते वीरली संसार ॥मो०अ०१५॥ डुरजागणी नारी जीका वोले करकस वेण मो रेरे अधम अफोणीया, आलशवंत अजांण ॥मो० अ० १६ ॥ परणी लायो पारकी स्यूं किधो थे धेट मो पोतानुं पीण पेट ए निटानिट जराय ॥ मो० अ० १७ ॥ कांन कंठ लुकण सहु वेची षादो तेह मो निर-

लज तुज घरवासमां केहवो सुप पामेस ॥ मे
अ० १७ अमल सम अमुगो नही मांनो ए सु
सीप मो बोले सुंदर देहकी अंते मंगावे जिष
अ०१ए ॥ दालीद्रीने दोहीलो सुरवीरने सेल
श्रीमतने पीण नही चलो जोता ए जंजाल म
अ० २० ॥ सासु वहु वढतां छतां रीसे अम
जषंत मो वालक षावे अजांणतो जे घर अम
होवंत ॥ मो अ० २१ ॥ प्रांणवंध जीणसुं
तेतो तजीये दूर मो कर्मादांन दसमो कयो विष
पार पंडुर मो० अ० २२ चतुर वीचारी चीि
किजे अमल परीहार मो क्षम्यावीजे पिंरुत त
कहे मांणक मनोहार ॥मो०अ० २३॥इती संपु

॥ नं० १५ ॥ ऊपदेश ॥

नगर वनीता भली वीराजे ऊगमीग २ सोहे
कंचन मांहे कोट वीराजे सुर नरना मनमोहेजी ।

इण कोरू पुर्व लग पांमी साता मोरादेवी माताजी ॥ टे० २ ॥ आदेसर आय उपनां मरुदेवीने पेटोजी जांमण जगमें हुइ अतीचावी जीण्यो रीषव जीनेसर वेटोजी ॥ इ० २ ॥ सेज्या उपर वेठा सोहे त्रीवरा तकीया गादीजी भर्त वाहुवल सरीषा पोता जगमे दिपे दादीजी ॥ इ० ३ ॥ अठाणुं वले नांना पोता लुल २ पाए लागीजी रूप अनोपम अवल विराजे मुलकंता मुष आगेजी ॥ इ० ४ ॥ दांमी सुंदरी दोनुं पोती रही अकन कुमारीजी मोटी सतीयां मुक्त पहोती जगमे महीमा भारीजी ॥ इ० ५ ॥ पेष्ट हजार पिढ्या निजरा दीठी नांम तीणां राष रीयाजी सोग संताप कदे नही कीनो पुरा पुनज करीयाजी ॥इ०६॥ अगमे कदे न हुइ असाता ठसको कदेय न किधोजी जीव्या ज्यां लग मरुदेव्याजी उषद एक न लिधोजी ॥इ०७॥ आदनाथजी अठे पदारथा

दीनी भर्त वधाइजी हर्ष थइने हस्ती वेठा पुत्र वंदणने आइजी ॥ इ० ८ ॥ इंद्र इद्रांणी देवी देवता नर नारयांना वृंदोजी समोसर्णमांही साहव सोवे जीम तारां वीच चंदोजी ॥ इ० ९ ॥ जग तारणमे जोती जांमण ध्यायो उजल ध्यांनो जी मोह कर्म जीत्या मरुदेवी पांम्या केवलग्यांनो जी ॥ इ० १० ॥ इण चोवीसीमे सगला पेली शिव रमणीमे पेठाजी मरुदेव्याजी मुक्त पहोता हाथी होदे वेठाजी ॥ इ० ११ ॥ श्री आदनाथने उदरे धरीया मुक्ती पहुंती माताजी शष रायचंद कहे जे गुण गावे ते नर पामे साताजी ॥इ०१२॥ संवत अठारे वर्ससें तीसे मेडते नगर चउमासो जी काती वद सातम गुण गाया मुंणतां लीलव्वीलासोजी ॥ इ० १३ ॥ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० १६ ॥ उपदेशि ॥

ए जगजाल सुपनेकि माया इस पर क्या

गर्वानारे घट गइ आव रहेन नही पावे कूंण राजा कूंण रांणारे ॥ ए०१ ॥ करमेका चराच मुष निर्पे देष २ हर्षनारे सुंदर नार षनी मुष आगल सेवट त्रास समर्शानारे ॥ए० २॥ गादी वेस गर्भ अती तोले बोले मगज भरांनारे अंतरज्ञान इतो नही सोचे आपर निकट पयानारे ॥ए०३॥ कर२ कपट निपट धन मेल्यो संच२ एक दांनारे ममत लक्यो मनमे नही सोचे आषीर माल त्रिरांनारे ॥ए०४॥ छांणा चुग कर लियो विश्रांमो सुपने पुत मीलानारे उड गइ निंद भूली जब अंषीयां अंत बांनका छांनारे ॥ ए० ५ ॥ सुपने राज लीयो त्रीहु जगको सिर पर छत्र धरांनारे जाग्यां पत्र छत्रकी जायगा मांग २ अन पांनारे ॥ ए० ६ ॥ थोडेजी तवमे कर्म वहु बांधे कर २ नेक मठांनारे पोढण अवसर परभव पहुंतो ठाली पड्या ठीकांनारे ॥ ए० ७ ॥ रतनचंद ए उदेश

इथरता-निज-गुण मन ठहेरांनारे अलप-जगे
सतगरुके वचने पुदगल भर्म नीटानारे ॥ए०८॥
॥ इती संपुर्ण-॥

॥ नं० १७ ॥ उपदेशी ॥

सुणो २ अंगरेज बहादूर गउ आर्जि करती मुजमे
क्या तकसीर आज मे विनाहक मरती ॥सु०१॥
मेरा दूध सब दुंनीयां पीवत केहवत हे माता ईसी
वातका विचार देषो क्यूं मुजकुं मरवाता ॥सु०२॥
वे दरदी तेरी अकल कीदर गइ जुल्म हुवा जाता
उवे दरदी कसाइ होकर मुजे मारपाता ॥सु०३॥
नर दुनीयांमे ज्ञांन पायकर चोरी छीनवाता मुजे
मारकर पाप बांधता क्या गरु शिषलाता ॥सुं०४॥
मेरा दिलकी मेइज जांणुं करुं किसे अरजी-ज्ञानी
समजे अपने ज्ञांनमे ओर सब-गरजी ॥ सुं०५॥
सब साहीब तुम समज देषो गउ- बहोत रूरती

मे लाचारी गरीब होय कर सबकुं सुष करती ॥ सुं० ६ ॥ दुध पिलाती पुत्र जीणती दुंनीयां पालणकुं जमीदारकुं पैसा दीलाती हाशल राजाकुं ॥ सुं० ७ ॥ गाडीके मेरा पुत्र जुताजी मुलक देषणकुं सोजा सहेरमे इधकी होती गोबर लीपणेकु ॥ सुं० ८ ॥ दुध दही घृत घरमे रषती छाछ वांटणेकूं इतना सुष मेरे संग होता लष्ट पूष्टणेकुं ॥ सु० ९ ॥ वछ वारसने पुजे सहेलीयां मंगल करणेकुं पात्र पेरणने होवे मोजडी कंटक चूरणकूं ॥ सुं० १० ॥ ठोल नगारा चंग ढोलकी दुनीया मंडवाती श्री ठाकुरका मंदीर मांहे रंगराग होती ॥ सु० ११ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० १८ ॥ पडीकमणारी सज्झाय ॥

कर पडिकमणो भावसुं दोय घडी सुभ ध्यांन लालरे पाप अठारे छोडने जीनवर अज्ञां

मांन लालरे ॥ क० १ ॥ मुल सुत्र नवकार गुणो देवगरु धर्म सार ला. ज्ञांन दर्शन चारीत्र सही पालो नीरतीचार ला० ॥ क० २ ॥ समता आवसक पे लक्ष्मो चोवी सतो तंत सार ला. दोय आवसग पुरा हुवा वंदणा दोदो वार ला० ॥क०३॥ चोथारी अज्ञा मांगने वृतरा कहे अतीचार ला. अक्षरमांही उप्योग दे निंद्रा वात निवार ला. ॥क०४॥ लागो दोषज देषने गरु पासे आलोय ला प्रायचित लेइ सुध हुवो साल मरापो कोय ला. ॥ क० ५ ॥ पांचु इ पद षमायने पांचु अंग न माय ला. वंदना अरीहंत सिद्धने साधांरे लग पाय ला. ॥ क० ६ ॥ लष चोरासी जीवने समचे सर्व षमाय ला. वेर न राषे केहसुं एसा न्नाव उजल लाय ला. ॥ क० ७ ॥ आवसग कावसग पांचमो कीजे अंग संकोच ला. मन वच काया वस करी धर्म ध्यांन आलोच ला. ॥क०८॥ छटो

आवसग इम कहे आगमी केरा जांण ला. दसु वोल चितारने करे सगत सारु पचषांण ला. ॥क० ९ ॥ वेसे झावो गोझो उंचो करी कहे नमोथुणं दोयश ला. एक सीऊां ने वीजो गरु तणो इण विध आवसग होय ला. ॥ क० १० ॥ करतां आवसग इण विध आवे काल अजांण ला. जाय मोंक्ष उरहो रहेतो निश्चे देव विमांन ला. ॥ क० ११॥ श्रेणक राजा पुछीयो विर समीपे जाय ला. मोल समाइक एकनो श्रीमुष दो फूरमाय ला.॥क०१२॥ विर जोनेसर इम कहे सुंण तु श्रेणक राय ला. सोनेरी वावन डुंगरी दलालिमे जाय ला. ॥ क० १३ ॥ मोल नही इण मालरो धर्म अमोलक जांण ला. आराधे सुधे मने तो पहुंचे निर्वाण ला. ॥ क० १४ श्रेणक मन इचरज थयो सुण जोनधर्म अमोल ला. श्रीमुषसुं फरमावीयो ज्ञांन पटारो षोल ला. ॥ क० १५ ॥ वीषेकषाय पाडो पातली

नवतत्व हिरदे धार ला. कहे मयाचंद घनतीके श्रावग इण संसार ला. ॥ क० १६ ॥इति संपुर्ण॥

॥ न० १९ ॥ बोरकों स्तवन ॥

मती खावोरे बोर जनम विगडे ॥म०टे०२॥ संस आहारका दोष लगत हे, तस जीव भषे सीर धुल पडे ॥ म० १ ॥ बोर कूपत कया वेदक से रोग उठे ने देही बीगडे ॥ म० २ ॥ परभवमे वदलो नही छुटे, काटे जीभ करे टुकडे ॥ म०३॥ चषू इंद्रीवश पतंग पडत हे अगन शिषासु जाय अडे ॥ म० ४ ॥ रस इंद्रीवस राज गमायो कुपत अंब भषीने मरे ॥म०५॥ उत्राध्येन अधेन सातमे देषो मांश वधाय मरे वकरे ॥ म० ६ ॥ कंदमुल तुंतो भषे मती मुर्ष नर्क नीगोदांमे जाय पडे ॥ म० ७ ॥ शतगरू शिष मांने नही मुर्ष मुंमुं कर उलटो झगडे ॥ म० ८ ॥ मुगमां ठमती षा-

वेरे भीजोया प्रत्यक्ष देषो प्रगटे अंकुरे ॥ म० ए ॥ अवके जोग वण्यो अतभारी शिवरमणीके वन जावो वनडे ॥ म० १० ॥ वार २ नरजव नही पावे काल जमे पकडे २ ॥ म० ११ ॥ कर्णमुनी उपदेश सुंणावे जनम मरणके मेटो दुषडे ॥ म० १२ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ॥ २० ॥ राग काफी ॥

निंद्या मोरी कोइ करोरे दोष वीना सोच न कोय ॥ नि० १ ॥ निर्मल संजम सुध प्रणासे कासुं कहसी लोय ॥ निं० २ ॥ आप तणा गुंण करकर मेला निरमल करदे मोय ॥ नि० ३ ॥ विन साबु रोजगार दियां वीनां कर्म मेल दे धोय ॥ निं० ४ ॥ निंदक सम उपगार करे कूंण अंतर करके जोय ॥ निं० ५ ॥ रतन जडत कर थीर मन रापो ज्युं सोने काट न होय निध्या मोरी

कांइ करोरे ॥ ६ ॥ इति संपुर्ण ॥

॥ नं० २१ ॥ उपदेशी ॥

एकलडी मत मेलो पियाजी मांने ए टे०२ काया सुंदरीने जीव लाडलो दोय मील मांड्यो मेलो पिलंग उपरथी धरती पोढायो पड्यो कट्ठ बेहेलो ॥ पि० १ ॥ चालोनी आपना रंग महेलमे चोपडवा साषेलो अबकी बाजी दाव पीयाजी प्रभु भज लाहो लेलो ॥ पी० २ ॥ सुमत सषीकी सीष मांनलो कूमताने आगी ठेलो वार २ मे करुं वीनती हेलो झुरो षेळेलो ॥ पी० ३ ॥ कुटुंब कवीलो झुरतो रहे गयो हंस उठ चल्यो अकेलो चोकचंद कहे सुणो नरनारी अबके मीलवो दोहेलो ॥ पी० ४ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० २२ ॥ उपदेशी ॥

तज गये प्रांण कायाकु मलाणी मंदीरमां

क मुंदर छोडी गाय ने भेस घर घोडी हरीहर
रकी नार सुलषणां छोडी दोय पुत्र नकी जोडी
त० १ ॥ च्यार जणी मील जांन वणांइ वणी
ाठकी होरीह. जाय नंदीमे फूंक दीवी फाग-
ुके होरी ॥ त० २ ॥ घरमे तेरी माता रोवे धूंणे
ावे गोरी तुलछीदाश कहे कर जोडी जीण जोडी
ीण छीनमांहे तोडी ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ॥ २३ ॥ वनाकि देशि ॥

तेरापंथी यांरो मारग फीको बावी सांको लागे निकोजी ॥ ते टे०२॥ उणां द्या तणी जडी काटी या कीण वीध रहेसी नाकीजी ॥ ते० १॥ यो धर्म दयामे होवे एह नाक जनम विगोवेजी ॥ ते० २॥ मुज टाल दुजाने नही देणो इसोकु म त्यां रेकेणोजी ॥ ते० ३ ॥अनुकंपा प्रभुजी भाषी सूत्र भगवत्ति साषीजी ॥ ते० ४ ॥ पुन्य नव प्र-

कारे भाष्यो नही सावज निरवद दाष्योजी ॥ते० ५॥ पापि कहे सादु टाली देवेसो वहुल संसारीजी ॥ ते० ६ ॥ वे शास्त्रभेद नही जाणे कुंमती नीज रूढ तांणेजी ॥ ते० ७ ॥ अनुकंपा गोशालानी आंणी करी शितल लेस्या अगवांणीजी ॥ते० ८॥ दुष्टी कहे प्रभुजी चुका ए निदव वक वाडुकाजी ॥ ते० ९ ॥ ए गरुनां अवगुण वोले येही ये अज्ञां नही डोलोजी ॥ ते० १० ॥ वे धर्म मर्म नही जांणे वे रुढ आपणी तांणेजी ॥ ते० ११ ॥ पुछी यां जवाव नही आवे जद वांतासु वीलमावेजी ॥ ते० १२ ॥ करो दुष्ट धर्मको टालो भवी सुद्ध धर्म संभालोजी ॥ ते० १३ ॥ हुवे दांन दयाथी तीरणो करो जीनवचनांरो निरणोजी ॥ते० १४॥ नथमल रोयटमे गावे पुनवंत निरणो पावेजी ॥ते० १५ ॥ उगणीसे वहोतेर साली दिक्षा परजावां पालीजी ॥ ते० १६ ॥ इत्ती संपुर्ण ॥

॥ नं० २४ ॥ रसियारा गीतकी देशी ॥

दश प्रकारे बंधेसुर आउषो करतो पिछयाता प सुग्यांनी उजल रापेहो मनरी भावना ज्युं थांरा कटसी पाप ॥ सु. द. १ ॥ साध पदारया हो मांरा सेरमे हुं फस्यो प्रमादरे माय सु. कारज लागो हो काचा जगतसुं मे नही कीयो दरशन आय ॥ सु. द. २ ॥ दुजे वोले हो सतगुरुनी देशना हुं सुण नही सकीयो आय सु. षेपगमाइ हो जांणुं कोइ मोटकी तोपीण देवता थाय ॥ सु. द. ३ ॥ मुनी पदारया हो मांरे आंगणे घरमे नही सुझतो आहार सु. अंतर सोच करे मांहीलो तोपीण नफो अपार ॥ सु. द. ४ ॥ समायक पडीकमणो हुवो नही सोच करे मनमांय सु. सोच करंतां हो टांको झल गयो तोपीण देवता थाय ॥सु. द. ५॥ वोले सुंणीजे हो भवीयण पाचमो गुरु मिल्या ग्यांनरी

भंडार सु. उदम न किनो हो ज्ञांन भणवा तणा दियो जमारो हार ॥ सु. द. ६ ॥ साधर्मिनी सार संभाल कीदी नही चुक पडयो भरपुर सु. साचो सगपण मांरे सांमी तणो कर्म कीया चकचुर ॥सु. द. ७ ॥ मुनीवर पगल्या हो कीना मारे आंगणे घरमे सुऊजो अनपांण सु. मुंनीवरजीरे आहार षपे नही पिस्तां थांसु देव विमांण ॥ सु. द. ८ ॥ धमजागणां पाचली रयण किधी नही निंद्रा पापणी आय सु. धर्मने ध्यानमांरे सजीयो नही पिस्तायां सुदेव विमाण ॥ सु. द. ९ ॥ साद पदारथा हो मारे सहेरमे मोटा गुंणारी माल सु.उषद्भेषद आहारपांणी तणी मे पुछी नही सार संभाल ॥सु. द १० ॥ बोल सुणिजे हो दशमो हितकरी मुनिवर किदो विहार सु. पहोचा वण रिषेप रहि नहि, मारे दिल वसिया अणगार. ॥ सु. द. ११ ॥ दस

बोलांरोहो लावोलीजीयेः ज्यारामोटाजाग सु रात-
दीवस मारे मन मे वसरया देवगरु धर्मसुं राग सु.द.
१२ समत अठारे हो वर्स बावने फागुण मांश म-
झार सु चंडावल मेहो जोरी जुगतसुं मुनीआस-
करण अणगार सु. द. १३ ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ॥ २५ ॥ श्रावक धर्मकरो सुवदाईए ॥

अनंतकायना दोष अनंता जांणीनवीयण प्रांणीरे गुरुउपदेशे ते परीहरजो एहवी जीनवर-वांणीरे अ १ प्रथवी पांणी अगनी ने वायु वनस्पयती प्रत्येकारे ए पांचे थावर गरुमुषथी सांभलजो सु वीवेकारे अ २ बेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्री पंचेद्री प्रमुषारे एकेकि काय जीनराय भाष्याजीव असंख्यारे अ ३ ए छ कायतणा जे जीवाः ते सहुएकण पासेरे कंदमुल सु इने अग्रे जीव अनंत प्रकासेरे अ ४ वहू हिंस्यानो कारण जाणो आणो मनसु विचारोरे कंदमुल भक्षण परहरोयो करजो सफल

जन्मारोरे अ ५ अनंतकायना बहू भेद भाख्या पनवणाउपंगेरे श्री गोतमगणधरने आगे विर जीणंद मन रंगेरे अ ६ नर्कतणा छे चार दूवारा रात्रीभोजन पहेलुरे परस्त्री बीजुं अथाणुं तीजुं अनंतकाय तीमहेलुंरे अ ७ ए च्यारे जेनर परीहरस्ये दया धर्म आदरस्येरे किरत कमलात्त सविस्तरसे शिवमंदीर संचरस्येरे अ ८ चवदे नियम संभारी संषेपो परीकमणो दूवारोरे गरु उपदेश सुणोमन रंगे ए श्रावक आचारीरे अ ए पांचे परवे पोसो कीजे भावे गरुने पुजेरे संपतसारु दांनदीजे इणभव लाहो लीजेरे अ १० पर उपगार करी निजसगते कूमतक दाग्रहे मुंकोरे नवो उपदेशसुंणीने मुल धर्म मत चूकोरे ॥ अ ११ ॥ तपगछ नायक शिवसुपदायक श्री विजेएत्तसुरेंदारे तास पसाये दीनरथाये भवसागर आंणंदारे अ१२॥ इतीसंपूर्ण॥

करसी जोररे ॥ ई ७॥ कहे रावण सुणहे मंन्दोवर तुं पराईजाई इंद्रजीतसा पुत्र हमारे कुंनकरणसा न्नाईरे ॥ई ८॥ तुं सुंण माहाराणी राम आयोतो मारो सुं लीयो ॥ टेर ॥ हनुमानसा पायकउनके लक्षमण सरीसा भाई जलती अगनमे कूदपरेगा कोट गीणे नही खाईरे ॥ ९ ॥ तुंम सुण होप्रीतम राम आयोहे दल लेकरी ॥ टेर॥ सुग्रीव न्नाव मं-न्दलमिलीया मीलीया नलनेनिल लंकालेवण ता-हरी सरे कांई न करसी ढीलरे ॥ तुं १० ॥ जगन्नो उनसुं जीतनेसरे सबकुं करसुं जेर कुटपिटने वारे काढु मारे चडणरीदेरजी ॥ तुं११॥ जनमरको चा-कर मारो इणकी कांई वन्नाई कुन्नमांही ऊंमारी लेसुं रामलक्षमण दोय भाइरे ॥ तुं १२ ॥ दशमाथा उड जावसी सरे घर सुं जासी राज लंका जासी सोवनीसरे कांइ न सुझरे काजरे ॥ तुं १३ ॥ हम-कहीने करी तयारी मिलीया सुन्नट अपार मंडो-

वरी निज गई मेलमे हो सीहोवणहाररे ॥ ई१४॥
सातवार समजावीयोसरे तोई न मांने वात जीव
इणगमावीयोसरे याराषसरी जातरे ॥ ई १५॥
रामलाछमण जीतीयासरे शिता लेने आया राम
डुवाइ फिरी शहेरमे राजवभीछ्रण पायारे ॥ई१६॥
॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं २७ ॥ जलानो देशि ॥

एक दीन इंद्र प्रसंसीयोजो भरीरे सभारे
मांय द्रढताइ कांमदेवनी कोइ देव न सकेरुी गाय
१ श्रावग श्री विरनो चंपानो वासीरे ःटेरः शरदीयो
नही एक देवताजी रुपपिचास वणाय कांमदेव
श्रावग कने आयो पोष दसालारे माय श्रा २ हुं-
णोरे कांमदेवजी तोने कलपे नही छे कोय थारो
धर्म तुं छोडे नही पीण हुं छोडाव सुंतोय श्रा. ३
रुपपिचाशनो देषनेजी डरप्यो नहीरे लिगार जा-
णयो मीथ्यातो देवता बेठो शुद्ध मन ध्यानजधार

श्रा ४ एक वार मुपसुं कहोजी देव,कहे वारंवार श्रावग मन करना चल्यो तव देवता आयो वार ॥ श्रा ५ ॥ हाथीनो रुप वेके कियो पिचासपणो कीयो दूर पोष दसाला मे आयनेजी वोले वचन करुर श्रा. ६ मनमेही नहो कंपीयोजी हाती सुंड मेझाल पोष दशाला वारे आयने दियो आकाशे उछाल ॥श्रा ७॥ दंतुसल मेझालनेजी कांवलनी परेलोल उझल वेदना उपनीजी न चल्यो ध्यांन अरोल ॥श्रा ८॥ गजतजने सर्प वण्योजी कालो माहाविकराल रुंक दीयो ठाती चढीजी क्रोधी माहा चंराल ॥श्रा ९॥ अतुल वेदना उपनीजी चल्या नही तीलमात सुरती हां प्रगट थयोजी देवता रुप साख्यात ॥ श्रा १० ॥ कर जोमीने इम कहे थांरा सुरपत कीया वखाण मे नही सरध्या मुढमती मे उपसर्ग कीनो आंण ॥ श्रा ११ ॥ तन मन कर चल्यो नहो थे धर्म पाया परमांण षमो

अपराध थे माहरो ईम कही सुर गयो ठांण ॥ ॥ श्रा १२ ॥ विरजीणंद समो सरीयाजी कांमदेव वंदण जाय विर कहे उपसर्ग दीयो तोने देव मीथ्याता आय ॥ श्रा १३ ॥ हंता सांमीसा चहेजी समणासमणी लीयाबुलाय घरवेठा उपसर्ग सयोजी ईमकंपे जीनराय ॥ श्रा १४ ॥ वीस वर्स लगपा लीयाजी श्रावगना व्रत वार पहेले स्वर्गे उपनाजी चवजासी भवपार ॥श्रा १५॥ आ हढता इद्रेषनेजी पालो श्रावगधर्म कांमदेव श्रावगनी परेजी थेपां मोखाव सुघधर्म ॥ श्रा १६ ॥ मुरधर देससुं आयनेजी जेपुर कियो हे चोमास अष्टादशंछीयासीयजी रूपकुशालचंदजी किनो प्रकाश ॥ श्रा १७ ॥ इती संपूर्ण

॥ नं २७ ॥ उपदेशि ॥

मुर्पो गाम्री देषी मलकावे उमर तेरी रेलतणी पर जावे ॥ टेर ॥ संसार रुपी गाम्री बनावी राग

द्वेष दो पाटा देहरु वापलश्पेका तेम फिरे आ
उषाना आंटारे ॥ मु १ ॥ कर्म अंजन कसाय
अगनी विषे वारी मे जम्यो त्रसना जुंगल आगल
कर्‍यो च्यार गती मांहे रल्यो ॥ मु २ ॥ प्रेमरुपी
आ कमा लगाव्या रुवेडवा जोरुथा जाई पुर्वजवनी
षरछी लेइने चेतन वेसारु वेठा मांईरे ॥ मु ३ ॥
कोइ कटि कटली ञानर्कतीर्यंजचना कोइ कलि-
ञा मनुष्यदेवा कोइ ऐटी कटलीधासी धगतीना
पांमवाई मृत मेवारे ॥ मु ४॥ घमीघमीघडीयाल
वागे रात दीवश ऐ मवही जावे वाजे सीटी ने
उपडे गाडी मासामासना मेलज आवेरे ॥ मु५॥
आयुसरुपी आव्यो इस्टेसन हंसलो ते हलुहलु
थावे पाप जरी पाकीट लेई जाता काल कोटवाल
त्यां आवेरे मु६ काल नर्कमां जमराय पासे जायने
सुप्यो ततकाले आरंभ करीने आव्योरेप्रांणी कूंभी
पाकमे घालेरे ॥ मु ७ ॥ लाप चोरासी जीवा

जोनीमां जीवको ते फिरफीर आवे सत गुरु शिखजे आराधे ते पांमे मुक्ती दुवारेरे ॥ मु ८ ॥ सने अढारेसे ठाक्षीसे वर्षे आत्मध्यांन लगाई गोपाल गुरुना पसायथी मोहने आगाकी गाईरे ॥ मु ए ॥ इती संपूर्ण.

॥ नं० २९ ॥ उपदेशि ॥

देषोकुल जगहंदीछाया ईणमेमालकवणी लुगांयां ॥ टेर ॥ घरमेबेठी हुकमचलावे जोडे वडी हतांयां घरको पांवंद तो टुगमगजोवे जाणे कायजेलयादेषो १॥नारी ज्युंवाकरेघूरका धुजणलागीकाय जीणसुं डरतो घरमे नही आवेःजांणे कालीकाघाया। ॥दे२॥घरषांवंदनेलेषोपुछेः कितना दाम कमायाः रोकरू हूवे सो घरमे सुंपोः पीवपरदेश सिधाया ॥ दे ३ ॥ हलवे बोलणमे नही समजे जाणे ढोल वजायांः मना करेतो दुणी होवेः लेसोटो धमकायाः

॥ दे ४ ॥ मनमांने ज्यूं फिरेजटकतीः सारी रीत उठांयांः गुंगट गाती डुर कियाः सवमेटदीविग्रव-कायां ॥ दे ५ ॥ इणमोल्या सुं कांई न होवेः थोती करे वफायांः मे नही आई थीजदे घरमेःधूल उफतीः अवदेषो मारे घरकी माया ॥ दे ६ ॥ हात जोफने षांवंद्वोलेः मेतो सहू जरपायाः ईणपाघरूोरी सर्म राषणीः तो मेलाषकमाया ॥ दे७ ॥ लाय लंकारी मीली करकसाः पापयजदे सुजआयाः मना करे तो माने नांही करेजो मनका चाया ॥ दे ७ ॥ इतरा काया कीणपर होगयाः एक लुगाई लायाः पेली-पोच विचारी नाहीः अबे कांई होवे पिछतायांः॥ दे ९ ॥सीऊो लुगायां मीलगई थांनेः दमफा नही षुलायाः तिणसुं गरजनही छे थांरेः वोलो मगज भराया ॥दे १० ॥ वृमावीसनु महेश जगतमेः मो आगल जरमायाः तुं दीशे माठरको जायोः जोर कांई चलाया ॥ दे ११ ॥ नारीसेतीकरेसांमनो कोई

फते नहीपावे मुंछ मरोरुी बेठजावे तो लाषां लोकहेराया ॥ दे १२ ॥ सारी नारी नही सारसो कीसन कँहे सुणजाया प्रीतमकेण कदे नही लोपे जांणे इश्वर पाया ॥ दे १३ ॥ इतो संपुर्ण ॥

॥ नं० ३० ॥

पुर्वे पुषलावती वीजजे मे नमीयाजी नगरी पुरूरीकणी नांम राजरूढछोडीहो संजम आदर्यों श्री-श्रीमंदर सांम ॥ १ ॥ कागदीयो लीष भेजु हो संगु को नहो ॥ टेर ॥ चोतीश अतीसे हो प्रभुजो पर-वर्या वांणी गुण पेंतोश एक सहेंश्रने आठ लक्षण धणी प्रतुजील्यारागनेरूश का २ तिनतोज्ञांन हूंता घरमे थकांजी दिक्षा लियां चोथो थाय केवल उपना हो सर्वज्ञांनी थया थारा दर्शनरी मन चाय का ३ जगन दशलाष हूवाथांरेकेवली सादूहूवेसो कोरू तिनलोकना साहीवथे धणी थांरा चरणवां-दणरोकोड का ४ वारे गुणांकर प्रभुजी दीपता मोटा

प्रताहिारज आठ दोष अठारे मांहे लोको नहीजी संच्यापुननाथा का ५ सतरमा जोनजीर वारे जनमीया मुनीसुव्रतवारेदीक्षा लीध उदयपेटालहोसीजीन आठमो विचेथासो जीतुंमेसीध का ६ डुरदेशावर जीणरो पीउवसे तेनी नार सुहागण कहाय माहावीदेहमे प्रभुजीवीराजीया कहो नीर धनीयां केमथाय का ७ आम्रांगरनेहो नंदीया अतघणी विचेविकटविध्याधर गांम वांणी सुणवानेहो आयसकूं नही यांही लेसु तुमांरो नाम का ८ कूवधीकदाग्रही नतेमेघणा अपछंदाअवनीत ऐकआधारप्रभु मुजमोटको मारेसुलरीपरतीत का ९भर्तषेत्र मेहो प्रभुजीहुं वसुं पुषलावती जीनराय कोइकदीन प्रभुजीसुं मीलवातणी मारेदीसेछे अंतराय का १० कोमां कोसांराहोप्रभुजी सुं आंतरो आवूं केमहजुर पूजजेमलजी करेथांसुं वीनती मारीवंदणाउगते सुर का११इती संपूर्णम॥

॥ नं० ३१ ॥

मे हाजर नोकर तेरा प्रभुपटोली पायदोमेरा टेर. ऊातमंगाउ कलममंगाउं पांनामगाउंकोरा सुगतपुरीको पटोलीपायदो सीसनमाउं मेरा मे १ कोफी२ मायाजोफी मालकीयाबहू जेला जमका दूत आयफिऱ्या जबलुंटलिया सबमेरा मे २ दिल के विचदरीया बलगाहे दरवाजापर पेरा सुमतसी- पाही हाजरराषू चोरनघाले घेरा मे३ मुनालालकी आई अर्जहे प्रभु चरणे चीतमेरा जनममरणका फेराटालो पारलगादो बेरा मे ४ संपुर्ण ॥

॥ नं० ३२ ॥ उपदेशि ॥

॥ दमकानही वीस्वासा जेसे पांणीमें गले पतासा ॥ टेर ॥ एक दीन एसा होगारे लोकों जंगल होगा वासा वहां तेरे पर ढोवज मेगी पशु चरेंगी घासा ॥ द० १ ॥ जुठाही अन धन जुठा-

ही जो वन जुटा हे घर वासा जुटारा चरच्या हूनीयां मे जुठाहे मे वासा ॥ द० २ ॥ एकवार श्री जीनजीका नजले मन हुलासा नवल कहे मे कतु न विस्वासा जव लग घटमें स्वासा ॥ ॥ द० ३ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ३३ ॥ नेमराजुलकी ॥

॥ राजुल पुकारे नेमपीया ए सीक्या करी ओरू के चले चूक हमसे कीयापरी ॥ रा० १ ॥ हुय आशकी निरास उदास नीत धरी प्यारा वसन हीमे राजी तम पीरमे परी ॥रा० २॥ संग लीजीए दयाल दया धर्म आदरी निशदीन तुमेरा कहेत ज्ञांनकी जरी मुनी चंदवीज चर्ण कमल चित्तमे धरी ॥ रा० ३ संपुर्ण ॥

॥ नं० ३४ ॥ ख्यालकी ॥

॥श्रीशंती प्रभुजीसाता वरतेजी थांरा नांमसु॥ टेर॥ उदर आये जब मरी मीटाइ वरतायो सुष- सारे संकट भंजनवीरद तुमारोः शास्त्र मुनींद्र पु कारेसुषसंपतको आपो प्रभुजी आपद सहु नीवारो जी ॥ श्री० १ ॥ ताव तप तो कदेय न आवे सीयोदाहू नही ठेरे सिर वेदन तो उभी न रेवे दू- श्मन ठोके भेरे भुत प्रेत तो अलगांही नासे ईम्रत होवे जेरजी॥श्री०२॥प्रत्यक्षपर चोथांरो प्रभुजी वेरी जावे भाज सुध मन सेती समरेतांने सुधरे सगला काजः अष्ट महाभय दूर पुलावे आदर देवे राज जी ॥ श्री ३॥ शंता करता विरद तुमारोः सबही रोग मीटावोः गांम गयो रोकुशले आवेः होवे हर्ष वधावोः दिन २ लक्ष्मी वधे चोगणीः पांमे राजप सावोजी ॥श्री०४॥ वांज कांमणी पुत्र(ज) लभरावे निरधनीयां धन पावे अंधा वेरा होवे ज अछा

पापी पाप गमावे रांमचंद्र कहे नित सुष वरते शंतप्रज्ञुने ध्यवोजी ॥ श्री० ५ ॥ इति संपुर्ण

॥ नं० ३५ ॥

धोवी धोवे कापरुांरेः निंदक धोवे मेलः जार हमारो लेचल्योरेः ज्युं विणजाराको वेल॥१॥निंदक तुं मती मरजेरेः मारी निंद्या करेला कूणः नि॥टेर॥ निंदक नेडो राषजोरेः आंगण कूटी वणायः विण साबू पांणी वीनारेः मारापाप मेल धुप जाय॥निं२॥ निंदक वेठो जरी सजांमेः चीत निंद्यारे मायः ज्ञांन ध्यांनतो सव जुलगयो पीण कूबदज जुल्यो नाय॥नि ३॥निंदक निंध्या करे घणेरीः चले आपर छांदेः गरु मांइ तांरी निंद्या करमेः कर्म घणेरां वांधे॥ निं० ४ ॥ परना अवगुण राइ जीसराः मेरु ज्युं देषावेः पोताना तो अवगुण ढकतो बोलेः धका नर्कमे खावे ॥ निं०५॥ चोरी जुगारी काढ लंपटी क्रुठा बोलो सोइ परना छेद्र तकतो चाले जवरमे दुषीयोहोय

नी० ॥६॥ निंदक तुंगल जावसीरे ज्युं पांणी मेलुं ण कवीररे तो रांमजारे निंद करे कहो कूण ॥निं० ७ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥नं० ३६ ॥ नवकार मंत्रजी शेद्यांन घटोए देशि॥

॥ परमाद मांहे वेस जावे पछे समायकने मोडो आवे फेर राग द्वेष रीलगी डोरी सुध समायक करणी दोरी ॥ १ ॥ विषय विषेनी जर जोवे फेर मेल परायो नित धोवे निज उंगणने ढक चोरी ॥सु० २॥ मुडो वांधने वेस जावे मेल उतारे षत जमावे मुषसु वोलेजी महोरी ॥ सु० ३ ॥ विकथामां डरयो च्यारे विन कारण उ ठोलीयो लारे श्रावक वाज रयो धोरी ॥ सु० ४ ॥ समायक मांहे करे जटको वले नयणांशे कर रयो मटको हसे हसावे नर गोरी ॥ सु० ५ ॥ संतोसेतीकरे कजीया कदे कजीयावीनां नहीं रंजीया पर निंदीया

करणी सोरी ॥ सु० ६ ॥ विनय भक्त सुर हे दूरो पर निंद्या करणने सदा सुरो दसमे अंग कही चोरी ॥ सु० ७ ॥ जीव अजीव नही ठलषीया श्रावग मांहे वाज रया मुषीया ठाह नही श्रद्दा कोरी ॥ सु० ८ ॥ छल छेद्र जोवे परका ठगण नही जोवे घरका सावज भाषा बोलेजोरी सु० ए रामचंद कहे सुण लीजो सुद्ध समाइक थे कीजो ज्ञांनी सकारे जोमतोरी सु० १० ॥ ईती सपुर्ण ॥

॥ नं० ॥ ३७ ॥

मारा गुरजीगुणवंता आछोज्ञांन सुणायो टेर. जीवतोअनादी मोहनिंदमेछायो ज्ञानको जलछांट मोकुं आपजगायो मा० १ प्यासीयाने ठारनिर्मल नीरजोपायो क्षुधानेषीर षांडकोजीम भातजीमायो मा० २ रागसुंण ज्युं नागरहे वहूतघूमायो भाद्र वे वरसादज्यूंकड आपलगायो मां० ३ घोरयो सं-

सारसागर आप फुरमायो मुक्ताईणमांय मांके आप वंचायो मा० ४ महामुनी नंदलालजीत स- शिक्षहूलसायो उगणीसे तेसटमांहे गढ चितोडमे गायो मा० ५ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ न० ३० ॥ रुएलकी ॥

तुंमदवाघरोदो ज्ञांनोगरुमीलीया वेदहकीमजी ॥टेर॥ अष्टकर्मको रोग अभ्यंतर जनममरण दूष भारी तुरत फुगत सब रोग मीटेलो दवा वोत गुणकारीजी ॥ तु० १ ॥ छोटी वडी मीठी करुवी गोल्यां हे तैयार आंष मीचकर झटपटलेलो मत करो ओरविचारजी ॥तु०२॥ समज सयांना वार वार ए जोग मीले नहो ऐसा हित मुफतकी दवा पीलादे कोडी लगेनहो पेसाजी ॥तु० ३॥ जीत- ज्ञांणोका चूर्णलीयां वादी हरे तमाम जो इतना ही सोपरषोतो होवे पर्म आरांमजो ॥ तु० ४ ॥ माहामुंनी नंदलालतणा शीष जोडकरी ईमगावे

ऐसा मोषा आंणमीलेतो रोगसोग मोट जावेजी ॥ तु० ५ ॥ ईती सपुंर्ण ॥

॥ नं० ३९ ॥ पूरो सुपनहो पंचमा आरे ए राग ॥

श्रावक नाम धरायलीया ज्यांरे त्रशथावरनी नही छे दया शुद्ध नही ज्यारे नवकारो ए श्रावगनो नही आचारो ॥ टेर १ ॥ थापण मेले ज्यांरी दवा करे सुं कषाईरकुडी साषत्तरे करनही परत्तवजावारो ॥ए० २॥ चोरीकरे परधन हरे कुडा तोलाने मापाकरे षोटा वीणज करे न्यारो ॥ए० ३॥ घरकि नही मरजादा करे परदारासेती गमन करे कांण मरजाद नही थांरो ॥ए०४॥ धनके काज अकाज करे तेतो कीणवीध संसार तीरे आरंभ करे अती विस्तारो ॥ए०५॥ वन कटावे वहू त्तारत्तरे वली सत्रना संजोग करें सरोवरनी फोडावे पालो ॥ए० ६॥ धर्मस्थांनकमे कबू नही आवे वली रां-

मत देषणनेजावे कांमनही प्रतीकमणारो॥ए०७॥ निर्मल पाले ज्यांने श्रावगपणो ज्यांरो सुत्रमे वि-स्तार घणो जोर लगायकीयो पेवोपारो ॥ए० ८॥ छपने वेशाप सुद चवदशपरी सेर सीतामाहुमे जोमकरी पुवचंद कहे वारंवारो॥ए०९॥इती संपुर्ण॥

॥ नं० ४० ॥

आकोमी जगमे अजव चीज हे जारीई, कोमी वीनवांता क्रुटकरोल पराई ॥टेर॥ कवमी सेवनी थान फोवीणज कर आवे कवमीसे भुमानार परण घर लावे कवमीसे भाइवंद डुवारे ले जावे कवडीसे निचको उंच वेण वतलावे॥ को० १॥ कवमीसे सासुसुसराने सोई कवमीसे षूसामद करत सवकोइ कवडीरेपातर वचावेच देमांई कवडीरेपातर सोसो सोगनषाई ॥क० २॥ कवडीसे लशकर वेठचलेरा जींदका कवमीसे मोरचा घेरलीया डुस्मनका क-वडीसे मंगल ऐसकरे जंगलमे कवडीसे पालषी

वेठचले नगरमे ॥ को० ३ ॥ कवडीसे डफरावाजे आणंदपुर मांई, कवडीसे जगमे निशांण उंछव होई कवडीसे कडाकीलंगी मोतीहे न्हाई; कवडी की लावणी जीवणदासनेगाई॥को०४॥इतीसंपुर्ण॥

॥ नं० ४१ ॥

चांवकारा हातीघोडा चांमकारा उंट चांवडारा वाजावाजे चारुंईफूटचांवडारी पुतलीतुतोभजनकरे ॥१॥ चांमकारी पुतलीने चावे वीकापांन न्हारीर कपडापेरे कर्तगुमांन ॥ चा० २ ॥ चांवकारावाच-काने चांवकारी गाय चांमकारा डुवणवाला चांवडामेजाय ॥चा०३ ॥ चांवकारापातसाने चांव-डारो वजीर चांमडारी सारीदूंनीया कहेतकबीर ॥ चा० ४ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ४२ ॥ देशिवनाकी ॥

माहाविरजीरी पालपडी रतनांजडी हांहाजी-नजी रतनाजडोने हीरांजडी हां, मोत्यारी लागी

झगमगजोतो ॥मा०१॥ हां,कवरीतो छोडी केलमे हां मेलांमे छोडी नार ॥ मा० २ ॥ हां: चोष्ट इंद्र आवीया हां सिवका उछावणकाज ॥मा०३॥ हां: हर्षधरीने चालता हा धनदीहाडो आज॥मा०४॥ हां नगरीवीचे होय निसरया हां सुरनरनारयांना थाट ॥मा०५॥ हां चांतश्वीर दावली हा वोले छे चारण चाट ॥मा०६॥ हा देवदेवि तीहां आवीया हां लागीजी गामीगजोत ॥ मा० ७ ॥ हा गीतज गावे नारीयां हां नगरीमे हुवो उध्योत ॥मा० ८॥ हां संजमलीनो चुंपसुं हां मीगसर दशमी मास ॥मा०९॥ हा ग्यांनध्यान वध्योघणो हा पूरीमनरी आस ॥मा०१०॥ हां पूर्व पुनइसडाकीया हा इंद्र जुता तीणवार॥मा०११॥ हा गोत्म गणधरतारीया हा करदीयोपे वो पार॥मा०१२॥हा रायसीधारतना डीकराहा त्रीशलादे थारीमाय ॥मा०१३॥ हां कर्म-पपाय मुगते गया हां चात्रीदीवालीनी रात ॥मा

१४॥ हां नाममिठोमी श्रीजीसोहा ध्यावुछुंरे मन माय ॥मा०१५॥ हां गुंणकरतां धायुंनही हां देषणरी रहीचाय ॥मा०१६॥ हां गांमगगरांणो दीपतो हा सहेरमे उतारेपास ॥मा० १७॥ चोथमल करे विनती हां मानलेजो अरदास॥मा०१८॥संपूर्ण

॥ नं० ४३ ॥

राजारांणीरे कलुंबोघणोजी द्रिपतीकुमरांनी जोम संसार बंधन सांकलजीसा काचा सुत ज्युं नांषएतोम १ जीनेसरमोहनी जीताजी धन२ हो गया न चीताजी ॥टेर॥ श्रीशषजजीरे दोय बेटीयांजी जतांदीकसो पुत सगलाई संजम आदरये जो दीधा मुगतीरा सुत ॥ जी०२॥ श्री अजीत जीरे बेटीयां नहीजी सेजेई टलगयो पाप संसा वेठाने कुरे घणाजी प्रजुनहीकीयो संताप ॥ जी ३॥ परो नांम जीनधर्मनोजी अजेतांई नीतनवे नामः पापरो नाम कीसे कांमरोजी तीणसु पां

सारी ठाम ॥ जी०४ ॥ संभव अभीनंदण सुमत-
जीरे तिनुरे तिनरपुत पदमप्रभुजीरे तेरेवेठाजी
ज्यांराभारी घरांरा सुत ॥ जी० ५ ॥ सुपार्श्वजीरे
सतरे वेठाजी चंदा प्रभुजीरे दस आंठ भगणीस
सुवद जीण दरेजी करता मेल्या अरजाट ॥जी०
६॥ शितलदोय वारे अंसजीरे निनांणु सुतवास-
पुजश्री वीमलजीरे वेठोनहीजी संजमले मांरुथो
जुज ॥जी०७॥ अनंतजीरे अक्यासी वेठाजी धर्म
जीरे उगणीस प्रभुजी संजम आदरयोजी नही
आण्यो रागनेद्वेस ॥ जी०८॥ डोरुक्रोड शंतनाथ-
जीरे वारेभव भेलाकीया सुध वराावेठा संजमली-
याजी वडागणधर निर्मलवूध॥जी०९॥ कोरुक्रोरु
कुंथ नाथजीरे अरनाथजीरे सवाक्रोरु प्रभुजी सं-
जम आदरयोजी विलरता दीयाछोड ॥ जी०१० ॥
श्रीमलीनाथजी कवांराराजी वालब्रमचारी वखी-
वात विशमांरे इग्यारेवेठाजी करतांमेल्या वीलापात

॥जी०११॥श्रीनेमोजीरेवेठानही जीवलेहीनेमकुंमार वालव्रमचारी जग प्रगटयाजी तोरण जाय छोडी राजुलनार॥जी१२॥श्रीपार्श्वजीरे बेठानहोजीश्रीवी रजीरेवेठीएकसुणउपदेश संजमलीयोजीजमालीज माई लीजोदेष॥जी०९३॥ अजीतवीमल मलीनाथ जीरे नमीनेमी पार्श्वजीणंद सातमावीर जीनेस- रुजी ज्यांरे बेठारो नहीफंद ॥जी०१५॥ सवाचार- क्रोरु सर्व हूवाजी प्रभुच्यारसे उपरसात सतरे- जीनजीरे इतरावेटाजी तीनवेटयांरी चालीवात॥ जी०१५॥ संसारना सगपणजांणनेजी किधाल्लुषा- नावआंण तोपीणमुक्तगांमो हूवाजी समकीतरा- जव आंण ॥ जी०१६॥ पालीमे पांनो पायोजी तीण अनुसारे कीधीजोड रुष सुषलालजी ईम कहेजी इतरा वेटांने दीधा ओरु ॥जी१७॥ गरु श्री चंद्र- भांणजी तिहांरेपरसादेत वनप्रकास संवत अठारे चिउंतरजी सुद चोत मंगलवार ॥ जी१८॥संपुर्ण.

॥ नं० ४४ ॥

मनवा समजलेरे वीर सांकडीसेरीमेतने चलणो-पलीतीर ॥टेर॥ मांनवरो भवनिठजपायो तुं क्युं हारेगीमार सुंसवृतले आपकी तुंपर चीलेनीलार ॥म०१॥ तुं जांणे घर माहरोरे हूं घरनो सीरदार काल आय थारी घांटी पकमी कोई न राषणहार ॥म०२॥ राजारांणा पातस्यारे वडेरभुपाल मुंछडी-यांवटघालता ज्यांनेही लेगयोकाल ॥म०३॥सुतां कांई करेरे सुतां आवेनिंद काल सीरांणे आय षको ज्युं तोरण आयोविंद ॥ म०४ ॥ अनरथ सुं धन निपजे ते सुकृतमे कीमजाय के चाटोकुटावसी केलुचा सोदापाय ॥ म०५॥ उगे ज्यां वावे नहीरे वावे ज्यां वलजाय एसा नरांरा देषलो वेमालम सकरापाय ॥ म०६॥ निगुरा माणस मती मीलोरे पापी मीलो हजार एक निगुरानासी सउपर लष पापीनो चार॥म०७॥नरनारायण देहमीलीरे निगुरो

रहीयेनांय निगुरो नरतो पसुबराबर दरसण क-
रीये नांय ॥म०७॥ निगुरो समरण नितही करेरे
दिनमे सो सो वार नगर नायका सत्य करे तो व-
लेकोसके लार ॥म०९॥ सोवाकी माला सबकोई
फेरे पिणदीलकी फेरे नाय ज्यो बधवाको झालरो
लटक रयो गलमांय ॥म०१०॥ गरुवीन माला फेर-
तारे गरुवीन देतादांन गरुवीनानी रफल जावसीरे
देषो वेदपुरांन ॥म०११॥ रामकृष्णसे कोन बडारे
जीणने सतगुरु किन तिनषंडको नाथ कहीजे
गरुआगे आधीन ॥म०१२॥ संसारमांहे दुषघणेरा
केता न आवे पार दलीचंद कहे धर्मकरोनी जीम
उतरो भवपार ॥ म०१३ ॥ इती संपुर्ण ॥

॥ नं० ४५ ॥ पूरो सुषनही पंचमेआरे ए देसी ॥
अरीहंत पेलेपदजांणी प्रभु अनंतदर्सन अनंत

झांनी ए तीनुंही लोक रयाञाली नित नांमजपो नवकरवाली १ सुरनर ज्यांरी सेवासारे प्रभु आ-पतीरया अवरांने तारे ज्यांरो नांम तुटे कर्मजाली ॥ नि० २ ॥ सीवनगरीमे डेरा दीधा ज्यां आतम कार्ज सीध कीधा आवागमन फेरा दीया टाली ॥ नि० ३ ॥ अजरअमर पद रोगनही निराकार-नीरंजन जोत सहीः प्रभुकर्मांरा बीजदिया बाली ॥नि०४॥ गणधर ज्ञानतणा दरीया तीके चर्णकर्ण सुत्रगुण भरीया साध साधवीयांरी करो प्रतीपाली ॥नि०५॥ मुनी उवझाय वंदु भावे जीके सुत्र अर्थ कर समजावे आगम पोट देवे टाली ॥ नि०६ ॥ साङुजी सुध संजमपाली अतीचार दोक्रुण टाली तपकर कर्म देवे गाली ॥नि०७॥ पांचूपद रागुण ऐकसोने आठो इतनाही मणीया नहीघाटो इण माला सुं लगाओ ताली ॥नि०७॥ नवकार वालीरो जापजपो तो क्रोडभर्वरा कर्मषपो आलपंपाल

देवो टाली ॥नि०९॥ भुतवेताल व्यंतर भारी क-रतां आवे मारमारी इण मंत्रथकी नमे ततकाली ॥नि०१०॥ ए नव करवो दुषदहे अरु मोष तणा-वली सुषलहे नहीतर ईणसुं टांको देवो झाली ॥नि०११॥ अठारेइ गतीसे तींवरी चोमासो कहेकु-साल गरु दूर्ग प्रसादो नवकार मंत्र ठे संगट टाली ॥ नि०१२॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ४६॥ दोहा ॥

सासण नायक समरीये विघनवीकारण वीर भाव सहीत गरु भेटतां हर्षे हीवड़ो हीर १ उम-जीरे घरउपना फूलांजीकु षरेमांय बाई तुलछां वे हुंजणा पूनमचंदलगुभाय २ तुलछांजी के नेतरे भाई थे सुंणजो भेद संजम लोले सांसही मारे मन उमेद ३ वेनभाइ बे हुंजणा मनमे लीधीधार ज्ञानि गरुपदारीया लीधो संजमभार ४

॥ राग आशावर ठे ॥

पुनमसुंनी दर्शन हे सुषकारी थांरी सुर्त मोह-
नगारी ज्ञानी गरुशी वथांरा सुषकारी आप पू-
जरी पदवी धारी परमगरु दर्शनरी ठवी न्यारी
॥पु०१॥ जालोर सहेर जगतमे वांको कोटकीलारी
ठवीन्यारी सहूकोई लोकवसे वहू सुषीया श्रावग
समकीत धारी ॥पु०२॥ जालोर सहेर रत्न जीम
दिपे केसर हंदी क्यारी संजमलीधो बहु श्रावग
सतीयां मोटाश माहा वृतधारी ॥पु०३॥ पंचमाहा
वृत पालो मुनीसर पालोपंच आचारी जमर भीष्यां
मुनी सुजतोलेवे दोष वयांलीसटाली ॥ पु० ४ ॥
त्यागी वेरागी ने नीरलोभी त्रसना तो दूर काटी
ज्ञांन गरुके पाट विराजे पुजजी वाल ब्रमचारी॥
॥पु०५॥ चेरो देषसुरगथो चवीआया थेरुप संपदा
पाइ पुरवभवमे करणी कीधी दिनश जोत सवाई
॥पु०६॥ गुंण सतावीस करने दीपे वाम्ह सहीत

वृतधारी तेज प्रकाशहे समगीतको मिटेतमृत्र्यं-
धारी ॥ पु० ७ ॥ अंगउपंगमे नयनिषेपा नवतत्व-
निरणा जारी जिनश्भाव जगोतीरावांचो बूध थांरी
पेलेपारी ॥ पु० ८ ॥ सेंसकलाकर सशिजीम सोभे
तपजप करीया जारी पांचइंद्रो वसकरलोनी जीता
हे विषयवीकारी ॥ पु०९॥ जनमलोयो जालोरमे-
स्वांमी विचरतवसु धाम जारी चंद्रचकोर ज्युं मा
रामने वाट जोवे नरनारी ॥ पु० १० ॥ चोमासो
सरधर्मी वे कीजो श्रावकां एम विचारी दर्शनदीजो
करपाकीजो अरजलोजो अवधारी पु०११ संपूर्ण॥

॥ नं० ४७ ॥ पटावली ॥ चाल लावणीको ॥

मेध्यावुं गरुघनराज शारदामाता मोयदोवांणी
सुजवरण दयाकरदाता श्री आदनांम अरीहंत
नमुजगनाथा२ गुंनगावूं मुंनीजी गग्यांन सदासुष-
साता १ जगजाहर मुंनीजीवराज वडा धर्मध्यांनी
तिण पाटे मुनी जीनलाल साडु सुजज्ञांनी उदयो

तिणपाटे अमरसिंघ धर्मदाता ॥गुं०२॥ मुन अमर पाट तुलचे सजयेअवतारीर तीणगादीसु गरुसुजांण सादू सुषकारी ज्यांके पांचूशिक्ष प्रमांनठदेरीवप्राता ॥गुं०३॥ एकसेज रांम माहाराज धर्मके धोरीर जीवणजी पर्मप वांण कर्म अठतोरी मुंनीज्ञांन अंने जीतमाल तपेवरस्ताता ॥गु०४॥ ज्ञांनके पुनमचंद नवलपुनपाजार मुंनीका ठवाठ निकलं करीवे सरराजा कवी अंचल करेकरजोड वंदनदोर्ठहाथा ॥ गु०५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ नं० ४७ ॥ कांइरे जवाचकरुं रसिया ए राग ॥

सतगरूजापे ईम्रतवाणी चेतोर तुंमे उत्तमप्राणी कांईरे प्रमाद करेजांवरा १ नवघाटी मांहे जटकतआयो तो दूर्लभ मांनवरो जवपायो॥कां०२॥ बाल पणो हसषेल गमायो जोवनम तरुणी चीतलायो॥कां० ३॥ मेलुर करमाया सेठी रुोकरवय रुंगर थईरूली ॥कां०४॥ भुरुापेते थोषाट संजायो

तोई समताम नमे नहीलायो ॥कां० ५॥ षाय-षाय थेतो दीवस गमायो धर्मरत्न हाते नही आयो ॥कां०६॥ पाचुइंद्री ते वसनही कीदी तेनी वनर्कनी गारीदीनी ॥कां७॥ प्रमादकियां गो तातनेदेगो च्यारगतिसु लागरहेगो ॥ कां०८ ॥ कूंरुरीक सहेंश्रवर्सलगसेंठो प्रमादरे वस सातमी बेठो ॥कां० ९॥ पार्श्वनाथजी रीसादव्यांजांणी प्रमादरे वस थई इंद्राणी ॥कां०१०॥ राजतेजमे थारो जीव फुल्यो सतगरूजीनी सवा भुल्यो ॥कां० ११॥ हिंस्यामांहे थारो जीव वसीयो नर्कनी गोदरो तुहरसीयो ॥कां०१२॥ ईमजांणी प्रमादनिवारी तिरया तीरे घणा नरनारी ॥ कां०१३ ॥ बुसी गांम सदा सुषकारी सेवासारे घणा नरनारी ॥कां०१४॥ संवत अठारे अठावनेवासो ऊटे चोतमल कीयो होली चोमासो ॥ कां०१५ ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ४९ ॥ समकीतनुं स्तवन ॥

समकीतद्वार गंभारे पेसतांजी पापपड लगया

ूरे माता मरुदेवीनो लाफलोजी दीठो ठे मीठो
श्राणंद पुररे ॥स०१॥ आयुवर्जित साते कर्मनीजी
सागर कोमा कोडी हीनरे स्थिती प्रथम करणे
करीजी विर्य अपुर्व मोघर लीनरे ॥स० २॥ भुंगल
नागी आद कषायनीरे मिथ्या मोहनी सांकल
नाथरे वार उघाफ्या ठे संवेगनाजी दिठा श्री
अनुजव जवीयण नाथरे ॥ स० ३॥ तोरण वांध्यो
जीचदया तणोजी साथीठे पुरो श्रर्धारूपरे धूपघटा
रभुगुण अनुमोदनाजी दिप मंगलआठ अनुपरे
॥स० ४॥ संवरपांणीये अंगपषा लीयेजी केसरचं-
दण उतम ध्यांनरे आतमरुची मृगमद महेजी
पंचाचार कूसम प्रधांनरे ॥स०५॥ भावे पूजोर पा-
वन आतमाजी पूजो परमेसर परमपवीत्ररे कारण
जोगे कारण नीपजेजी क्षमा वीजयजीन आगम
रीतरे ॥ स०६॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ५० ॥

भजनगट वांधोरे मेराजाई. तेरीजमसे होत लमाई ॥भ०टर॥ ज्ञानको घटकर धर्मकंगर रपले समताकी जरलेवोषाई शिलसंतोप सीपाहीरपले लोजकूं मार हटाई ॥भ०१॥ दयारीनोपंकू त्यारी रपले भर्मका गोला जराई सतकी चकमक अगन देषाइतो कांमकी फोज हटाई ॥ज०२॥ नेणनकीकी वांरीढकले श्रवणकी वारी वंधाईः रूंणकारधुंन ध्यांन धरले तो जीणहीं चतुर समजाई ॥ज०३॥ पांचकूं मार पचीसकूं वसकर जोतमेजोत मीलाई केतकवीर सुंणोजाई सादां जीणसुं फते होयजाई ॥भ०४ ॥ संपूर्ण ॥ ॥ नं० ५१ ॥

जनमसारो वांतांमे वीतगयोरे थेतो कवुह न नाम लीयोरे ॥ज०टेर॥ दसवर्स लरकपणेमे षोयो विसोमे जदा जयोरे मगर पचीसी मायाके कारण देशप्रदेश फीरीयोरे ॥ज०१॥ तिसवर्स तीरीयासंग

मोलीयो जोवन अंद नयोरे वृदनयो देह कंपण लागी जब जमनांणरयोरे॥ज०२॥ क्या ले आयो क्या ले जासी ना कलुदांन दीयोरे धनजावन सुपनेकी संपत रीते हातरयोरे ॥ज०३॥ यो संसार हाटकोमेलो झूठो ठाठ नयोरे केतकवीर समझमनमेरा क्यूं तुं राचरयोरे॥ ज०४ ॥ इती संपूर्ण॥

॥ नं० ५२ ॥

जीवा समकीतवीना न तीरो नावे कोम जतन करो ॥टेर॥ जाय वनमें लाय तनमे अतुल ध्यांन धरयो विसदो य सहीपरीसा तपतदेह जरयो ॥ जी०१॥ वोत लाभ न भयोकवहुन मुंन धरतफिरयो कोम लाप उपवास करके कष्टसेतीमरयो ॥जी०२॥ भातरके शास्त्र जांणे अर्थ करतधरो रहेत नीज आराध नामे चीरकाल भृमतफीरयो ॥ जी० ३ ॥ सार असल अनोप अनुभव अतुल रस नरयो देवीदास मुक्तीचाहे समकितनावीसरीयो॥जी०४॥

॥ नं० ५३ ॥ उपदेशी ॥

तेरीफूलसी देह पलकमाहे पलटे क्यामगरुडी राषेरे आतमज्ञांन अभीरसतजने जेहरजम्हीकीम चायेरे ॥ते०१॥ कालवेरी थारेलारे लागो ज्युं पीसे ज्युं फाकेरे जरा मंजारी ठलकर वेठी जीम मुशा पर ताकेरे ॥ते०२॥ सीरपर पाग लगी कसवोही ते वडा छोगा राषेरे निरषेनार पारकीनेणां वचन वीषे रसचाषेर ॥ते० ३॥ रत्नचंद जगदेपइथरता वांदीये कर्मवीणकेरे शिवसुषज्ञांन दीयो मोये सतगुर तीणसुंषरी अन्नीलाषेरे॥ते०४॥इती संपुर्ण॥

॥ नं० ५४ ॥ कोरोकालजीयो ए ॥

आगममांहे जोयलो कोणक नृपदसचाय षोटो ठालचीयो ठे मारे मायने वाप० षो० प्रगटे प्रत्यक्ष पाप०षो० भुक्ते आपो आप० षो० भाषीयो श्री जीन राय ॥षो०१॥ वापभणी दीयो पिंजरे मरकर नर्कमे जाय॥षो०२॥कनकरथ नृप देषलो राजरूद्ध मुरठाय

॥पो०३॥ पुत्रारोनुक सांनकर मरमाटी गतजाय ॥पो०४॥ उदाई नृपभांणेजो मारयो मुनीराक्रात॥ षो०५॥ सगपण कु सगपण गीणीयो नही जोवो परीग्रानीवात ॥पो०६॥ माहा सतक श्रात्रगवडो तीणरे तेरे नार॥षो०७॥ रेवंती मोटी कही सोकां मारीबार ॥षो०८॥ कांम जोगबु वदीघणी नित-दोयवाछकामार ॥पो०९॥ मांशश्रुलातल करी षट-मद पीवे नार ॥पो०१०॥ माठी गतरी पांवणी वले सुरी कंतानार ॥षो०११॥ राय प्रदेशी मारीयो गई ज मारोहार ॥षो०१२॥ ईण परीग्रारे कारणे मांया जो नरनेनार॥षो०१३॥ नरजवरत्न गमायने कांल सर्पमंजार ॥षो०१४॥ अनरथ जांणी चेतजो थेदो परीग्रो छीटकाय ॥पो०१५॥ रामकृस्न परीग्रोतजी जनम मरण मीट जाय ॥ षो०१६॥ इती संपुर्ण॥

॥ नं० ५५ ॥ घुमर राग॥

गणधरजीरा गुंणसेगासा ज्यासुं पर्म आणंदसुप

पासां हो राज ॥ग०टेर॥ इंद्रभुती नांम गोतमगोतर अगनभुती गणधरदूजा हो राज वायभुतीने वी-गतवषांणुं ज्यारा चर्णकमल नितपुजु हो राज ॥ ग०१॥ पांचमा गणधर गुंणांरासागर ज्यांरो नांम सुधर्मांवाजे हो राज च्यारुही सिंघमे शशि जीम सोभे एतो प्रभुजीरे पाट वीराजेहो राज ॥ग०२॥ मंडी पुत्रने मोरी पुत्र दोनुं ज्ञांन गुणांरा दरीयां हो राज वेरागी लीवलागी मुक्तीसुं चर्णे चीतधरीया हो राज ॥ग०३॥ अकमपीतछे आठमागणधर ज्यां भावसुं ज्ञांनी गुरु भेटया हो राज अचलभ्रृतानी ज आतमातारी भवभ्रना पातीक मेटाए हो राज ॥ग०४॥ मेतारजने श्री प्रभासा एकादस गणधर-जांणी हो राज अंतरमहुर्तमे अनुभवजागी थया चवदे पुरव चाहुनाणी हो राज ॥ग०५॥ एइग्यारे ब्रांमण कीरीयामे वीर वचन सुण भीना हो राज साथे चउमालीसे संजमलीनो सहु जनममरणसुं

वीना हो राज ॥ग० ६॥ कठण कर्म तपस्या कर
तोमथा ज्यासुध मनसमता आंणी हो राज नव-
गणधरतो प्रभूजीरे पेलापहुताठे निर्वांणी हो राज
॥ग०७॥ कूशालचंदजी गुणकरगेरा गितारथज्ञांन
राप्यासी हो राज भगवांनदाश ज्यांरे प्रसादे जु-
गतसुंजोरू प्रकासी होराज ॥ग०८॥ अष्टादस अे-
कांणवेविचरत रुड़ गांममे आया हो राज कृस्न-
पक्षतिथ तीजमाहारी जठे गणधरजीरा गुण गाया
हो राज ॥ ग०९ ॥ इती संपूर्ण ॥

॥ नं० ५६ ॥ दोहा ॥

प्रथमनवेसे पंचमे वेसेतोकरदे ठांन कलजु-
गनी पंचायती हे अनरथरीषां न ॥१॥ साच वरा-
वर तपनही साच धर्मरोवीज रिजेसुरनर साचसुं
साच जगतमे चीज २

॥ लाजमेरी रपले भवांनी ॥

साचसेसेव करेदेवा साचसे जीते नीतमेवा
साचसे धीजहीउतरजेवा साचसे पारही उतरेदेवा॥

॥दोहा॥ पारउतारे साचही साच वडो संसार काजे-
हुवे सब साचसुं साचवो लाजलार॥साचसे षडाषडा
गुंजो साचका पगल्या नीत पुजोः साचसो धर्म नही
दुजो १ साचसुं पेटजमेभारी साचसुं रिजे नरनारी
साचकी वात लगे प्यारी साचसे धीजे वोपारी॥दो॥
संपतपावे साचसुं आपदा जावे दूर जीणनर साच
न राषीयो तीणकीयोज मारोधुल झूठसो दूस्मन
नही दुजो सा०२ महीपत साचकुं परषेतीहां सब
देवकुं करषे कहो मुज मुष्टीमे हरषे जोतसी बोलो
वे धडके ॥दो॥ देवज्ञ शास्त्रहेरने कहे स्वेत गोलम-
टोल कहो सकुनी जुमशकुंनकूं मे पुछुं ईणठोर
शकुंनीशकुनां कूंबुजो सा०३ शकुनी जोवेछे जे हवे
कन्या केशनी चोव ते हवे मोती अणवींध मुष्टीमे
पंच तवआए द्रष्टीमे ॥दो॥ पंचवीचारे आपसुं कर-
णोकी सो उपाय विना इलमको बोलवो बीनबो-
ल्यां हरु मतजाय आवे अब अरु आमोकुंजो सा०४

पंच कहे करणे अवकांइ वोल्यां वीन सरसे कव तांइ पंचायती जूठी नही जाषी आपे नही रुषारुषीराषी दो. परमेश्वर साषी करी रूरपरभव-को राष षोटी न करी पंचायती कुंठ न कयो हक नाक आंपां अव वोलत क्युं धुजो ॥ सा० ५॥ पंचांने परमेसर केवे पंचां कोउंठो सवलेवे पंचांकूं कर- काटी देवे पंचांके जरोसे रेवे दो. पंच परमेश्वर सारषा प्रगट कहे संसार लाख क-हो सव मील करी जली करे कीरतार आंपां पण परमेश्वर दूजो ॥ सा० ६ ॥ पंच कहे लालही षोलो नृप कहे आलोची वोलो पंच कहे सुणोये माहा-राजा साचसे सुधरे सव काजा दो. काज सुधारे साचही लाजरष जीनराज मोती फीट हुइ लाल-ही देषे दूंनीयां राय साच हे मिश्री कोकुंजो ॥ सा० ७ ॥ महीपत साचकूं परष्यो पंचा पर-तन मन कर हरष्यो पंचांको वचन नही सरष्यो

कयोसो लालही निरष्यो दो. नीरष्यो साच प्रभावको दियो झुंटकु त्याग मुंनीरांम कहे धन साच है साच बोले वरु भाग झुट तज तिरयो चाहे तुं जो ॥ सा० ८ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ५७ ॥ ॥ पुर्वत राग ॥

नेमकी जांन वणी भारी देषणकूं आवे नरनारी नेमकी सुर्त हद प्यारी जांन ले आऐ सुरारी टेर. क्रोडां घोडा अरुहाथी मनुक्षकी गीणती नही आती हय गय पर धजा फर राती धमक सुंण धरती धर राती दोहा. समुद्र वीजे जीका लाडला नेम कूंवरजी नाम राजुलदेकूं आये परणवा उग्रसेण के धाम प्रस्न भये सबही नरनारी. ॥ ने० १ ॥ कसुंबल वागा अतीभारी कोर गोठ; न की छबी न्यारी माल मोतीयनकी गलधारी किलंगी सोवे सुपकारी दो. कांना कूंडल जोग-

मीगे सिससेवरो जांण कहां लग करुं आप मांतां की सोना इंद्र समान वाज रहे वाजा एक सारी ॥ ने० २ ॥ छुट रहे कोटी चरराई वांण मेता वढो लगाई जरोषे राजुल दे आई जांनकुं देषत सुषयाई दो. उग्रसेन जब देषके मनमे कीयो वीचार पशु जीव सब करथा एकठा वाना भररया अपार करी इन नोजनकी त्यारी ॥ने० ३॥ निकट जब तोरण पे आये पसु जीव सबही वील लाए नेमजी वचनज फूरमाए पसु तुम काएकूं लाए दो. इनको नोजन हो वसी जांन वास्ते सोय ईतनो वचन सुण्यो नेमजी थर हर कंप्यो सोय त्याग कर चाले गीरनारी. ॥ ने० ४ ॥ पिछेसे राजुल दे आई. हाथ जब पकड्यो हे माई कांहां जावत हे मेरी जाई ओर वर हेरुं मुक्ताई दो. मेरे तो वर एक हे होय गये नेमकूंमार विजो वर कबुं नही परणुं कोरू करो विचार दिष्या

जब राजुल दे धारी. ॥ ने० ५ सहेल्यां सबही समजावे दाय राजुल के नही आवे जगत सब जुठो दरसावे मेरे मन नेमकूं वर भावे दो. कंकण चूरुला उतारके तोड्या नवसर हार काजल टी-कीपां न सोपारी छोडया सब सिणगार सहेल्यां वीलष रही सारी ॥ ने० ६ ॥ तज्या हे सोलेही सीणगारा अभुक्षण रत्न जरुत सारा सर्व सुष लागा हे षारा ढांरु वन चाली नीरधारा दो. मात पीता परीवारकुं तजतां न लागी वार वेगी दोड मीले पीवसुं जाय चढी गिरनार जुरंती मेली म-हतारी ॥ ने० ७ ॥ नेम राजुल देषो जगमांई दिष्या जब ऐसी बोधपाई दया दील पसु वन-की आई तीयाग जब कीनो छीन मांई दो. नेम राजुल गीरनार पे धरीयो निरमल ध्यांन जीवण-रांम लावणी गाई उपनो केवलज्ञान मोक्षका हूवा ईधकारी ॥ ने० ८ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ५८ ॥ लावणी ॥

जीव राजतन करो जाई २ अष्टशिध नवनीध मीले दया राषो दीलमांई. ॥ टेर ॥ अण छांण्या पांणी भरलावे मनकी तंगाई उरे अनाज चकी अणसोयो होसे दूषदाई ॥ जी० १ ॥ अण जोयो मतमुं कोइ धन चुलाकेमांई सतगुरुकी तुम सीष सांजलो समजो दीलमांई ॥ जी० २ ॥ करे वहु दीवान करे जेणा जले जीव आई पिवतावो कर सेवे प्रांणी परजव के मांई ॥ जी० ३ जुंमाषी छलीकसारी आवे अनमांई वीण जोयां मत मुको चुले राषो चतुराई ॥ जी० ४ ॥ कपडा धोवे जीव जलावे सरवरपे जाई पर्ज़ेज पिछता वो सहे वहु पिका दो जव दुषदाई ॥ जी० ५ ॥ अण छांण्या जल पीवे मुर्ष मन कीधेटाई पडीयो पाटमे वहु-वीललावे भुगतेकमाई ॥ जी० ६ ॥ धांन चुनरा करे वहु आरंज जतन न करे कांइ तक्के लावे

जीव उडावे दीसे कसाई ॥ जी० ७ ॥ मछ कछ हीरणादीक मारे जीऱ्यांकेताई कर्म बांधकर जावे नारकी मारे जमराई ॥ जी० ८ ॥ छाछ आल घृतादीक ऐंठो अथवा मीठाई उघाडाराषे आल-ससुं पडे जीव आई ॥ जी० ९ ॥ रांधण पीसण जीमण षांडण जलस्थांन कउवांइ पांच जायगा राषो चंद्रवा जेणा बहू थाइ ॥ जी० १० ॥ कहे संतोक सुणो सजन तुंम ए अवसर पाइ जगत जीवराज तन करो तुंम सीवपुर सिधाइ ॥ जी०११॥ गगरांणासुं वीहार करी आया इंद्रावरमांइ जीव जेणा उपदेश लावणी मन रंगेराई ॥ जी० १२॥ इंती संपुर्ण ॥

—०—

॥ नं० ५९ ॥ हां सगीजीने पेखा भावे ए राग ॥

हां उमर अंजन ज्युं जावे नर जांण दीन जाय दीन जांणे नर जावेरे टर. पंच इंद्रीको

अंजन चारी दसुंद्वार गाडी छीब न्यारी पुन्य पाप गार्ड गाडीकुं देष चलावेरे ॥ उं० १ ॥ चले तार ज्यूं सासउसासा वीना तार चलणेमी नही आसा पबरदार जट होय मुसाफीरे गाडी आवेरे ॥ उं० २ ॥ दया धर्मका टीकट वणाया साच जुट दो वाबु आया साचकु नही हें आंच जुंट कुं परा फेंकावेरे ॥ उं० ३ ॥ मासदीनोंकीवणीहे चोकी एक वर्ष इसठे सन देषी विते वर्ष जव केइक टेसन जंकसेन आवेरे ॥ उं० ४ ॥ जंकसेन् पर तुरतही रोके दया धर्मका टीकटज देषे माया कूटंब परीवार उठे कोइ अर्थ न आवेरे ॥उं० ५॥ अंजन ओर अवसर हे चारी साच जूटकी करे निरधारी देष धर्मका टीकट मोक्षमे तुर्त पोंचावे रे ॥ उं० ६ ॥ चवसागरमे चुलो चटक्यो मोह कुटंवमे जत्रो अटक्यो जव रमल कहे देव जी- णंद गुंण क्युं नई गावेरे ॥ उं० ७ ॥ संपुर्ण ॥

॥ नं० ६० ॥ राग पुर्वत ॥

हांके मत कर गर्व दीवांना सुंण सत गुरुकी सीप सयांना धर रहे धनमाल होय तन राप मसांणारे ॥ म० टेर ॥ सनत कुंवरकी सुंदर काया अमररुप देषणने आया गर्व्व कीया जसीव गत वीलाया पिकदांनीमे थुकत कीम्रा देष तरू रांणां रे ॥ म० १ ॥ नगरी द्वारका देषण लायक छपन-क्रोरू जादवनो नायक कृस्न माहावलके सुरथा पायक भस्म हूवा क्षणमाय देषत सव कम ठांणा रे ॥ म० २ ॥ सोवन लंका समुद्र सीषाई हरी-सुत कुंभकरणसा भाई तीन षंडमे आंण फुवाइ चदी करी जव रांवण लषमण हाथ मरांणांरे॥म०३॥ विर व्रांम्मणी कुषमे आया हरचंद राजा वहु दूषयाया मुंज त्रुपती मांगने षाया अन्नीमांनीसे त्रुंम चक्री जलमे डवकांणांरे ॥ म० ४ ॥ कुरू कपट करके धन जोडे रात दीवस घरधंधे धोडे

मद ठकीयो त्रस्ना नही ठोडे मत कर ममता आप मरीयां सव माल वीरांणारे॥म०५॥मातपीता त्रीया सुत ज्ञाती सव स्वार्थ के मीले संगाती परभव जातां कोइ न साथी ताकरया सीर जीव चीडा परकाल सीचांणारे॥ म० ६॥ इथर जगत जीम वादल छाया इंद्रजाल सुपनेकी माये सांज देष गर्ब मत लाया दानसील तप लावकुं लेलो साथप जांनारे॥ म० ७॥ क्रोद्धमांनमद लोभ न राषे मर्म वचन किणकुं नही लाषे प्रेम सहीत अनुभव रस चाषे धन्यनरांते। कुस्नलालानीज तत्व पीछांनारे॥ म० ८॥ ईती संपुर्ण॥

॥ नं० ६१॥ लावणी॥

ललाइ करलेरे वंदा रइणमृत लोकरेमांय चतुर नर क्युं होरयो अंदा, टेर. यो जुगहे सुपनेकी माया तरूको होय जावे राजा रंक फकीर

पातस्या मारग षरू जावे ॥ज० १॥ तुठ जीनज्ञांनी सुंण अज्ञीमांनी सतगुरुकी ,वांणी पांणी उपर हुवो बूदवूदो पांणीको पांणी ॥ ज० २ ॥ तन धनजोवन रंग पतंग यो देषतहीवीललावे जीम वारूीमे फुल फुल्यो बीनमे,कुमलावे ॥ ज० ३ ॥ मातपीता सुत कूठंव कवीलो इणसुं मोहलावे काल आयने घांटी पकरूी वेठो ढलजावे ॥ज० ४॥ तिर्थ करचक्रीवल देवा मंरूलीकराया वसुदेव अवतार अवलीया सर्वकालषाया ॥ज० ५॥ रांवण तीनषंरूको भुक्ता रांम त्रीयालायो लीषमण हात मरांणां रीणमे कवीयण सुपगायो ॥ ज० ६ ॥ राजाकर्ण हूवो दांनेसर अजुकीर्त गावे. दिन उगंता नामज लेवे सब केम न जावे ॥ ज० ७ ॥ आठपोरकी साठघरूीमे सुक्रत करलेरे दोयघडी प्रभुजीरानांमरी हीयामे धरलेरे ॥ भ० ८ ॥ उगणीसे सोलाके वरसे जोधांणांमांइ कातीसुद सो-

नागपंचमी होमतरांम गाई ॥ न० ए ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ६२ ॥ ख्यालकी राग ॥

माहावीर जीनेसर, आपवीराजो मुगती मेलमे. ॥ टे० २ ॥ सीघारथ राजा के नंदन तीसलारांणी जाया कत्रीवंसमें उपनासरे कूंकलपुरमे आयाहो. ॥ मा० १ ॥ सातहातरीकायाथांरी कंचनवरणीसोहे सिंघजलंछणसोनतास कांइ सुर नरनामनमोहेजी ॥ मा० २ ॥ वारे गुंणाकर सोनतासरे दोष अठारे रहेत चोष्ट इंद्र आवो नमेसरे मिनषदेवतासेतहो ॥ मा० ३ ॥ चोतोसे अतीसे सोनतास कांई वांणी गुंणपेतीस एक सहेंश्र अष्ट लक्षण धणीसरे जांणे रागनेरी सहो ॥ मा० ४ ॥ वांणी जोजन गांम नीसरे जांणुं मीठीपोर वेस्क देनइ उपजेसरे सिंघव करी एकतीरहो ॥मा० ५॥

चवदे सहेंश्र साद्दु हूवासरे आरज्यां बतीसहजार लांषां श्रावग श्रावकासरे कर गया षेवो पार हो ॥ मा० ६ ॥ संकट काठो वीगन निवारो राषो हमारी लाज प्रभो सेवग वीनवे सरे पुरो हमारी आसहो ॥ मा० ७ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ६३ ॥

विना भेद बारे मत भटको वारे भटक्यां हे कांइ अमसठ तीरथ अठेवतादुं दर्शन करलो देहमांइ ॥ वि० १ ॥ भठ प्रभाते जोय पग तली रत्न पदारथ हे मांही पेट जठे पेपावतीनगरी जालम जाल रच्यो माही ॥ वि० २ ॥ जंग जठे जगदीश वीराजे सुंटी गणपत हे मांही छाती जठे श्रीरांम वीराजे उलष्पां वीनपावे नाही ॥वि० ३॥ अठोतर नाभी वहोतर कोठा चाल रया काया मांही पांचु आंगली पांचे पांडव राज

करे हथणापुरमांही ॥ वि० ५ ॥ कांन जठे कनकावतीनगरी गाज आवाज पडे मांही साधो ज्यांही मथुरानगरी गीरीमेर परपरवतवोही ॥ ॥ वि० ६ ॥ नेत्रज कहीये चंद्रमा सुर्य जल करया काया माही नांक जठे नारायण वोले ॐ०सों जप ले दोही ॥वो० ७॥ जोत्या कहीये जोती स्वरुपी रांम २ रटले तुही कहेत कवीर सुणोभाई साधो साच वोना सुधरे नाही ॥वि ८॥ ईती संपुर्ण ॥

—— ० ——

॥ नं० ६४ ॥

वडे घरताल लागीरे मांहे लारी भृमना भागीरे जीव डलारी जोत जागीरे प्रभुजीसुं प्रीत लागीरे ॥ टे० २ ॥ कांसी पीतलकोवीणज न मारे लोह लकड सोभार सोनारुपा कोवीणजनमारे हीरांकोवोपार ॥व० १॥ हालीं मोहाली सुनेहन

मारे नही हे प्रधांनसुं प्रीत जाय मिलुं मारा सांमीसुं मारी चोगणी राषे लारीत ॥ व० २ ॥ ढुलाढुली मांरे दायन आवे मिलीयो असल भर-तार निजषां वंदने चोरुने कूंण करे जारसुं प्यार ॥ व० ३ ॥ छीलर पांणीसुंनेहन मारे नाडामे कुंण न्हाय गंगा जमनां सनमुष होय नं जाय मीलुं दरीयाव ॥ व० ४ ॥ श्री जीनरुजीने उल ष्या मारे ओरन आवे दाय ईमृत बुंटी छोरुने मारे जेर जढी कुणषाय ॥ व० ५ ॥ वडां घरांरो आसरो मारो जनम मर्ण मीट जाय रुपचंद कहे नाथ नीरंजन शिव रमणी सुष थाय ॥ व० ६ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ६५ ॥ सीमंधर सांमीनो स्तवन ॥

त्रीभुवन साहीव अर्ज सुंणीजे दर्शन दीजे आज दर्शन दीजो मया करी जो अर्ज सुंणी जो

राज १ मारी वीनतडी अवधारो साहीव श्रीमं-
धर जीनराज ॥ टे० २॥ आप वसो माहा विदेह
क्षेत्रमे दुंइण जर्तमजार एमे लोकिम होवे साहीव
एहवो सवल वीचार ॥ मा० २ ॥ जर्त वीचाले
परवत आरुो नांमे ठे वेताड पंचवीस जोजन
रोठे उंचो पचास जोजन वीस्तार ॥ मा० ३ ॥
गंगा सिधु नंदीयां दोनुं आरुी ठे कीरतार सहेंश्र
अठाइ सदूजी नंदीया षे वेउंनो परीवार ॥मा० ४॥
इण आगल वली पर्वत आरुो चुल हें मइण नांम
एक सहेंश्रने वावन जोजन वारे कला अभीरांम
॥ मा० ५॥ क्षेत्र हेम वय आरुो छे प्रजु जुगल्यां
केरो वास इकवीससेनें पांच जोजनको पांच क-
लासु वीलास ॥ मा० ६ ॥ रोहतंसानेरोईसानांमे
नंदीयां ठे असराल ठपन सहेंश्रवले नंदीयां
आरुी आउं केम किरतार ॥ मा० ७ ॥ माहा
हेमवले पर्वत आडो मोटो अतीवीस्तार च्यार

सहेंश्र दोयसे दसजोजन दसकला अधीकार ॥ मा० ८ ॥ आठ सहेंश्र सत च्यारवली इकवीस जोजन तास एक कलावलेईण प्रमांणे षेत्र छे हरीवास ॥ मा० ९ ॥ हरीकंता हरीस लीला नांमे नंदीयां छे परतक्ष वीजी नंदीयां आडी छे प्रभु सहेंश्र बार एक लक्ष ॥मा० १०॥ पर्वतनी षट छे वली आक्षो जोजन बहु विस्तार सोले सहेंश्र सत आठ बयालीस दोयकलाउरधार ॥ मा० ११॥ षेत्र छे वली जुगल्यां केरो देवकुरुईणनांम ते वीलवीस जोजन बहु विस्तारे पहुंलो छे सुंण सोम ॥मा० १२॥ सिता नांमे नंदी बकेरी सब नंदीयांमे सीरदार पांचलाष वले विजी नंदीयां अने बतीसहजार ॥ ॥ मा० १३ ॥ कंचनगोरी वषारा परवत केम उलंग्या जाय चद्र साल ... वीचमे ... केम उपाय ॥ मा० ...

पर्वत् नांमे सु...

केम आवु किरतार ॥ मा० १५ ॥ वनगीरी पर्वत वहुला वीचमे नंदीयां उंघट घाट किस वीध आवु सुगणा साहव मार्ग वीषमी वाट ॥मा०१६॥ नीस दीन मारे हुं अलवेसर वसीयो हीरदेस जार नवरूप नंजन तुंही निरंजन करुणा रस भंडार ॥ मा० १७ ॥ क्यां मुज दरुण जर्त कीयां वली पुषलावती जीनराज उंमे लोकीम होवे साहीव एनी सवल वीचार ॥ मा० १८ ॥ दूर थकी अवधारो साहीव आ मारी अरदास मन वंछीत सुष संपत दाता पुरो मनकी आस ॥ ॥ मा० १९ ॥ षरतर हर्ष गुरु सुपसाय सरूपचंद गुणगाय अगरचंद कहे सेवकने तारो गरीव नो- वाज ॥ मा० २० ॥ संवत अठारे वर्सइ क्या स्पे पोस वद सुद मास वीज नई बूधवार अनोपम जीन पद वचन विस्वास ॥मा० २१॥ ईती संपूर्णम्॥

॥ नं० ६६ ॥ श्रावकना २१ गुणकी ढाल ॥

कईये मीलसेरे श्रावग एहवा सुंणसे आवी वषांणोजी धर्मगोष्ट चरचा करसा अमे वितराग वचन प्रमांणोजी ॥ क० १ ॥ धूरथी सुधो समकीत जे धरे मांने नही मिथ्यातोजी साह्मीसुं धरणे वेसे नही नही राग धेपनी वातोजी ॥ ॥ क० २ ॥ वारे व्रत रापे रुडी परे ज्यां जीवे त्यां सीमोजी सुधे मन कीरीयानीपप करे साचवे चव देनेमोजी ॥ क० ३ ॥ काल वेला पन्नी कमणो करे सुत्र अर्थ ने सुधोजी सुज तो आहार अने वांदे वली द्रव्ये रुधी समृद्धोजी ॥ क० ४ ॥ व्यवहार सुद्ध घणुं पाले सदा[1] प्रथम वन्नो गुंण एहोजी रोग रहीत[2] पंचेंद्री[3] परगडा सोम प्रकृती[4] सुसने होजी ॥ क० ५ ॥ लोक प्रीय उतम आचारणी[5] वचनां रहीत अंकुरोजी पाप करमथी[6] ड़रता जे रहे कपट थकी[7] रहे दूरोजी ॥क० ६॥

तोटो आप षमीने पारको कांम समारे[८] जे होजी चोरी परदारादिक पापथी[९] करतां लाजे ते होजी ॥ क० ७ ॥ जीव दया[१०] पाले जतने करी रहे मध्यस्थ सुदृष्ठोजी[११] सांम द्रष्टी[१२] गुंण रागी[१३] सत थकी मातपोता सुत[१४] पक्षोजी ॥ क० ८ ॥ दीरगद्रष्टी[१५] जांण वीसेषता[१६] उतम संगत[१७] एकोजी विनय[१८] करे उपगार कीयो[१९] गोणे हीत वचनं[२०] सुवीवेकोजी ॥ क० ए ॥ लघ्चलक्ष[२१] अंगत आकारना जांण प्रवीण अपारोजी इकवीस गुंण श्रावगना कह्या सूत्र सिद्ध तम जारोजी ॥ क० १० ॥ निंदक निश्चे जावे नारकी लोक कहे चंडालोजी श्रावक न करे निंद्या पारकी दीये नही कुडो आलोजी ॥ क० ११ ॥ सादू तणा ठल छेद्र जोवे नही चापे जगवंत आपोजी अमापी यासरीषा श्रावग कह्या ठांणा यंग सूत्रनी सापोजी ॥ क० १२ ॥ विना वेरांया आप जीमे नही

दाषी जे दांन सुरोजो आहार पांणी वेरावे सांधा ने वस्त्र पात्र नरपुरोजी ॥ क० १३ ॥ एक टंक जीमे एकासणे सचीत तणो परीहारोजी चारीत्र लेवा उपर मन करे पाले शिल उदारोजी ॥क० १४॥ न्यायवीत थकी जे उपजे श्रावग दे आहारोजी तो अमने पीण सुध संजमपले आहार तीउड-कारोजी ॥ क० १५ ॥ उत्म नाव गनी संगत थकी साधने पीण गुंण थायोजी कुल अमुलीक संग थकी तेल सुगंध कहायोजी ॥ क० १६ ॥ ए नही साध सीथल दीसे घणुं मुंरू मिथ्या पार्ष-रूोजी एहवी संका मन आंणे नही साध छे वीजे षंमोजी ॥ क० १७ ॥ तरतम जोगे साध इहां छे दुप सयजीम हंसोजीः माहावीरनो सासण वरतस्ये एहवी वात कहंतोजी ॥ क० १८ ॥ तुं-गीयानगरी श्रावग सारीषा आंणंदने कांम देवो-जी शंष शतक सुदर्श सारीषा करनी करे नित

मेवोजी ॥ क० १९ ॥ दूक्षम काले संजम दोहीलो दोहीलो श्रावग धर्मोजी गुंणलीजे अवगुंण ढांकीजे निज धर्मनो ए मर्मोजी ॥ क० २० ॥ तप जप कीरीया नीजे घप करे कुण श्रावकने साधोजी समय सुंदर कहे आराधीक तीके सफल जन्म तीण लाधोजी ॥ क० २१ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ सं० ६७ ॥

देव दांणव तिरथंकर गणधर हरीअर नर वल सवला कर्म वसे सहू सुष दूप पांम्या सवला थया माहा नीवलारे प्रांणी १ कर्म समो नही कोई कीधा कर्म वीन भोगव्यां छुटक वार न होश्ये प्रांणी ॥ क० २ ॥ आ देशरजीने कर्म अगाथा वर्ष दीवस रहे भुषे वीतक वहू लावी रमे वीता भपना ब्रांमणीरीकुषेरे ॥प्रा० क० ३ ॥ साठ सहेश्र सुत मुवा एकण दीने जोध जुवांन

दाषी जे दांन सुरोजो आहार पांणी वेरावे सांधा
ने वस्त्र पात्र जरपुरोजी ॥ क० १३ ॥ एक टंक
जीमे एकासणे सचीत तणो परीहारोजी चारीत्र
लेवा उपर मन करे पाले शिल उदारोजी ॥क० १४॥
न्यायवीत थकी जे उपजे श्रावग दे आहारोजी
तो अमने पीण सुध संजमपले आहार तीउड-
कारोजी ॥ क० १५ ॥ उत्तम जाव गनी संगत थकी
साधने पीण गुंण थायोजी कुल अमुलीक संग
थकी तेल सुगंध कहायोजी ॥ क० १६ ॥
ए नही साध सीथल दीसे घणुं मुंरू मिथ्या पाषं-
रूोजी एहवी संका मन आंणे नही साध छे वीजे
घंरूोजी ॥ क० १७ ॥ तरतम जोगे साध इहां
अछे दुप सयजीम हंसोजीः माहावीरनो सासण
वरतस्ये एहवी वात कहंतोजी ॥ क० १८ ॥ तुं-
गीयानगरी श्रावग सारीषा आंणंदने कांम देवो-
जीं शंष शतक सुदर्श सारीषा करनी करे नित

रे प्रां. क० ॥५॥ संभुत नांमे आठम, चक्री कर्मे सायरमे नांष्यो पंच सहेश्र जक्ष तजे दीठो पीण मरतां कीण होन राष्यो रे प्रां. क० ॥६॥ बृमदत्त नांमें बारमो चक्री कर्मे कोधो आंधो ईम जांणीने प्रांणी वे कांमे कर्म कोई मत बांधो रे प्रां क० ॥७॥ लक्ष्मण रांम माहाबलवंता वले शतवंती शिता वारे वर्स वनमांहे भमीयां वित-क बहू लावी तारे प्रा. क० ॥ ८ ॥ लाषीणो लंकानगर लुंटांणोः लक्षमण रांवण मार्यो एक लक्ष तीण सब जुद्ध जीतो कर्मा सुते पीण हा-र्यो रे प्रां. क० ॥ ९ ॥ छपनकोड जादवांरो सा-हीब कृष्ण माहाबल जांणो अटवी मांहे मुवा एकलडा वीलरता नीज प्रांणोरे प्रां. क० ॥ १० ॥ पंडव पांचे माहा जुजारा हारी द्रोपदा नारी बारे वरस वनमे रडवडीया भमीया जेम भि-ष्यारी रे प्रा. क० ॥ ११ ॥ सतीय सीरोमणी

नर जेसा सागरहुर्त नीज पुत्रांथी डुपीयो कर्म तणा फल एसारे ॥ प्रा० क० ४ ॥ बत्रीस सहेंश्र देशंनो नायक चक्री शंत कुमारो सोले रोग सरीरमे ऊपना कर्म कीयो षवारोरे ॥ प्रा० क० ५ ॥ संभुत नांमे आठम चक्री कर्में सायरमे नांष्यो पंच सहेंश्र जक्ष उभे दीठो पीण मरतां कीण हीन राष्योरे ॥ प्रा० क० ६ ॥ ब्रमदत नांमे बारमो चक्री कर्में कीधो आंधो ईम जांणी ने प्रांणीवें कांमे कर्म कोई मत वांधोरे ॥ प्रा० क० ७ ॥ लक्षमणरांम माहाबलवंता बले शतवंती शिता बारे वर्स वनमांहे भमीयां वितक बहू लावी तारे ॥ प्रां० क० ८ ॥ लाषीणो लंकानगर लुंटांणोः लक्षमण रांवण मारयो एक लके तीण सब जुद्ध जीतो कर्मां सुंते पीण हारयोरे ॥ प्रां० क० ९ ॥ छपन कोड जादवांरो साहीब क्रुश्न माहाबल जांणी अटवी मांहे मुवा एकलक्रा वीलता नीज पांणीरे

रे प्रां. क० ॥५॥ संभुत नांमे आठम चक्री कर्मे सायरमे नांष्यो पंच सहेंश्र जक्ष जे दीठो पीण मरतां कीण होन राष्यो रे प्रां. क० ॥६॥ बृमदत नांमें बारमो चक्री कर्मे कोधो आंधो ईम जांणीने प्रांणी वे कांमे कर्म कोई मत बांधो रे प्रां क० ॥७॥ लक्ष्मण रांम माहाबलवंता वले शतवंती शिता बारे वर्स वनमांहे भमीयां वित-क बहू लाधी तारे प्रा क० ॥ ८ ॥ लाषीणो लंकानगर लुंटांणोः लक्षमण रांवण मारयो एक लक्ष्ये तीण सब जुध जीतो कर्मो सुंते पीण हा-रयो रे प्रां. क० ॥ ए ॥ बपनकोड जादवांरो सा-हीब कृस्न माहाबल जांणो अटवी मांहे मुवा एकलडा वीलरता नीज प्रांणोरे प्रां. क० ॥ १० ॥ पंडव पांचे माहा जुजारा हारी द्रोपदा नारी बारे वरस वनमे रडवडीया जमीया जेम भि-ष्यारी रे प्रा. क० ॥ ११ ॥ सतीय सीरोमणी

द्रोपदा कहीये ते सम अवर न कोई पांच पुरष-
नी नारी कहांणी कर्म करे तेम होइ रे प्रां. क०
॥१२॥ कर्म हवाल कीया हरचंदने वेचीसु तारा
रांणी बारे वर्ष लगे माथे आंण्यो निच तणे घर
पांणी रे प्रा. क० ॥ १३ ॥ समगीत धारी राजा
श्रेणक वेटे बांध्यो मसका धर्मि पुरस ने कर्म
धकावे कर्मासुं जोर न कीसका रे प्रा. क० ॥१४॥
दधी वाहन राजारी वेटी चावी चंनणवाला चौ-
पद जेम चोहटामे वेचांणी कर्म तणा ए चाला
रे प्रा. क० ॥ १५ ॥ ईश्वर देव पार्वत्ती रांणी
कर्ता पुर्ष कहाया अहो निश महेल मसांणमे
फेरा भिष्या भोजन पाया रे प्रा० क० ॥ १६ ॥
सहेंश्र कोरण सुर्ज प्रतापी दीन २ जावे घटतो
सोले कलाश शियरचावो दीन २ जावे घटतो रे
प्रां. क० ॥ १७ ॥ आठ कर्म अरीयण इध काई
सांजल जो सहू नाईः कर्म सोफने धर्म आदर-

जो ज्यूं शिवपुर सुष थाइ रे प्राणीः क०.॥१८॥
॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ॥ ६८ ॥ ॥ दोहा ॥

गुण गांउं गोतम तणा लवद तणा नंर चक्रा शिक्ष जगवंतना ज्यांने जांणे जगत संसार ॥ १ ॥ प्रती वोध्या प्रभु कने गणधर गोतम सांम संजम पाली सीध हूवा ज्यां राली जे नीत प्रते नांम ॥ २ ॥ टाल. चर्म जीने सर वीनूवूं ए राग ॥ तिर्थनाथ त्रीभुवन धणी प्रभु सासनका सीरदार जजन कीयां जगवंतको प्रभु मन वंछीत दातारजी सिमरथा पीण सुष श्रीकारजी सदा वर्ते जय २ कारजी निर्थ थाप्या प्रभु च्यारजी च्यारुं सिंध मांहे सीरदारजी गोतम नांमे गणधारजी ज्यांने होई जो मारो नमस्कारजी दिन २ प्रते सो सो वारजी ॥ १ ॥ श्री गोतम-

स्वामी मे गुंण घणाः टेरः सोल मासोना सारषा-
जी सुंदर रुप सरीर कंचन कसोटी चढ्योजी
सो जगोतीमे जाण्यो माहावीरजी दिठां हरषे
हीवको हीरजी वले षम सम दमने धीरजी सांमी
सायर जेम गंभीरजी ज्यांरी वांणी मीठी षीरजी
मीठो षीर समुद्रनो नीरजी षटकाय जीवांरा-
पीरजी विर रे हूवा तन वजीरजी श्री० ॥ २ ॥
गोराने घणा फूटराजी कंचन कोमल गात देही
ज्यांरी दीप २ करे देवता पीण कीतरीक वातजी
रोग रहीत काया सांत हाथजी घणा रह्या गुंरां
रे साथजी सेवा कोधी दीन ने रातजी पुढाकी-
नी जोकी २ हातजी कही जावे कठा लग वात-
जी ज्यांरे वीर माथे दीया हाथजी जव जीवांरा
कूरणानाथजी श्री० ॥ ३ ॥ प्रथम संघेण संठांण
ठे सांमी घोर गुंणे जरपूर घोर बृमचरमे जरया
वले तपसी घोर करुरजी कायर पूरष कंपी जाय

दूरजी दीपता तपस्या कर्म चूरजी वीर रे हूंकमी हजुरजी ज्याने वंनणा उगंते सुरजी श्री० ॥ ४ ॥ अबी ओकीदा आकरोजी वीस्तार जगो तीमाय च्यार ग्यांन चवदे पूर्व नले ते जुले स्यांयीकरे मांयजी दपटराषी षीन्या मन लायजी दीयो ध्यांनसुं चीत लगायजी उकडु वेटा सीस नमायजी वीर सु नेरा अलगा नही थायजी ज्यांरे करणी मे कूंमीयन कायजी श्री० ॥ ५ ॥ पूष्या ज्यां कीदी घणीजी आंणी मन आणंद सरदामें सांसो उपनोजी उपनो कीतोहल उछरंगजी वांध्या श्रीवीर जीणंदजी अनंत ज्ञांनी त्रीशला देरानंदजी पुछया देश प्रदेशां रापंधजी मेल दीया सुत्र संधो संघजी ज्यांने सेवे सुरनर वृंदजी जीम तारांमेचंदजी श्री० ॥ ६ ॥ सुत्र जगोतीमे पूछीयाजी प्रश्न अनेक प्रकार वलेई अंग उपंगमेजी पूछा कीधी पेले पारजी तीर्थनाथ कारी

दीयो तारजी गोतम लीयो हीरदे धारजी ज्यांरी बुधीरो नही पारजी हेत जुगत अनेक प्रकारजी भव जीवांरा तारणहारजी घणां जीवांसुं कीयो उपगारजी ज्या पूरसांरी बलीहारजी श्री० ॥७॥ ईंद्र भुती ईंम चिंतवे मोनेकीयु नही उपनो ज्ञांन- षेद पांम्या प्रभु देषने बोलाव्या श्री वृद्धमांनजी घणो देई आदर सनमांनजी गोतम उभा सन- मुष आंणजी चीत नीरमल ज्यांरो ध्यानजी मन वंछत देवे दांनजी गोतम गुंण रतनांरीषांनजी श्री० ॥ ८ ॥ थारे ने मारे गोयमा घणा जुंना कालरी प्रीत आगेंही आंपे भेलारया रही लोर वडाईरी रीतजी मोह कर्मने लो तुंमे जीतजी केवल आडी आही जभी तजी थे शिष वडा सुव नीतजी रुडी छे थांरी रीतजी पुरी ज्यांरी परतीतजी श्री० ॥ ९ ॥ अब केइण भव अंतरे आंपे दोनु बरावर होय विर वचन सुण्यां थकां

तव हर्ष तही वके होयजी गरु मोटा मीलीया मोयजी मारे कूमीयन राषी कोयजी रह्या वीरि सनमुष जोयजी श्री० ॥ १० ॥ सनमुष वीर व-षांणीयांजी गोतमने तीणवार थांसरीषो वीजो कोय नही पाषंरुयां रोजो तणहारजी चर्चा वादो मे तुर्त तयारजी चवदे सहेंश्र सादां मे सीरदार-जी वीजा साध सहू थांरेलारजी हूवाहो वके हर्ष अपारजी श्रो० ॥ ११ ॥ काती वद अमावस्यां-जी मुक्त गया वृधमांन इंद्र जुतीने ऊपनो तव नीरमल केवल ज्ञांनजी धर्म दीपायो नगरपुर गांमजी पछे सारीया आत्मकांमजी रुपरायचंद करे गुण ग्रांमजी धनरश्री गोतम सांमजी श्री० ॥ १२ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ॥ ६ए ॥ ॥ दोहा ॥

दया वरोवर धर्म नही पिम्यां सुंसुष अनंत

संतोष बरावर सुष नहो इम जाण्यो जगवंत ॥१॥ निरफल होवे असत्री निरफल रुंषज होय दया तणा फल जांणजो ए निरफल नहीं होय ॥२॥ सरणे आयो पारेवको मेघ रथ दीयो आधार तिणरो फल कोम पांमसी ते सुंणजो ईधकार ॥३॥ (ढाल) परव दिवस पोसा मधे राजा जपे नवकारोजी द्रढ धार्मि द्रढ आत्माः हीरदे दया अपारोजी ॥ १ ॥ थे सुणजोजी भवियण लोकः दया तणो विस्तारोजीः टेरः देवलोक पहीले तणे इंद्र अवधी वीचारयोजी मेघरथ राजा देषने हरष्या अतही अपारोजी थे० ॥ २ ॥ सकेंद्र गुंण वर्णवे धनासे घरथ रायोजी जय पामंते जीवको नहीं मुके सरणे आयोजी थे० ॥३॥ वचन सुणी इंद्र तणा हर्षादेव अपारोजी दोय मीथ्याती देवता मांने नही लीगारोजी थे० ॥ ४ ॥ राजाने छलवा जणी कीधो एक उपायोजी सोचांणो पा-

रेवक्तो देवां रुप वणायोजी थे० ॥ ५ ॥ शरणे जणी पारे वक्तो आयो राजाजीरे पासोजी सरणे रापो धर्मना धणी एम करे अरदासोजी ॥थे०६॥ अती धुजे अती कंपतो राजा पोले लीधोजी भय मत कररे पारेवक्ता राजा धीरप दीधोजी ॥थे०७॥ पुठे लागो ओलंजीयो आयो सजा मजारोजी पाछो पंपी मागीयो आयो आहार हमारोजी ॥ ॥ थे० ८ ॥ फिटरे ओलंजीया थूं बोल्यो वीना विचारोजी शरणे आयां कीम आपसां मारो क्षत्रीकुल आचारोजी ॥ थे० ९ ॥ मांगो मेवा सुंषडी दाडम दाप बीजोराजी मांगो आंवा आंवली पारकषांड वोजुरोजी ॥ थे० १० ॥ न लेवां मेवा ने सुंषडी दाडम दाप बीजोराजी न लेवां आंवा आंवली षारकषांड पीजुरोजी ॥ थे० ११॥ केलें सुं पारेवक्तो के तजसुं प्रांण हमारोजी के तुमे काया पंडने आपो मांस तुंमारोजी ॥ थे० १२ ॥

वात सुणी मेघराजवी हरख्यो अती अपारोजी नलेश ओलंनीया थे कीधो जलो वीचारोजी ॥ थे० १३ ॥ ईम राजाजी बोलायने शस्त्र ओर मंगायाजी तुरत तराजु मांडने षंडण लागो कायाजी ॥थे०१४ ॥ इम वात सुणी राजा तणी रावले गई पुकारोजी अंतेवर वीलषो थयो राय तणो परीवारोजी ॥ थे० १५ ॥ हाट वाट सुना थया सुना पनघट घाटोजी हाहाकार हूवो घणो राजाजी सुण वातोजी ॥ थे० १६ ॥ राय दीवांण मील करी आया राजा पासोजी राय रांणा पगे लागने एम करे अरदासोजी ॥ थे० १७ ॥ हात जोड वीनती करे मांनो वचन हमारोजी पारेवो पाछो मुकदो मे वीनवां वारंवारोजी ॥ थे० १८ ॥ वचन दीयो चुकूं नही थे जावेजव मत जांणोजी वरज्यो राय मांने नही बोले इसकी वांणीजी ॥ थे० १९ ॥ कदे कतो प्रथ्वीं चले चले सुर जगं-

तोजी सापुरस बोल्या नही फीरे इम बोले मेग-
रत रायजी ॥ थे० २० ॥ तुरत तराजु मांडने पंषी
मेल्यो लारोजी नमे न डांकी तोलतां तव मेल्यो
सकल सरीरोजी ॥ थे० २१ ॥ एहवी रचना देषने
देवां अवधी वीचारयोजी मेघरथ राजा रायने
देष्यो अजय अपारोजी ॥ थे० २२ ॥ देवरुप प्र-
गट कीयो लागो राजा पायोजी धन्य२ मोटा रा-
जवी थांरा शक्रेंद्र गुंण गायोजी ॥ थे० २३ ॥ ते
गुण जोवा कारणे आया सभा मजारोजी सरगा-
पुररा देवता षमो अपराद हमारोजी ॥ थे०२४॥
शरणे ज्ञणी पारेवडो राजा हठ कर राष्योजी
तिर्थंकर गोत्र उर्पज्यों पोते अती गुंण वांध्योजी
॥ थे० २५ ॥ पांचवर्ण फुलां तणा फुलफग रव-
रासायाजी राजाका गुण वरणवी अपने ठांम सि-
ध्धायाजी ॥ थे० २६ ॥ पोते अती गुण बांधने
अनुक्रमे किधो कालोजी स्वार्थसद्धिमे उपना पां-

म्या भोग रसालोजी ॥ थे० २७ ॥ स्वार्थसीद्ध-
थी चव करी गजपुरी लीनो अवतारोजी तिर्थ·
कर चक्री राजा तणी पांम्या पदवी सारोजी ॥
थे० २९ ॥ शंतनाथजी सोलमा जगमे मोटो
नांमोजी जीनमार्ग प्रवृतायने पहोता अवीचल
ठांमोजी ॥ थे०२९ ॥सुष पांम्यो ते सासता केतां
न आवे पारोजी भणे सेवग इण जग्तमें संत सुषी
अणगारोजी ॥ थे० ३० ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं. ७० ॥ चोपाईनी राग ॥

आदी जीनेसर पाय प्रणमेव सरसती सां-
मनी मन धरेव जीवदया पाली नरनार जेहथी
तीरो निश्चे संसार १ पांणी गलतां जेणां करो
षारो मीठो जूदा धरो जेने मन दया प्रधांन ते
घर दीसे बहोत संतान २ मारे जुंने फोडे लींष
नरनारीने एहीज सीष तेहने घरे नहीं संतान

दूष देषे ते मेरु समांन ॥ ३ ॥ पंषी उंदर मांण-
सना वाल जे. पापी मारे चीरकाल जेहने परभव
एहीज दूषः ढोरु तणो नही होवे सुष ॥ ४ ॥
मांषण मध वली अथांण आदो सुरण वरजे जांण
गाजर मुला रतालु जेह सुष सहावग ते छंडे एह
॥ ५ ॥ फोगट फुले माया करे कहो केम भवसा-
गरथी तीरे जेहने देव गुरांसुं द्वेष सुष न पामे
तेह लवलेस ॥ ६ ॥ वहू दीहाडानो मेल करी
मांपण तावे अगनी धरी जेह मरीने नर्कें जाय
मांनव होवेतो दागज्वर थाय ॥ ७ ॥ दूध तणे
वले लोभे जेह पाडा भुषां मारे तेह फरता ढोरमा
जे जाय वली भुषे तरसे मरे टलवली ॥ ८ ॥
आंष फूटी दीय जे गालः परभव आंधो थाय
बालः मरो फीटो दीय जे गाल परभव सुष न
मांने बाल ॥ ए ॥ पाट पाटला ने वस्त्रदांन स-
वीशे क्युं वली रांध्यो धांन मुनीवरने दे मन उ-

लास तस घर लक्षमी रहे थीरवास ॥ १० ॥ देवे
दांन वमासण करे देई दांन मन चिंता धरे सुष
संपत पांमे अजीरांम तेहनें न होय वसवांने ठांम
॥ ११ ॥ धन थोमो ने देवे दांन महीयल तेहनी
वाधे वांन रिषीने देई करे रंगरोल तस घर लक्ष-
मी करे कीलोल ॥ १२ ॥ सुष संपती जो आवे
मीली डोसानी देवा मती टली धन उपर जे रापे
नेह परजव साप थाय जेह ॥ १३ ॥ अधीको
उछो वांधे तोल देवाचा नही पाले बोल जेहनी
लोकमां न होवे लाज परजव तेहनो न सारे काज
॥ १४ ॥ पोथी बाले वोले जेह परजव मुर्ष थाए
तेह जणे गुणे दे पोती दांन परजव नर ते वीध्यां-
वांन ॥ १५ ॥ न्हांना मोटांकुं वली हरी पांते
छूटे लीला करी किधा कर्म नवी ठेलाय मरने
नर ते कोडी थाय ॥ १६ ॥ पांष पंषीनी काढे
जेह परजव टुंटो थाय तेह पग कापने करे गल-

गलो मरीने नर ते थाय पांगलो ॥ १७ ॥ पाडोसी
सुं वधे दीनरात परजव ते न पांमे संघात मात
पीता सुत वैर घणी परजव तेहने वाढी वढ घणी
॥ १८ ॥ अण दीठो अण सांजल्यो कहे जेह
परजव वेरो थाए तह पारकी निंद्या करे नरनार
जस नवी पांमे तेह लीगार ॥ १९ ॥ परना अव-
गुंण ढांके जेह नरनारी जस पांमे तेह निंद्या करे
ने देवे गाल परजव नर ते पांमे आल ॥ २० ॥
रात्री जोजन करे नरनार ते पांमे घुयड अवतार
राते पषी न षाय धांन मांणस हीये न दीसे ज्ञांन
॥ २१ ॥ सुर्य सरीषे आघमे देव मांनवने पाना-
नी टेव धर्मी लोक होय जेह रात्री जोजन टाले
तेह ॥ २२ ॥ गोरस प्रठाने अनुसार एह सज्झाय
करी श्रीकार पंडीत हर्षसागर शिक्षसार सविसा-
गर कहे धर्म वीचारः ॥ २३ ॥ ईती संपुर्णः ॥

॥ नं. ॥ ७१ ॥

षीम्या धर्म पेलो परो जापीयो ए जग दीसोरे जो
सुष चावो जीवनो तो मत कोई राषो रीसोरे १
षीम्या कीयां सुष उपजेः ॥ टे. १ ॥ कलह कदे
आगो नही लडतां लक्ष्मी नासेरे दूष दालीद्र घरमे
धसे गुण कांइ न प्रकासेरे ॥पी०२॥ गाल्यां वांटी
जे राडमे लाडु नही वंटीजेरेः वाल्हा पीण वेरी
हूवे तो ईसाकां मन कीजेरे ॥ षी० ३ ॥ क्रोधी
नरका लोहूवे कांम कोई न सुधारेरे आगो पाछो
जोवे नही लाषीणी प्रीत वीगाडेरे ॥ षी० ४ ॥
वीस, सुत्र दव देवणं ए करे वचन राबा धारे द-
वरा दाधा पालवें न पाल्हे वेजी जां रादा धारः
॥ षी० ५ ॥ क्रोधे दाहे दाधा नही जीके सदा
रहे रुहमाहोरे सदा षुसाली जेहने जीके षीम्या
करे चीत लायोरे ॥ षी० ६ ॥ वाप बेटो सासु
वहुं गुरु चेला गुरुभाईरे क्रोधे वलीया उठले न

रहे रुद्ररुाहोरे सदाखुसाली जेहनेः जीकेषीम्या करे चीतलायोरेः ॥ षी० ६ ॥ बाप वेटो सासु वहू गुरु चेला गुरुभाईरे क्रोधे वलीया ज्वले नगीणे नेमी सगाईरेः ॥ षी० ७ ॥ क्रोध रुका वेरावले घरजावेईण काजोरेः मतकरोपेदाईसका जेठा जीतवश्राजोरेः ॥ षी० ८ ॥ क्रोधीमर कूत्ता हूवे वो सांमेधुम मचावेरे जो कोई देखे ओपरो तो तोमः२ने पावेरेः ॥ पी० ए ॥ पिरुत ते क्रोधे चढे तेतो वाल अज्ञांनीरे निच चंरुालरीओपमा दीधी केवल ज्ञानीरेः ॥ षी० १० ॥ घरमे एक क्रोधी हूवे सगलांने तलतलावेरेः जीणरे क्रोध हूवे घणो जीणरो जन्म सुधे कीम जावेरेः॥षी० ११ ॥ षीम्या अरीहत करे घणीः ज्यारे अंगरा लक्षण रुमाजीः धन२माजायो मीकरोः अरीहंत षीम्या सुराजीः ॥षी० १२॥ गजसु षमाल मुनी सरुः सोमल सीसऊजाख्योजीः मनकर द्धेष न

आणीयोः आत्मकूल उजवाल्योजीः ॥षी०१३॥ वले पंथक षीम्या आदरीः षमावतां वोल्यो नरू: कीरेः धन जिरवणा तेहनीः पाठो न वोल्यो तरू- कीरेः ॥ षी० १४॥ कोई अणुतो आलदेः सुणतां लागे पारोरेः तो पण क्रोध आवे नही नरगां राङुपचीतारोरेः ॥ पी० १५ ॥ क्रोध करे गाल्यां सुणीः होवे पीलो ने कालोरेः आपदेवे ऊंचोवकेः तो सीरषादोनुई वालोरेः ॥ पी० १६॥ आपरो क्रोध देषे नहीः पर अवगुण काढेअपुठोजीःसिष देता सामा कहेः क्रोधव्यांसु ईन बुटोजीः॥पी० १७ ॥ ईती संपूर्णम्ः

॥ न० ॥ ७२ ॥ ॥ अथवाजिंद ॥

तातातुरीपिलांण चोवटे कूदणा टेकी प्राग ऋुकायः ठायाकुं निरषणाः रूपरंग अरूरागः पवन ज्यूं वहे गयाः परीहांवाजीदः केतीकहूंवणायः

कवारा रहे गया. ॥ १ ॥ अजव ढाल हे एक रामका नांमकी, जो कोइ जाणे ढाव जासंका कांमकीः सिवसनकादिकसे सलग्या रहे वोटरे; परीहांवाजीदः जमढालांदे जाई लगे नही वोटरे. ॥२॥ अटकनदी असरालः अजव आकरीः धुर कावलकीमोम धणीकी चाकरी, च्यारवहेचोधार जाल्यासुधकाः परीहांवाजींदः जे नर उतरे पार होई हरीका थका. ॥३॥ जनमजातहेवादः यादकर पीरकूं, मुसकलसुं आसा न होय जीवकूं; ज्यांकेही रदे रांम; रयणी दीन रहेत हे परीहांवाजिदके, नही मुक्तमे फेर, सत सव कहेत हे ॥ ४ ॥ जुंमीन्नलीका, न्यायके सांइ मांगसीः पगमे रसमीकार, उर धसुष टांकसीः मुषमे देसी मार नेणन्नर लुणसुं, परीहांवाजीद, दीनाच्यारी मीजमांन त्रिगाके कूणसुं. ॥ ५ ॥ धन जोवनका गर्व न कर्णा वीररे, ठायर लुठा

मेह कहां गया नीररे; रोईफारा फुलके वनमे फुलीया, परीहांवाजींदः फुठी माया लाग ञजनकूं जूलीया. ॥ ६ ॥ घरी वे घरीयाल पुकास्वां कहेत हे आवगई वीत अलपसी- रहेत हे. सोवे कहां अचेत जागजपीवरे; परीहांवार्जीद, चलणा आज के काल वटाउजीवरे. ॥७॥ ञजले तोता रांसके वेठो ताकमे, दीन च्यारका रंग मिलेगा षाषमे सांइवे गीसमालीजमांसुराफी हे, परीहांवार्जीदः जमके हाथ गीलोल पटकापाफी हे. ॥ ८ ॥ पातसाहकी सेज पथरणा पाटका; हीरा जड्या जफावके पाया पाटकाः हुरमांपफी हजुर करत हें वदगीः परीहांवार्जीदः वीना ञज्यां ञगवान परेगा गंदगी. ॥९॥ रके
पफी रही मातरा,सुते
ले चाले एकंत पात जं
देखत हे

वार २ ससजाई आग्यां नीचेतरे, कांकम उन्नी फोज बूहारे पेतरेः वहेसी गोला नाल हवायां छुटसी, परहावांजींदः कंचनवर्णि काया काच ज्यू फुटसी.॥११॥दासी उन्नी बारके मोकी रावली, पहेरवा दीपणी चीरकेफीरे उतावली; गहीली कीयो गुमानके गंधी देहको, परिहावाजिंदः निरनिवांणा जायके पाणी मेहको. ॥ ॥१२॥ फरहरे ते निसांणा नगारा वाजतो, फिरे चिहूं बजार चले नर गाजतो; हाथांदीना दांन कयामुपरांमरे; परीहांवाजीदः ए सुपनीजरांदेष भजनका कांमरे. ॥ १३ ॥ मनकूंजर महेमंत सरीतो मारीये; कनकका मणी कलंक टले तो टालीये, साधांसेती प्रीत पलेतो पालीये; परीहांवाजींदः रामभजनमे देह गलेसो गालीये. ॥ १४ ॥ सीर पचरगी पाग के जामा जरकसी करमे लालक वाणके कमरमे तरकसी; ज्यांवर

चंगी नारदी घावे आरसी; परीहांवाजीद: सो नर चाल्या मसांण पढंता पारसी. ॥ १५ ॥ कारीकर कर्तारके हूंनर हदकिया, दसदरवाजा शर्षी सेर पेदा कीया; नषचष महेल वणायके दिपक जोईदीया; परीहांवाजीदः भितर भरी भिगारं उपर रंग दीया. ॥१६॥ साहीबके दरबार पुकारे बकरा, काजीलीयाजाय कांनकर पकरा; हेमारा लीया सीस उसीका लीजीये, परीहांवाजीदः राव रंकका न्याय अदल कीजीये. ॥१७॥ मुषसुं कयो नही राम दीयो नही हाथरे, अब घरमे नांही अनफीरे काहूं साथरे; माथे देकरी बोज झूरकूं तांणीयां, परीहांवाजीदः वीना भज्यां भगवांन यांही पीठाणीया. ॥ १८ ॥ उंचामंदीर मेल-निचा मालीया, वेठी राजकवारके पडदा डालीया; गले सोनारा हार नाकमे वालीयां; परीहांवाजीदः करत पीयासुं वात देदे तालीयां.

॥ १९ ॥ पीव चाल्या परदेसके ताला दे गया, हिरदेवृज कीमारू के कूंची ले गया; उर घणा रंगराग वोहत करपेषणा. परीहांवाजींदः सांइसेती प्रीत ओर नही पेषणा. ॥ २० ॥ ईती संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० ॥ ७३ ॥

॥ अथपारसनाथजीरोसीलोकोलिख्यतेः ॥

प्रणमु परमात्म अवीचल आवतारुः अरीहंत सीधां रानाम उचारुः सीमरुं आचारज मोटा उपाध्याः साहू आतमना-कारज साध्या. ॥ १ ॥ नगरी अलंकापुर वणारसी सोहे, देष्यां घणारामनराजी मोहे; देसदेसांमे कासी खंरूवरू देसो, करदरू अकरारो नही लवलेसो. ॥ २ ॥ राजे महाराजा अश्वसेन राजा, सदात्री वखतां वाजे नीत वाजा; केसु राजा रोकासुं परमाणो, देस सगलामें वरते छे आणो.॥३॥ मणी माणीक

मोती जरीया जंमारो, अष्टसीद्ध नवनिधरोपार नयारो; अती घणी सुदरी दीपे एक रांणी, साउ वांमादे माता पटरांणी. ॥ ४ ॥ जीणरी कूखे तो जगनाथ जायो, पार्श्व कुंवर जगनाथ कहायो; तीनत्रुवनरो नायक नाथो, मुगत रमणीने घाली छे बाथो. ॥ ५ ॥ चोष्ट इन्द्रानो पुजनीक देवो, निसदीन तो आगलसारेजी सेवो; दसन्नवांरो वेरी गेरीसवायो, कमठ सेन्यासी तापस आयो. ॥६॥ चीहूंदीस अगनी धुकंती जाला, सीरपर तो सोहे सूर्य वम्फाला; इसम्फीपंचा अगनी तपस्या तपंतो, मालारुद्राषरी जाप जपंतो. ॥७॥ गंगातट उपर आसन कीनो, जोगी जपतपमे अति घणो ज्ञीनो; सीस जुटासु मुकटसुं जुव्वां, ज्ञांग धतुरा ज्ञषीया अती छुव्वां. ॥८॥ आसण पदमासण पुरणठायो, लेपी ज्ञस्मी सुंधसम सकायो; पेरण पावम्फीयां आगल पम्फीयां, बृजूकछोटो कसीयो छे कम्फीयां.

॥ ए ॥ चकूचोला ऊलकेजीमोला, सोंगीसेलीने वज्रुतरा गोला; तीपो त्रीसुल एक अधीक वीराजे, ज्ञालचंनणरी पोलज छाजे. ॥१०॥ सोहे वागंवर पापंवर सोहे, घणा अवधुतने देष्यां मन मोहे; अवधुत तो इसमो कोइ न आयो, जसतपसीरो घणो सवायो. ॥ ११ ॥ दोमी दूनीयां सहू दर्सन जावे, जलज्युंतो जोगी ज्वालामें न्हावे, ईसमी वातां अव आई दरवारो, कहे वांमां सुण पार्श्व कुमारो. ॥ १२ ॥ जीहां जोगी सरजाप जपंतो, दर्सनरी मनमे घणी ठे घतो, चढीया वांमादे माता चकमोले, चाकर सहेल्यां चामर ढोले. ॥ ॥ १३ ॥ हूकम मातारे पास कुमारो, गयवर ऊपर हूवा असवारो; सरणे आयांरो साहीवसांमी जीवसांरारो अंतरजांमी. ॥१४॥ हस्ती हलकारां गंगातट आया, कपटी कमठरी देषी सहूमाया, जीतरेतो जीनवर ज्ञांनकर जोवे, अवतो ताप

सरोमांनज षोवे. ॥ १५ ॥ सुंण होतांपस एक मारी जवायो, इसफोतपत्तो मारी दायनआयो, ईणवीध पंचा अगनी मती तापो, जीवहिस्यारो हूवे संतापो. ॥ १६ ॥ छोफो मायामद दया चीत धारो, सिधा समरण सुंहोसी निस्तारो; इसफो श्रुंणीने कमठज वोले, आतुर जफणतो आंषज षोले. ॥ १७ ॥ गुसे नरीयोने धरूर धूज्यो, कीरूर दांतांने गीरु २ गुंज्यो, बोले वरु २ ने वके वदनुरो; कर २ तो आग दांत करुरो ॥ १८ ॥ राजकूंवर तुं दीसे अवतारो, अवतो लेवेगा अत हमारो; कूफि करतेहो हमसे तुमसेपि, केसि तपस्यामे हीस्या तुम देषी. ॥१९॥ कूफातोकूंवरकरा नही कीजे, जंगम जोग्यांरी आल न लीजे; वरजे

जीत्रज काया, प्रभु पार्श्वं तीहां नाम सुणाया. ॥
॥ २१ ॥ तरुफरुता पखीया वाहीर फुणिंदो, पाया
अमरापद हूवा धरणेंदो; हमेक मठतो हुवो हेरानो
पुरीपुर पदामे पखीयो कीसानो. ॥ २२॥ धूकंती
धूणी लेढेरी वीपेरी, अवतो पव रहे पार्श्वतेरी;
जलश्तो वलश्तो आफलतो उव्यो, रीस न्नरीने
कूवरपर रुठयो. ॥२३॥ हमचीतपस्यारो अपजस
थायो, पार्श्वकूवरने होसुं डूषदायो; काया कष्टरो
पाउंपरमाणो चूकूंतो नही कूवर सुठांणो. ॥२४॥
काले मासेकानो ठे कालो, उपज्यो कमठा-
सुरमेघजमालो; एतो ठे जीनवर मोटा उपगारो,
लेसी दीक्षा ने उतर सीपारो ॥ २५ ॥
नांग नागणीनो कीनो निस्तारो, जस हूवो ठे
सारे संसारो; लोक नगरीरा सारा सुषपाया,
अवतो कूमरमेलांजी आया. ॥ २६ ॥ इम करता
उतस्वा वर्स उगणतीसो, आप आलोचे मनमे

सरोमांनज पोवे. ॥ १५ ॥ सुंण होतांपस एक मारी जवायो, इसमोतपत्तो मांरी -दायनआयो, ईणवीध पंचा अगनी मती तापो, जीवहिस्यारो हूवे संतापो. ॥ १६ ॥ छोमो मायामद दया चीत धारो, सिधा समरण सुंहोसी निस्तारो; इसमो श्रुंणीने कमठज वोले, आतुर ज्फणतो-आंषज षोले. ॥ १७ ॥ गुसे ज्नरीयोने धमर धूज्यो, कीमर दांतांने गीम २ गुंज्यो, वोले वम २ ने वके वदनुरो; कर २ तो आग दांत करुरो. ॥ १८ ॥ राजकूंवर तु दीसे अवतारो, अवतो लेवेगा अत हमारो; कूमि करतेहो हमसे तुमसेपि, केसि-तपस्यामे हीस्या तुम देषी. ॥१९॥ कूमातोकूवरकरा नही कीजे, जंगम जोग्यांरी आल न लीजे; वरजे वांमादे ज्नापरचावे, रपे तपसी कोइ हूनर चलावे. ॥ २० ॥ इतरे लकमांरा टुकमाजी कीना, रुवता हूंतांसणना गजलीना; अंतरमुहर्तलग

जीवज काया, प्रभु पार्श्व तीहां नाम सुणाया. ॥ ॥ २१ ॥ तरूफरूता पन्नीया वाहीर फुणिंदो, पाया अमरापद हूवा धरणेंदो; हमेक मठतो हुवो हेरानो पुरीपुर पदामे पन्नीयो कीसानो. ॥ २२॥ धूकंती धूणी लेढेरी वीपेरी, अबतो पव रहे पार्श्वतेरी; जलश्तो बलश्तो आफलतो उठ्यो, रीस न्नरीने कूवरपर रुठयो. ॥२३॥ हमचीतपस्यारो अपजस थायो, पार्श्वकूवरने होसुं दूषदायो; काया कष्टरो पाउपरमाणो चूकूंलो नही कूवर सुठांणो. ॥२४॥ कालें मासेकानो ठे कालो; उपज्यो कमठा-सुरमेघजमालो; एतो ठे जीनवर मोटा उपगारो, लेसी दीक्षा ने उतर सीपारो ॥ २५ ॥ नाग नागणीनो कीनो निस्तारो, जस हूवो ठे सारे संसारो, लोक नगरीरा सारा सुषपाया, अवतो कूमरमेलांजी आया ॥ २६ ॥ इम करता उतस्या वर्स उगणतीसो, आप आलोचे मनसे

जगदीसो; पहीली तो वरसीदानज दीजे, पछेतो अवसर दीष्याजी लीजे. ॥ २७ ॥ सोले मासे एक कनक कहीजे, कनक सोलेरो सोनैयो लीजे; अटलष सोनैया एकज कोमो, नित प्रतता देवे ईतरानी जोमो. ॥ २८ ॥ ईसमो संवत्सर दानज दीयो, जीनवर तेवीसमा संजम लीयो; त्रणसे मुनीवरतो हूवा तीणवारो, लारेतो फूरे घणो संसारो. ॥ २९ ॥ एक दीनतो प्रज्ञुजी शिवडग वनमे, ध्यान धरीयो छे अवीचल मनमे; अवतो कमठासुरज्ञांनकर जोयो, कछे हमारो दूस्मन होयो. ॥ ३० ॥ रुठोकमठासुरवाउ चलावे, अधर पामांरा सीषर ऊमावे; वादल जमीया ने ठाया आकासो, जाणें न्नादरवो वरसेजी मासो. ॥३१॥ वीजल वाउने अतीघणो गाजे, पाणी पहामांथी पमतोजी वाजे; पमे पाणीरा पावस पमनाला, धसमसीया मुंगर धारांधक चाला. ॥३२॥ काले

अकाले मचीया वरसाल, नाला घालातो मचीया वंवाला; जीनवरतो जगमे नासालग कलीया, ध्यान्न अचलाचल नहीजी चलीया. ॥ ३३ ॥ अवतो मनसांहे दीयो अवालो, ओतो छे दूष्टीमे गजमालो;दशन्नवरो वेरी कमठासुर दीसे,संन्नायो वजर आंणी अती रीसे. ॥३४॥ धुज्या कमठासुर मनमे पीठताया, मेतो जीनवरने घणा संताया; एतो प्रभुजी मुगतरा प्यारा, रागद्वेष सुंहोय गया न्यारा. ॥ ३५ ॥ ईसको जाणीने लागोछे पावो, प्रभु हमारा पाप पमावो; अवतो कमठा सुर इंदर देवो, सारे प्रभुजीनी घणीज सेवो. ॥ ॥ ३६ ॥ आप आ परेथांनक पहोता तीणवारो, अवतो जीनवर कीनोछे विहारो; दीन तयासी ठदमस्त रहीया, वावीस परीसाकरराजी सहीया. ॥ ३७ ॥ अष्टकर्मारो कीनो छे नासो, पछे तो केवल हूवो परकासो; वाणी पेतीस ने अतीसय

चोतीसो, ईणवीध तो वीचरे जीनवर तेवीसो.
॥ ३८ ॥ ज्यां ज्यां जीनवरजी पगल्यां पधरावे,
धरती आगासुं समी होय जावे; सोसो कोसां
लगन परे डूकालो, मोटा रोगांरोनहू वेचालो.
॥ ३९ ॥ कोई हलके श्रावगरे पारणा पावे, देवता
सोनैया कोरां वरसावे; सुरपत भगवंतरी सारे
नीत सेवो, लाभ अणहूंते सतलषदेवो ॥ ४० ॥
देवदेवी मील दर्शन आवे रतन कंचनरो त्रीगरो
रचावे; वांणीधुकारां ऊवे अतभारी, पुर्षदा वारेही
समजे तीणवारी. ॥ ४१ ॥ गाम नगरांपुर सोहे,
विचरंता भाग भवजीवां रासाले भगवंता;गुणरा
आगर ने सागर गंभीरो, लरीया कर्मा सुभारी
रणधीरो. ॥४२॥ अनेक जीवांरा कारज सारया,
भवसागरसुं पार उतारया;एकसोवर्सरी पाईवेऊमर
जाई तो चढीया सुमेरगीरी शीषर. ॥ ४३ ॥ तीथ
अष्टमी श्रावन सुद मासो, प्रभुजी कीयो वे सि-

द्धांमे वासो; जणां सीधांरो करसुं वषाणो, कांईक सुतर मतपीण जांणो. ॥ ४४ ॥ सीध शीलारो इसरो अनुसानो, उठे भगवंतरो अवीचल थानो लांबी पहोली लपपेतांलीस जोयण, कथीयो गुणवंता इसकोजी मोयण ॥ ४५ ॥ विचमे तो जाडी घणीजी सगली, छेहे मापीनी पांषसु पतली; सोहे अनंतीशिद्धांरी श्रेणी, संष्या शिवपुररी नही आवे केणी. ॥४६॥ पाणी पवनरो नही लवलेसो, नही अंधारो नही रविरेसो, नही उनालो नही वरसालो, नही सीयालो नही रुतुकालो. ॥४७॥ कोई आवे नही कीणरे कोई जावे, षावा पीवाना कीणने नही भावे; सुता बेठा नही उभाजी आडा, भारी हलका नही पतलाजी जाडा. ॥ ॥ ४८ ॥ हासा पासातो नही उवासा, षटजीवांरा जोवे तमासा; चाकर ठाकर तो नही जण ठोको, बुढो बडेरो नही कोई लोको. ॥४९॥ वरते

चोतीसो, ईणवीध तो वीचरे जीनवर तेवीसो. ॥ ३८ ॥ ज्यां ज्यां जीनवरजी पगल्यां पधरावे, धरती आगासुं समी होय जावे; सोसो कोसां लगन पके झूकालो, मोटा रोगांरोनह्वू वेचालो. ॥ ३९ ॥ कोई हलके श्रावगरे पारणा पावे, देवता सोनैया कोफां वरसावे; सुरपत भगवंतरी सारे नीत सेवो, लाभ आणहूंते सतलपदेवो ॥ ४० ॥ देवदेवी मील दर्शन आवे रतन कंचनरो त्रीगफो रचावे; वांणीधुकारां ऊठे अतभारी, पुर्षदा बारेही समजे तीणवारी. ॥ ४१ ॥ गाम नगरांपुर सोहे, विचरंता भाग भवजीवां रासाले भगवंता; गुणरा आगर ने सागर गंभीरो, लफीया कर्मा सुभारी रणधीरो. ॥४२॥ अनेक जीवांरा कारज सास्या, भवसागरसुं पार उतास्या, एकसोवर्सरी पाईछेउमर जाई तो चढीया सुमेरगीरी शीखर ॥ ४३ ॥ तीथ अष्टमी श्रावन सुद मासो, प्रभुजी कीयो छे सि-

सीलोको न्नलो, प्रणमे पंचोली जोरावर मलो.
॥ ५५ ॥ समत अंठारे वरस ईकावनो, पोह वद
दसमीरो मोटो ठे दीनो; वाचे न्नणे ने सीषे
सदाई, ज्यांरे उणार तनही रहे कांई. सुधसंपत
दायक नायक सांमी, चवदे राजरो अंतरजामी.
॥५६॥ ईती पार्श्वनाथजीरो शिलोको संपुर्णम्ः॥



॥ नं० ॥ ७४ ॥

॥ अथ चंद्रा प्रज्ञुनो सिलोको लीषंते॥ दोहा॥

सरसत सांमण वीनवूँ, लागु सतगरु पाय;
दद अह्चर दूरे करो, सीवरु शारदमांय. ॥ १ ॥
इष्टदेव नीत सीमरीये, मनवंछीत दातार; अलीय
वीघन दूरे हरो, सपती रापणसार ॥ २ ॥

॥ सिलोको ॥

सरस्वती माता सारदा राणी, समरु जीन-
सासन वरदायक वाणी; माहासेन राजाघरे

सीद्धांरो समचे समझावो, जीनवर मुंनीवररो नही कोई दावो; जठे तो प्रभु पार्श्व वीराजे, त्रीहूं लोकमे नामज छाजे. ॥ ५० ॥ सीवपुर तो सेवा देवता सारे, योही पृथ्वी पर मांनव अवधीरे; देवल देहरा पीर पधराया, प्रतमा थापीने मंदीर कराया. ॥ ५१ ॥ मोटा मुंनीवरतो जीनवर मतहाले, श्रावग कीतरा ईकतीमहीज चाले; केईक तो प्रतमा पुस्तकमे राषे, केईक भगवंतरा भावे गुण भाषे. ॥ ५२ ॥ केईक तो देवल देहरां जावे, केईक अचलासण ध्यानै लीवलावे, पार्श्व प्रभुरी महीमा अणपारो. ईणमे तो आएयो थोको वीस्तारो. ॥५३॥ लागो वाला अती प्रभुजी प्यारा, दीलसुं कीजे नही घकी एक न्यारा; पलपलमे वंदणा होय जो हमारी, महेर राषीजोम्मां परथारी. ॥ ५४ ॥ पछे तो भगवंत हूवा वर्द्धमानो, इणवीध मुझाने उहीज ध्यांनो; भणीयो भगवंतनो

सीलोको जलो, प्रणमे पंचोली जोरावर मलो. ॥ ५५ ॥ समत अठारे वरस ईकावनो, पोह वद दसमीरो मोटो हे दीनो; वाचे जणे ने सीषे सदाई, ज्यांरे उणार तनही रहे कांई. सुषसंपत दायक नायक सांमी, चवदे राजरो अंतरजामी. ॥५६॥ ईती पार्श्वनाथजीरो शिलोको सपुर्णम्ः ॥



॥ नं० ॥ ७४ ॥

॥ अथ चंद्रा प्रभुनो सिलोको लीषंते॥ दोहा॥

सरसत सांमण वीनवूँ, लागु सतगरु पाय;
दद अक्षर दूरे करो, सीवरुं शारदमांय. ॥ १ ॥
इष्टदेव नीत सीमरीये, मनवंछीत दातार; अलीय
वीघन दूरे हरो, संपती रापणसार ॥ २ ॥

॥ सिलोको ॥

सरस्वती माता सारदा राणी, समरु जीनसासन वरदायक वाणी, माहासेन राजाघरे

लीषमादे राणी, कूषे उपना छे अवंधनाणी. ॥१॥
चवदे सुपनामे रात वीहांणी, पेला सुपनामे
गयवर मदनीको; जांणे दीसे ऐरापत सरीषो,
दूजा सुपनामे वृषभ गुजंतो. ॥ २ ॥ जाणे दीसे
हो भ्रमर धुजंतो, तीजा सुपनामे सिंह साडुलो;
गुंजे प्रथ्वीपर दीसे ए दूलो, चोथा सुपनामे
लक्ष्मी देवंता. ॥३॥ सोले सीणगार दीसे दीपंता,
पांचमे पुष्प फूलांरी माला; छटे चंद्रमा दीसे
उजीयाला, सातमे सुपनेका सवरागुतो. ॥ ४ ॥
आठमे धजा दीसेले कंतो, नवमे तो कलस रत्नासु
जमीयो, दसमे सरोवर पीरसुं भरीयो, पदम
सरोवर इग्यारमे जाणुं. ॥५॥ देव वीमान वारमे
वषांणुं, तेरमे सुपने रतनर जलकंता, चवदमे अ-
गनी धुमनी कंता, चवदे सुपना रांणी लीषमादे
पाया.॥६॥ माहासेन राजाजी घर मोतिये वधाया,
जनम्या परमेश्वर चंदा प्रभु सांमी; तीन भुवनरा

अंतरजांमी, चंदपुरीमे हूवो उछरगो. ॥ ७ ॥ इंद्र इंद्राणी उछव मनरंगो, नरजोवन मांहे संजम लीनो; उपदेस नवीक जीवांने दीनो, कर्मपपावी मुक्त सीधाया. ॥८॥ ज्यांरातो गुण सुरनर गाया, देशमुरधरमें चोराई जाणुं, सेरनांवरी घणो वर्षाणुं; पद्म लंछन चंदाप्रभु देवो. ॥ ए ॥ ज्यां रीतो कीजे नीतप्रते सेवो, ईण अवसर मुनीवर चोमासे आया; सुत्र सिद्धांत घणा सुणाया, पुज पुनमचंदजीरा चेला दयालो ॥ १० ॥ मोटा मुनी पटजीवां प्रतीयालो, चेला हेमराजजी घणा सुषकारी; दोनु संतारी सोभा अतभारी, तपस्यामे वंकागुणरा भारो. ॥ ११ ॥ देव उपदेस सुणे नरनारो, दयापो साने पडीकमणा भारी, कीनी पचरंगी नर ने नारी, श्रावग सीरदारो गुण नीत गावे. ॥ १२ ॥ वे कर जोडीने शीश नमावे, संमंत उगणीसे तसटे वरसे, श्रावण सुद पुनम

गायो मनहरखे. ॥ १३ ॥ ईती संपुर्णम ॥



॥ नं० ॥

॥ अथ पुनमचंदजी महाराजको सीलोको ॥

सासन नायक वीरजीणंदो, कीरपा कर टालो भवफंदो; बे कर जोमीने शीश नमाउ, पुज आचारजज्यारा गुण नीत गाउं. ॥१॥ पुजपुनमरो केसुं सीलोको, चीत दई सुणजो भवीयण लोको दीजो सुद अक्षरबुद्ध सवाई, जवरो आणंद मारा दीलमाई. ॥ २ ॥ मुरधर देशमे सेर बे भारी, जवरो जालंधर सोहे हीतकारी; राय गांधी तो तिणमाहे रेता, चाले सुध मारग नीजकुल वेहता. ॥ ३ ॥ जीणकुलमांहे जन्मज लीनो, सुधवेलाने सुभमोर्त दीनो; उमजी घरमे फुलांदे नारी, ज्यांरी कूषमे लीनो अवतारी. ॥४॥ संवत

अठारे वाणुवेंमाया, जाणे साच्यात सुरगथीचव.
आया; मीगसर सुदनवमी सनीसरवार, जनम
ओछवकीनो अपार. ॥५॥ चंदकला जीम दीनर
वादे, पुर्वला पुन तो कीदाठे जादे, वालवृमचारी
प्रगटीया ठे पुरा,नाम पुनमचद पुन्य अकूरा.॥६॥
आद् समुदाय अमर मोटी,परचो जमायो मुरधर
नवकोटी, ज्यांसु लगाये पचमे पाट, ज्ञानी पदा-
रीया जालंधर थाट ॥७॥ श्रावक श्रावीका वंदन
आया, हरक आणंद मनमांहे पाया; मुनवर केवे
ससार काचो, चेतो त्रवी जीवां ईणमे मत राचो.
॥ ८ ॥ सुणीयो उपदेश उमजीरे पुत, संजमले-
वणरो माड्यो ठे सुतो, मुनीवर त्रापेथांने सुप
थावे, जीमकरो प्राणी अवसर नही आवे. ॥९॥
मातपीता तो परत्रव सीधाया, ठोटी उमरमे
संजम चीतलाया; सजम तो गामत्रच राणीलीनो;
उगणीसे ठकोने मीगसररो महीनो. ॥१०॥ सुद

नवमीने शनिसर आयो, दिक्षारो मोछव जवरो मंडायो; वडी दीख्या तो वालारे माही, दीक्षीजव राणी गामसुं आई. ॥ ११ ॥ माहाव्रत मोटा पाले छे पांच, कीणसुं न रापे तांणाने पांच; षटकाय जीवांरा मुंनीसर पीर, छोड्यो संसार वडा सुरवीर. ॥ १२ ॥ जणीया गुणीयाने पिडत ग्यांनी, गुरु जगवंतरी अग्या मनमानी; संवत उगणीसे ती सारी साल, ग्यांन मुनीसरकर गया काल. ॥ ॥ १३ ॥ ज्यारे पाट वीराज्या मुनिंद, दिन२ दीपे तारामे चंद; वदीयो परीवार पुनम जारी, दर्शनने आवे सारा नरनारी. गांम नगर मुंनी पदारे, थापे समकीत मीथ्याती हारे. ॥ १४ ॥ छत्तीषट दोष टाले मुंनीराज, तारण तीरण काष्टरी ज्याज; सुरत हद प्यारी मोवनगारी, वीजकला जीम चंदरी जारी ॥ १५ ॥ चत्रमासातो छीयाली पट कीना, पाषंडीयांने तो मारग लीना; संवत उग-

णीसे पचासामाई, मीगसरमे पदवी पुजरी पाई. ॥ १६ ॥ संगच्यारांमे आनंद थायो, पदवीरो मोछव जवरो फेलायो; चेला तो ज्यारे पांच परवीण, दीनदीन दीपे कोई नही हीण. ॥ १७ ॥ पुज पदारे जीण२सेर, नवीयण लोकारे उपर मेर; पुज अमरसुं वेठा पटपाट, पोता परू पोतारा दाट. ॥ १८ ॥ दीन दीन ज्यांरी पुन्याई लागे, जोगी मीथ्याती दूरांसु नागे, कोई नही करता पुजसुं चरचा, जीनमत परमतमे जमाया परचा. ॥ १९ ॥ छेलो चोमासो जालोरहरके, कीनो उगणीसे बावन वर्षे, सुद पुनम ने आउपोपार, नाद्रवे पहोता सुर अवतार. ॥२०॥ जवरो वेकूटी मांहे वीराज्या, चवण मोछवमे वाजा अती वाज्या; चनण पीपलसुं दीरायोदागो; वेकुंटी उपर तुरो नही लागो. ॥ २१ ॥ इचर जपाया श्रावग सारा, तुरोले वणने धोरुीया न्यारा; लागीवे कुटी

पचरंग वणायो, आठावुचरो परचो वतायो. ॥ ॥ २२ ॥ तुर्तंतुरो ठीकाणे लागो, जाणे कीणटील पहोतो ठे आगो; इणवीध परचो आरोगो माथे, देष्यों आवगईचरजपाते. ॥ २३ ॥ पुजपठारे देव अवतार, जीणमे मत जाणो संकालीगार; जरमपुर सांरा न्नारी गुण मोटा, गावे जीणरे घर नही आवे तोटा. ॥ २४ ॥ पुजप्रतापी गेरा गुण दरीया, उंठी बुद्धमारी वरणन करीया; ऊगणीसे बासट गढसी वांणांमांइ, चवदंस न्नादरवे जोरू वणाई. ॥ २५ ॥ सरसती मातारी मुजपर मेर, कीदो शिलोको आई मन लेर; अंदारोपषने शनीसर वार, वे कर जोरूीने केवे अणगार. ॥ २६ ॥

॥ ईती संपूर्णम ॥



॥ नं० ॥ ७६ ॥ थांरो नेणांरो पाणी लागणो मारुजी. ए राग. ॥

॥ अथ पुजजी पुनमचंदजीरा गुण लिषते ॥

सुणो पुज्य मारी अरदास, हुकमी शिषराजरो; गुराजी. मे दर्सन दीठो नयण, न्नलोदीन आजरो गुराजी ॥१॥ थे घणा साद सादवीयांरां वृंद, के घणांने वारीयाः गु० देसंजमरो साज,घणांने तारीया. ॥ गु० २ ॥ जीन मारगरा थंन, सोन्ना सिधवृंदमेः गु० सितलथांरो सन्नाव, सदाही आणंदमे. ॥ गु० ३ ॥ प्रणमे थांरा पाय, देवी ने देवताः गु० च्यारुई सीघ नितमेव, चरण थांरा सेवता. ॥ गु० ४ ॥ थे सुत्र अर्थरा जांण, न्नण्याथे जुगतराः थांरी कीरीयामे कूमीयन काय, कामी एक मुगतरा. ॥गु० ५॥ कंठ थांरा अदन्नुत, कला जांणो कोरणीः गु० ढाल सवैया सिलोक, मीठी थांरी वोलणी. ॥ गु०६ ॥ थांरो लागे वलन्न व्या-

ख्यान, सरस स्वादमेः गु० सुंणतां लागे न्नवजीव, न परे परमादमेः ॥ गु० ७ ॥ आप पंरुीत महा परवीण, गीतारत गणपतीःगु० सारण वारण कीध; सांधारां छत्रपत्री. ॥ गु० ८ ॥ थे चरचा करणने त्यार, वठां जांणे वारणेः गु० कोई जीत न सके आय, वारी जाउं वारणे. ॥गु० ए॥ आप सिंघासणरयाफाव, पुरषदारा थाटमेः गु० थे संच्या पूर्व पुन्य, सदाथे घाटमे. ॥गु०१०॥ थे तप जपमे सावधान, मगन थे ज्ञानमेः गु० थे धर्मवतायो सुध, दयाने दांनमे. ॥ गु० ११ ॥ कीयो जीनमार्गनो उद्योत, नगरपुर गाममेः गु० थांरी कीरती देसविदेस, व्यांपी ठामठाममे. ॥ गु०१२ ॥ चतुराईने चूप, घणी थांरा हाथमेः गु० थारे मुखे घणो मीठ्यात, रुरुो रस वातमे. ॥ गु० १३ ॥ थे देवो घणांने साज, धर्मबुधी आंणनेः गु० देवो वस्तर पातर जाच, अनजल आंणने. ॥ गु० १४॥

थे षम समदमने धीर, जीताथे कांममेः गु० पछारू कीयोपे माल, लोन्न गुलामने. ॥ गु०१५ ॥ पदवी आचार्यपाय, गुण छत्रीसमेः गु० थारे सगलांसुं समन्नाव, नही राग रीसमे. ॥ ङु०१६ ॥ जंबुदीपरा न्नर्तके, मरुधर देसमेः गु० जालोरसहेर सुवास, दीसे गेघाटमे. ॥गु० १७॥ राय गांधीतीण मांय, वसे धनरा धणीः गु० उमजी पीतारो नाम, कूष फुलांदे तणी. ॥ गु० १८ ॥ थांरा मोटा न्नाग ग्यांनगरु न्नेटीयाः गु० मारी पावन हुई देह, न्नव २ङुपमेटीया. ॥ गु० १९ ॥ मोटा न लोपे कार, मरजादा पाटरीः गु० प्रह उठी प्रन्नात, मालाथांरा जापरी. ॥ गु० २० ॥ पुगा आणंदपुर, मनवंछीत मीलीः गु० कीत्री गुरांरी अस्तुत, ङुपङुरे टली. ॥ गु० २१ ॥ मांसुं मोटो कीयो उपगार, अंतर नेण श्नेदीयाः गु० मारा न्नवन्नवना ङुष न्नांज, मुगत गांमी कीयो. ॥गु० २२॥ थे मोटा मीलीया आप,

पुन्याई पुर्व तणी, गु० थे दीया मारे माथे हाथ; पुन्याई मारी घणी. ॥गु०२३॥ वीनतरी ईण भांत, करीमांन मोरूने: गु० वीनवे शिषरूालचंद, वेकर जोरूने. ॥ गु० २४ ॥ गांम कोटरूीमे जोरू, कीधी चोमासमे: गु० संवत उगणीसे बावन हुवो मन हुलासमे. ॥ गु० २५ ॥ ईती संपुर्ण ॥

॥ नं० ७७ ॥

॥ मोटी जगमे मोहणी ॥ ए राग छे. ॥

दयालचंदजी मुनी दीपता, कांई दीठां हो मन आणद थाय; सुष संपत लीला लहे, कांई भवरना हो पातीक जाय. ॥ १ ॥ सेरमजल अती सोभता, कांई मुताहो बालचंदजी आप; ज्यारे सुषलीनी भारज्या, कीसनादे होवे दीलरास्थाप. ॥ द० २ ॥ ज्यारे घरकवरजी

हरष्यो हो सारो परीवार; कुटंब सहु भेलो हुवो, नाम थाप्यो हो रघूनाथ कूमार. ॥ द० ३ ॥ वीजचंद जीम दीन२ वधे, कांई दीसे हो जाणे देवकुवार;वर्स सातमेजद हुवा,सुभ लषण हो चोपा श्रीकार. ॥ द० ४ ॥ पूजजी माहाराज पदारीया, कांई नामे हो पुनमराचंद, पंचमाहाव्रत पालता, सांमी काटे हो कर्मारा फंद, ॥ द० ५ ॥ दयालचंदजी सजम लीयो, कांई पाले हो पंचमाहाव्रतसार; बावीस परीसाजीतने, मुनी लेवे हो निरदोषण आहार. ॥ द ६ ॥ आर ज्यांजीपदारीया, कांईरी धुजीहो नांमे महाराज; कीसनांजी सजम लीयो, शती पाले हो धर्मरी ज्याज. ॥द०७॥ सुषे समाधे वीचरे, कांई चेलाहो हेमराजजी साथ; देवे रुडी देसना, मुनी भाषे हो सुत्रांरी वात. ॥ द० ८ ॥ ज्ञान गुणे कर दीपता, कांई निर्मल हो गगारो नीर; दर्सन दीठां डुष टले, मे दीठाहो ठकायना

पीर॥द०ए॥ सीरदारमल गुण गावीया,कांईसेर हो न्नावरी मजार;सगला साडुजीने वंधणा, मे नमण करसुं हो सो सो वार. ॥ द० १० ॥ उगणीसे साल चोसटे, कांई मासजहो न्नाड्वो जांण; सुदपष दीनसी तीजरो, गुण गायाहो मन हुसज आण.॥ ॥ द० ११ ॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ नं० ७८ ॥

श्री पार्श्वनाथ महाराज राजपे मणीधर छत्र चांवर ढोले, सुरनर सारा कीरे सेवना; अंगपर तुज केसर घोले. :टेर०:वणारसी नगरी धर्मपुरीहे, अश्वसेन राजद न्नारी; सोन्ना कर रया सारा देशमे, वामादे जीज्यांरे नारी. देवलोकसुं देवता चवकर, रांणीरे कुषे अवतारी; पोस मास वदपष दसमने, जनम लीयोहे सुषकारी. ॥ड०॥

उछव करवा कारणे, आया इंद्र महाराज, सुरनर सहू उछव करे, सारे मनोरथ काज; सारे मनोरत काज, एरापत इणपरही बोले ॥श्री०१ ॥ कुंवर वधाहे सोन्नामांनमे, सवके मन हूसज आवे; नगारांरी ठोर पड़े हे, घरघरमे मंगल गावे. कवर न्नयाहे वरस तीसमे, प्रन्नावतीने परणावे; मोज करे मेलके मांही, दान पुन्य नित दीवरावे. ॥ दु० ॥ एकदीन कोतक देषीयो, वस्ती सारी मांय; कमठ जोगीने पूजवा, लोक साराइ जाय, कवरजी ईणपरही वोले. ॥श्री० २॥ कवरजी कोतक देषणा सारु, कमठ जोगीपे आया; ग्यांनवीचारी देषे कवरजीः नागनागणी जले काया. एसे देषके वोले कवरजी कमठ जोगीने वतलाया, एसे तपस्या करोवे जोगी, हिंस्या धर्म कुण वतलाया. ॥ दु० ॥ पाती तरत बुलायके, काष्ट दीयो चीराय; नागनागणी दो जणा

ज्या जलबलती काय,पंचपद कांनपे वोले.॥श्री०३॥ मंत्रनोकार सुणीयो कानपे, धरणीधर हुआ राजा;अपकीरततो हुई कमठकी,जीततणा वाज्या वाजा; पारस कवर वेराग आंणके, छोरू दीया घरका काजा; नवी जीवांने देवे देसना, तीर्थंकर हुवा माहाराज. ॥ दू० ॥ कमठमरी हुवो देवता, मेघमाली तिहां नाम; वेरची तार्यो पाछलो; आयो वन उध्यांन, जोर अवआपरोतोले. ॥ श्री० ४ ॥ मुसलधार वर्स रयो पांणी, गाज वीजरा धूंकांरा; नाक वरोवर आयो पाणी, नाथनीरंजन धीरपरू; ज्ञांन देकर वोले इंद्र, धावोनी धरणेंद्र प्यारा. सहेंश्र फणाको छत्र करेने, मीटादीवीजलकी धारा.॥दृ०॥श्रावन सुद पांचम दीने; प्रभु पहुंता नीरवाण, सो वरसनो आउषो; निलोवर्ण वपांण, नमण कर सीरदारो वोलें. ॥ श्री० ५ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ॥ ७९ ॥   ॥ हिंफानी राग ॥

सगत करलेरे: साडूकी समगत सुद्धी आवेरे: सं: टेर: ठाणायंगसूत्रमे देषो, च्यार तीरथ कया जीनवररे; पांचमो तीरत नही कह्यो, क्युं मिथ्या न्नाषोरे. ॥ सं० १ ॥ तिहो तरबोलरो फलकयो, श्रीउत्राध्येनजीमे देषोरे; पुजाफल श्रीवीरजिनेसर, क्युं नही न्नाष्योरे. ॥ सं० २ ॥ तिर्थंकर प्रतीमाने पुजी, कुंण मोक्ष गया वतलावोरे; सजमपाली सीध हूवा, ज्यांरा शास्त्र साषीरे. ॥ सं० ३ ॥ गुरु हमारा रत्नरीषजी, दया धर्म दील राच्योरे; मंदसोरमे कीयो चोमासो, साल गुण साठेरे. ॥ सं० ४ ॥ ईती संपुर्णम्: ॥



॥ नं० ॥ ८० ॥

गजसुषमाल देवकीनंदनः कृस्न तणा न्नाई; लारुकोमकरने हूलराई, आसा पुरे माई. ॥१॥

करेजा कूमी नही कांई, त्याग दीयो संसार समंदर उदे भली आई: ॥टेर:॥ नेमतणो आगम सांभलने, वंदन चल्यो भाई; सोमासुंदर रुप अनोपम, देपी दील आई. ॥ क०२ ॥ करी सगाई मेल अंते वर, जीनवंदन जाई; वाणी सुणने भीज गया तव, चारीत्र चीतलाई. ॥ ॥ क० ३ ॥ तात मात वंधवने पुठी, समकीतसे ठाई; भरजोवनमे सोभा सुंदर, ठीनमे ठीटकाई ॥ क० ४ ॥ जादव कृस्न गोदले वेठा, सुणो वलभ भाई; तीन षंरूरो राज भोगवो; आस पूरो माई. ॥ क० ५ ॥ कयो मान सिंघासण वेठा, कहे कृस्न भाई; चाय हूवे जो कीणी वातरी, सुजदो फुरमांई. ॥ क० ६ ॥ तीन लाष सोनैया लावो, श्री भंडारमांही, दोय लाषना उंगा पातरा, एक लाष नाई. ॥ क०७ ॥ मोठव कीनो कृस्न नरेसर, साथे थई माई; जायसुं

पीया नेमजीणंदने, धनर माताई. ॥ क० ८ ॥ कहे देवकी सुंणरे जाया, जल नेणो वरसाई; मने छोडने ओरमावकी, मत कीजे न्नाई. ॥ ॥ क० ए ॥ ईसी सीषामण देई देवकी, फीर पाछी आई; सजम लेईने कहे मुंनीवर, गुरुवंदे पाई. ॥ क०१० ॥ उपरवाकारी सेरी सुजने, दीजे फुरमाई; कर्म तोमने जाउं मोक्षमे, जे जनही काई ॥ क० ११ ॥ त्रिक्षु पमीमा कहे मुनीसर, तपते लोगाई; लेई आग्या कावसग कीनो, मसांणन्नो मजाई. ॥ क० १२ ॥ ज्ञांन घोमेपर चढ्या रूषेसर, तनमन हूलसाई, कर केसरीया उर ढीया मुनी, कर्मकटक मांई ॥ क० १३ ॥ एक पूदगल उपर नीजर राषने, धीरज मन लाई; चीत न जांणदे ओर ठीकाणे, ध्यांनसु कल ध्यांई ॥ क० १४ ॥ सोमल सुसरो देष कोप्यो, नीली माटी लाई; पाल वांधने पीरा धरीयां,

द्या दील नांई. ॥ क० १५ ॥ पीचमी नीपरेष दषद्स, सरीर वेदम थाई; नाके सल नही घाल्यो मुनीवर, परम रस पाई. ॥ क० १६ ॥ केवल लेई मुक्त वीराज्या, घर न्हातो पाई; रीष चोतमल कहे मुंनीवरने, नित सिवरो न्हाई. ॥ ॥ क० १७ ॥ तरूके उठ श्रीनेमजीणंदने, चाल्यो क्रुस्न न्हाई; वीचमे जाता देष स्मोकरो, द्या दील आई. ॥क० १८॥ इंटरास एकदले जासी, जरा जीरण थाई; गज वेठांले इंट एकीकी, मेली घरमाई. ॥ क० १९ ॥ जाय वंदे श्रीनेमजीणंदने, न देष्या नीज न्हाई; किहों मुज वंधव कहे नेमीसर, मुक्तगढ मांई. ॥क० २०॥ कालश्मे कारज सीध, कीम कीधो मुज न्हाई; जीम स्मोकरने साज दीधो, तीमही तुंम न्हाई. ॥ क० २१ ॥ समत अठारे वर्स अठावने, श्रावण मास न्हाईः वद सातम दीन नगरजोधाणेः जोम्ड जुगत

गाईः ॥क० २२॥ ईती संपूर्णम्. ॥

॥ नं० ॥ ८१ ॥ ॥ दोहा ॥

दसदांन ए चालीयाः सुत्रठाणायंगमायः सावधांन थई सांभलोः सहू कोई चीत लगाय. ॥ १ ॥ देवणरो नामदांन हेः छुटी मत करा तांणः ओलषो सुध भावसुंः जीनवर वचन प्रमांणः ॥२॥ धर्मदांन प्रसससीः अधर्म देणो निषेदः आठमे मुनज जे करेः ज्यारे लागे मुगत उमेद. ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

॥जीवन मोराहो नाथ त्रीहूणी सु करु ए राग छे॥

अणुकंपा दान जाणीये, दूपीया देषे वहू जीवः भवक जीनहो; वेदनी कर्मना पीडीया, करता देषेरी वहो. ॥ भ० १ ॥ दशदान जीनवर कया. ॥टेर०॥ उपत्रपानो पीडीयो,

काया जावे त्राग. ॥ ज्ञ० ॥ हीए दीन त्रापे घणो, कहो कोई पुनवंतजी वहो. ॥ ज्ञ०द०२॥ डूपीया जीवने देपने, ऋणुकंपा मन लाय. ज्ञ० जीवाजीव जांणे आपसारपा, ऋणुंकंपा आण ठोकाय. ॥ ज्ञ० द० ३ ॥ धन तणी मुरछा घटी, जददे रीजे दांन. ज्ञ० जीव दया मन उपजे, जदष रचे धनधांन. ॥ ज्ञ० द० ४ ॥ मोह अनुकंपारो नाम लेई, दया देवे उथाप. ज्ञ० सुत्रमे नाम चाल्यो नही, वोले उघाको पाप. ॥ ज्ञ० द० ५ ॥ संग्रह दान डूजो कयो, जीव करे त्रायने तोवा. ज्ञ० वंदीवान ठोकायदे, परता देपेरावा. ॥ ज्ञ० द० ६ ॥ सीःतावकेने वेसाणने, देवे घणेरी मार. ज्ञ० पंचमीलाय ठोकायदे, करले उणांरी सार. ॥ ज्ञ० द० ७ ॥ मोह घटी ममता मीटायने, देवे जीव टोकाय. ज्ञ० धनने ईश्वर जांणने; परचे ने देवे चीतलाय. ॥ज्ञ०द०८॥

ज्ञयदांन तीजो कयो, आपग्र गोचर देवेवताय. ज्ञ० दांन देवे तीणने वीहतो, जाणे मारी कष्ट पीमा टलजाय. ॥ज्ञ० द० ए॥ कालमीती दांन चोतो कयो, लोकांरी रापे कांण. ज्ञ० द्रवष रचेलारे घणो, मां सरो करे मकाण. ॥ ज्ञ० द०१०॥ तीयो वारीयो करे,सराध करीने जीमाय. ज्ञ० वरसी ठमासी करतां थकां, द्रवष रचतां दीन जाय ॥ज्ञ०द०११॥ लज्यादांनज पांचमो; वेठो लोकां मांय. ज्ञ० दान देवे ठे लाजतो, कोई मांगे ज्ञीप्यारी आय. ॥ ज्ञ० द० १२ ॥ परणी जे ज्ञांणेजे ने ज्ञांणेजी, तीणरो मुसालो करावे ज्ञ० पईसा परचे लाजतो, वाजंत्रे वीरो वधावे ॥ ज्ञ० द० १३ ॥ गर्न्नदान ठठो कयो, सनमे रापे अन्नीमान. ज्ञ० चारण न्नाट न्नोजग वली, गर्व करी देवे दान. ॥ज्ञ०द०१४॥ अधर्म दान ठे सातमो. वेस्यादीकनो जाण ज्ञ० कोइ

देवे धर्म जांणने, हूवे समकीतनी हाण. ॥ न० द० १५ ॥ स्वांन मंजारी वाजरी, नील थोरीरी जात. न० जांणे मारे काम आवसी, योकरसी जीवांरी घात. ॥ न० द० १६ ॥ हिसक जीवांने पोषतां, अतीचार वले लागे. न० धर्मजांण नही पोपणा, जीणरा करुवा फल लागे. ॥ न० द० १७ ॥ पढमा धारी श्रावग नणी, अधर्मरीपांतमे घाले. न० नगवंत च्यार तीर्थ कया, मुर्ष पोटी श्रद्धामाहे रापे. ॥ न० द० १८ ॥ धर्मदांन ठे आंठमे, देवे सुपातर जाण. न० आठ कर्मने पय करी, जाय पोचे नीरवाण. ॥ न०द० १९ ॥ पंचमाहाव्रत पालता, मोटा गुणांरी पांन. न० सुमत गुपत नणी, पाले पांच आचार. ॥ न० द०२० ॥ वावीस परीसा जीपता, मोटा गुणांरी षांन. न० निरलोनी नीरलालची, ज्यांने अटलक दांन. ॥न० द०२१॥ असांणपांण षादमने

सादमे; च्यार आहारनी जात. न० वस्त्रपात्र कंवलपाय पुछणो, ज्यांने उलट दांन दीजे नर घाथो. ॥ न०दा०२२ ॥ आणंदसरी पाछलमकया, जीनमारगरा जांण. न० ज्यांने दीयां पाप कहे, कूमी करे पांचांतांण ॥न०द०२३॥ करती दान नवमो कयो, जसमे मारे कांम. न० मुकलावोने पेरावणी, ईम परचे संसारमे दांम. ॥न०द०२४॥ कथंती दान दसमो कयो, उजमणो करावे; हांती आंमी सांमी देवे, वातां घणी वणावे. ॥ न० द० २५ ॥ ईसका न्नाव जीनवर कया, पूनवतरे आवेदाय. न० श्रावग गुंमानचद ईम कहे, सुणने पोटी अर्द्धमोसराय. ॥न०द. २६॥ संवत अठारे चीहूंतरेः सेरपीपाड मजारः नः देवगरु प्रसादथीः पांमी समकीतसार. ॥ न० द० २७ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं. ॥ ८२ ॥

॥ पुजजी पधारो हो नगरी हमतणी ए राग. ॥

श्रीजीनवाणी होई मृतसारसीः मीठी साकर दाषहोः चतुरनरः सुणने सरध्यां हो पातीक परहरे; हूवे शिवपुररी अन्नीलाप हो. ॥च०१॥ गरव न कीजेहो कीणही वातरो, गर्व्वकीया गुण जायहोः च० ज्ञांनी न्नाष्याहो आठ प्रकारना; ठाणायंगरे मायहो. ॥ च० ग० २ ॥ पले वोले हो मद करे जातनो, तेतो माता जाण हो. च० मरने उपजे हो न्नीष्टारी षांनमे, चूरएयां लटारी षांन हो. ॥ च०ग०३ ॥ इंद्रीहीणी हो हूवे जीवरे, पांच इंद्री देषाय हो. च० न्नव श्रमांहे हो न्नटके दुष लहेः सुष नही पामे कोय हो. ॥च०ग० ४ ॥ कूलमे वाप तणो कोई मद करेः तो तीणमे उपजे हेलहो. च० बुकस हूवे हो मुरष जीवका, तीणरा मायबापमे न्नेल हो.

॥ च०ग०५ ॥ बलरो मद कीयां निरमल होवेः तीको तृणो न सके तोरुहोः च० माषी माठरने पतंगीयाः फीरतो फीरे ठोरर हो. ॥च०ग०६॥ रुपतणो कोई गर्वज कीयां थकां, मरजदगदारी जात होः च० तुंतुं करतो गलीयांमे फीरेः ठेर्हे तो वावे लातहो ॥ च० ग० ७ ॥ तप जपरो कोई मुर्ष मद करेः सांसरीषो नही कोय होः च० बोकरुो हूवेहो बोवो कर रयो मनषजनम देषोयहो. ॥ च०ग०८ ॥ लाभ कमावण लावण मद करेः मारे तुटी अंतराय हो. च० तेतो मरने हूवे कूतरोः घरर फीरतो टुकरा पाय हो. ॥ ॥ च०ग० ए ॥ ज्ञांन ज्ञएयांरो मनसुं मद करेः वचन सुधुजावे होटहोः च० तोपसु सुरष त्रीजंच सारषो, रहे जनम लगे ठोट हो ॥च०ग०१०॥ परीवार ठकूराईनो मद आचरेः कहे मारा मोटा भाग हो च० आवे जावेमांने वांदे घणा, तो

मर हूवे सर्पने काग हो. ॥ च० ग० ११ ॥ ईम जांणीने होमदमत आदरो, जो चावो कूसलने पेमहोः च० रावण पदमोतर जीम दूपल हेः परनारीनो वली एमहोः ॥ च०ग१२ ॥ समत अठारे हो वर्स चहोतरे; भाद्रवो भरमास होः च० सुत्र देषीने हो चोतमलजी कहे, पालीपीठ चोमास होः ॥ च० ग० १३ ॥ ईती संपूर्णम्ः ॥

॥ नं० ॥ ८३ ॥

॥ कोयलपर्वत धुधलोरे लाल ॥ ए राग ॥

सुत्रन्न गोतीसत कपेलफेरे लाल, चाव्या चवदे बोलहोः भवकजीनः वीरजीणंद वतावीयारे लाल, सुण गांठहीयारी पोलहो. ॥भ०१॥ कर्णीसारु सुप पांमीये लाल, कयो पोते जीनेसररायहो. भ० तहत करीने सरदजोरे लाल, संकारापो मतीकायहो. ॥ भ० क० २ ॥ भव्य

द्रव्य देव असंयतीरे लाल, करे कष्टनी तेगहो;
जगतनो भवनपती हुवेरे लाल, उत्कष्टो नवग्री
वेगहो. ॥ भ० क० ३ ॥ आराधक साधने साद-
वीरे लाल, ज्यांरी ज्ञांनी वताई वीधहोः भ०
जगनतो देवलोकपे लमेरे लाल; उत्कष्टो स्वार्थ-
सीद्ध हो. ॥भ०क०४॥ वृधिके साधूने सादवीरे
लाल, लगावे संजममे दोपहोः भ० जगतनो
भवनपती हूवेरे लाल, उत्कष्टो पेलो देवलोक
हो. ॥ भ० क० ५० ॥ पारसनाथजीरी साधवीरे
लाल, ते कीम गई ईसाण होः भ० उतरआधक
ते थईरे लाल, सुलन घाली हांणहो. ॥भ०क०६॥
आधक श्रावण श्रावगारे लाल, लोपे प्रभुजरी
आंणहोः भ० जगनतो भवनपती हूवेरे लाल;
उत्कष्टो जोतषी वीमांणहो. ॥ भ० क० ७ ॥
श्रावग नेवले श्रावगारे लाल, ते आराधक होय
होः भ० जगनतो देव लोकपे लमेरे लाल;

उत्कष्टो बारमे जायहो. ॥ भ०, क० ८ ॥ असं जती तिर्यंचकाल करीरे लाल; जगनञ्जवनपती अवदात होः भ० उत्कष्टो विंतर हुवेरे लाल ज्यांरी सोले जातहो. ॥भ०क०ए॥ बाल तपसी कालकरीरे लाल, जगन ञ्जवनपती जांण हो भ० उतकष्टो हुवे जोतसीरे लाल, एकवचन ने बीजो ठांम हो. ॥ भ० क० १० ॥ कीतोलीया साधने साधवीरे लाल, ज्यांरो सुणजो मर्म हो; जगनतो ञ्जवनपती हुवेरे लाल, उत्कष्टो सो धर्म हो. ॥ भ० क० ११ ॥ शेन्यासी जात अंबर तणीरे लाल; जगन ञ्जवनपती जांणहोः भ० उत्कष्टो जावे पांचमेरे लाल; श्रीजीनवचन प्रमाणहो. ॥भ०क०१२॥ निंनवजमाली जेहवारे लाल; दे जीनजीरा वचनने फेठहो. भ० जगनतो ञ्जवनपती हूवेरे लाल, उत्कष्टो लंतक हेठहो. ॥ भ०क०१३ ॥ सनी तिर्यंचकाल करीरे लाल;

जावे ज्ञवनपती मजारहो. भ० उत्कष्टो जावे
ए्तलोरे लाल, जीणरो नाम संसार हो. ॥ भ०
क० १४ ॥ गोसालामती अज्ञोगीयारे लाल;
क्रीया करीने राषे आस हो. भ० जगनतो ज्ञव-
नपती हूवेरे लाल, उत्कष्टो बारमे वासहो. ॥
ज्ञ० क० १५ ॥ सयलींगी ब्रांमण समकतीरे
लाल; जगन ज्ञवनपती जांणहो. ज्ञ० उत्कष्टो
नवग्री तणोरे लाल, उपरले ग्रीगके वीमांणहोः
॥ ज्ञ० क० १६ ॥ चवदेबोलांरी गीणती करीरे
लाल, वृद्धमान जीणचंदहो. ज्ञ० सुत्रज्ञगोतीमे
चालीयारे लाल, ईम ज्ञाषेरी पीरायचंदहो ॥
ज्ञ० क० १७ ॥ ईती संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० ८४ ॥ ॥ हिरुांनी राग ॥

ओ जीव काल अनादी रुलीयो, नरज्ञवनीठ
जपायोरे; मान मठरकी मोह मायामे, मुर्षे

अहीले जन्म गमायोरेः १ काया काचीरेः का० ज्ञवजीवां सुणजो, जगवंत ज्ञाषी साचीरे. ॥काः टेर॥ ज्ञमतर लष चोरासीमे, डूष भुगत्या अती ज्ञारीरे; अब चेते नही मनमे मुर्ष, थासी स्युंगती थारीरे. ॥ का० २ ॥ ठमन मगन जोए सेती, सतसगत नही सुजीरे; पायो नरज्ञव रतन चींतामण, सोहार गमायो मुंजीरे. ॥ ॥ का० ३ ॥ अयुं अथीर ओसजलबिंडू, जीम अंजलीनो पाणीरे, सुष संपती रजनीको सुपनो, जीम धन ईथर पीछाणीरे. ॥का०४॥ योसंसार असार कारमो, मतीथीर चाकर मानोरे; अरीहंत ज्ञाष्यो अथीरज एसो, जेसो पाको पीपल पानोरे. ॥का० ५॥ समत अठारे वर्स ठीयंतरे, सुकल पषवे साषीरे; अज मेरमे जोडी जुगतसुं, लालचंद ईम ज्ञाषीरे. ॥ का० ६ ॥

॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ नं० ८५ ॥

॥ श्री नवकार मंत्रनो ध्यान धरो. ए राग. ॥

सतगरु उपदेस घणोही देवे, पीण उलट
ुधउंदो लेवे; न्नारी कर्मों कदे नही न्नीजे. १
कहो तीणने सीपामण कीम दीजेः ॥टेर०॥ जीण
ीवरी न्नवथी तनही पाकी, तीणरे ससार घणो
वाकी, कोरकु मांठ कदी नही सीजे ॥का०२॥
नेडक निंदया मांहे जन्म पोवे, वले पारका
छेड़ गाना जोवे, उंतो ममतारे फंद पमीयो
ीजे. ॥ क० ३ ॥ आद अनादरा गोला पावे,
ीणधेठा धर्म नही पावे; सुन्नपांने नही पतीजे.
क० ४ ॥ पाप कर्मरी नही सका, तीके दया
ार्गसुं वरते वका, आमवरमे पांच्या लीजे.
क० ५ अमवो टेपने हीरण मरे, वावरमांके
ाठे वाव पमे; ए डष्टंते छूजे अंग जोईजे ॥
क० ६ ॥ न्नारी कर्म केई नरनारी. ज्यांने

पापरी वात लागे प्यारी; धर्मरी वातसुं नही धीजे. ॥क०७॥ कू गुरुकू देवांरो रसीयो, पांपीपुर मीथ्यात मांहे फसीयो; रीमझीम देषीने रिंजे. ॥ क० ८ ॥ लडाई बॉल करवाने त्यारी, परनी चावंत लागे प्यारी; तेपरी वात कयांसुं रिंजे. ॥ क० ए ॥ जो नीज आतमारो सुप चावो, तो नरत्नवरो लीजे लावो; ठीनश्मे आउषोठीजे. ॥ क० १० ॥ विरत समायक पालीजी, अनाचार अतीचार सहु टालीजे; कर्मकवण सहू गालीजे. ॥ क. ११ ॥ सावज वचन नही भाषीजे, समकीतने सेंठो राषीजे; हातपग पुंजीने मुकीजे ॥ क १२ ॥ सांज सवार पडीकमणो कीजे, हिरदा मांहे अरीहंता नाम लीजे; पचषांण करी पाप धोईजे. ॥ क १३ ॥ सांधारी सेवा कीजे, वले जन्म तणो लाहो लीजे; न्नव समुद्रथी उधरीजे ॥ क. १४ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ८६ ॥

कीणसुंई वादवीवाद न कीजे, वली वीस जीणांसु वीसेषजी; नांम कहूं ज्यांरा न्यारार ते सुणजो धर विवेकजी. ॥ १ ॥ वीस जीणांसु वादन कीजे, ए सतगरुनी सीषजी; चतुर हूवे तीके चीतमे धरजो; ठावी करवले ठीकजी. ॥ ॥ वी० २ ॥ पहेले बोले धनवंत सेती, वाद न कीजे कोयजी; दीधांरी तो चढेज देवल, निरधन दुगरश रहे जोयजी ॥वी० ३॥ वीजे बोले बलवंत सेती, नही बराबरीनो कांमजी, लंकागढ लुंटने लीधो, देषोली ठमणने रांमजी.॥ ॥वी० ४॥ तीजे बोले वहु परीवारे, तुरत लगावे लंकजी; ज्यांसु जोर कीया नहीं जीपे, ते रावने करदे रंकजी. ॥ वी० ५ ॥ चोथे बोले तपसी सादूजी, ऊगड्यां वधे जंजालजी, कोपे चढ्यो काढे तेजुलेस्या, देवेकोमांमीन पनेवालजी. ॥

॥ वी० ६॥ पांचमे बोले गुरांसेती वादकरे अव नीतजी; जमालीने लीजो जोई, ए रूमी कदे नही रीतजी. ॥ वी०७ ॥ छटे बोले राजासेती, नहू तजे अलुधजी; पलक माहे करदेवे परवस, पावे नवी मायनो दूधजी. ॥ वी० ८ ॥ सातमे वोले नीच मुर्षसुं, वाद कीयां पके षाधजी; आठमे बोले क्रोधीसुं कीयां, उपजे दृष असमाधजी. ॥ वी० ए ॥ नवमे वोले जुवारीसुं, वरज्यो वाद वीशेषजी; पांचे पंकव द्रोपदा हारी वले नलराजा लेवो देषजी. ॥ वी० १०॥ दसमे वोले चोर चूगलसु, वाद कीयां पके हांणजी; इग्यारमे वोले रोगीसेती, मत करो षांचातांणजी. ॥वी०११॥ बारमे वोले अती अहंकारी, सुं मत करो षांचसु जांणजी; तेरमे बोले जूटा बोलो, जूटी बोले वांणजी. ॥ वी० १२ ॥ वकेरां सुं वाद न कीजे, ए यया चवदे बोलजी;

पंनरमे हिंस्या धर्मिसेती,वाद कीयां घटे तोलजी. ॥ वी० १३ ॥ सोलमे बोले शिलवंतसुं, सतरमे नानो बालजी; अटारमे बोले अतबुढाथी, वाद कीयां बोले गालजी. ॥ वी० १४ ॥ उगणीसमे बोले दांने सरसुं, हीरू कदे नही होयजी; कीरपण पण ज्यांने कीणवीध जीते, हीये वीमासीने जोयजी ॥वी०१५॥ वीसमे बोले ज्ञांनी सेती, ज्ञांनी गुण गंभीरजी; इंद्रभुती अहंकारे चाल्यो मदगाल दीयो माहावीरजी. ॥ वी० १६ ॥ वाद कीयां कोई भलो न केसी, जोवोहीये वीमासजी; रुपीरायचंदजी जोभी जुंगतसुं, मेरूते नगर चोमासजी. ॥ वी० १८ ॥ ईती संपुर्णम् ॥



॥ नं० ८७ ॥

मोह मीथ्यातकी निदमे जीवा, सुतोरे काल अनंत; भवरमांहे भटकीयो जीवा, ते सांभल

वीरतंत. १ जीवा तुंतो जोलोरे प्रांणी, भ्रमरु लीयो संसारः टेरः अनंतजीन हुवा केवली जीवा, उत्कष्टो ज्ञांन अगाध; ईण जवसुं लेषो लीयो जीवा, तोही न कही थांरी आद. ॥ जी० २ ॥ प्रथ्वी पाणी अगनमे जीवा, चोथी वाउकाय; एकीकी तो कायमे जीवा, काल असंख्यातो जाय. ॥जी० ३॥ पांचमी काय वनस्पती जीवा, साधारण प्रतेक; साधारणमे तुं वस्यो जीवा, ते वीवरो तुं देष. ॥ जी० ४ ॥ सुई अग्रनी गोदमे जीवा, श्रेण असंख्याती जांण; असंख्याता परदर कह्या जीवा, गोला असंख्य प्रमांण. ॥ जी० ५ ॥ एकेका गोला मध्ये जीवा, असंख्याता सरीर; एक सरीरमे जीवरा जीवा, अनंत बताया वीर. ॥ जी० ६ ॥ ते माहथी जीवक्ष जीवा, मोक्ष जावे दग चाल, पीण एक सरीर षाली नही हुवे जीवा, नही हुवे

अनंते काल. ॥जी०७॥ एकरअन्नवे संगे जीवा, न्नव अनंता होय; वले वीसेपे तेहनाजी, जनम मरण तुं जोय. ॥ जी० ८ ॥ मोटा पाप करी तीहां जीवा, उपनो नरक मजार; ठेदन न्नेदन वेदना जीवा, ते सही नीरधार ॥ जी० ए ॥ ज्ञुध त्रषा सीत तापनी जीवा, रोग सोग न्नय जांण; दूष न्नोगवे जे नारकी जीवा, कर्म तणे अहीनांण. ॥ जी० १० ॥ नरग थकीनी गोळमे जीवा, अनत गुणो वीस्तार; अनेक पुदगल पुरीया जीवा, ईम न्नमीयो संसार. ॥जी०११॥ पेट हजार ने पांचसे जीवा, ठतीस उपर धार; जन्म मर्ण एक महूर्तमे जीवा, करआया वहू-वार. ॥ जी० १२ ॥ एकडीसु नीकळ्यो जीवा, इंडीपाई न्नेय, पुन्याई अनंती वधी जीवा, वाल-शिक्षा करे जोय. ॥जी०१३॥ ईम तेइंडी चोईंडी जीवा, दोयरलापजजात, दूष दीठा ससारमे

जोवा, सुणतां इचरज वात. ॥ जी० १४ ॥ जीन्न वेइंद्रीने वधी जीवा, नाक तेइंद्री जाण; आंष चोइंद्रीने वधी जीवा, कांन पचेंद्री प्रमाण. ॥ जी० १५ ॥ जलचर थलचरषे चरुजीवा, उरपर जुजपर लेष; सबलोनी वलाने न्नषे जीवा, वेर मांहोमाहे देष. ॥ जी० १६ ॥ न्नव न्नटकंतां नीवसे जीवा, पाई नरनी देह; गर्न्नावासे छूष सह्याजी, कही सुणावुं तेह. ॥ जी०१७ ॥ माता रुधीर वीर्य पीता जीवा, प्रथम लीनो आहार; कूल थांणी पाणी थकी जीवा, दीनश वलीयो तीवार. ॥ जी० १८ ॥ अकठ कोमरु आंवली जीवा, अगन वरणकर लाल; तिणसुं हीहिवे अठगुणी जीवा, गर्न्नमे वेदना न्नाल. ॥ जी० १ए ॥ जनमतां कोमगुणी जीवा, मरतां कोमा-कोरू; जनम मरणनी जगतमे जीवा, जांणो मोटी पोरू. ॥ जी० २० ॥ पग ऊंचा माथो तले

जीवा, आंषां उपर हाथ; जाल जंजाल विष्टा मधे जीवा, वसीयो कयो जगनाथ. ॥ जी० २१ ॥ ए गर्भे डुष ते सह्याजी, ठोरु रयो वरस वार; जीण थांनक मर उपनो जीवा, वारे वर्स वलीधार. ॥ जी० २२ ॥ देस अनार्यमे उपनो जीवा, इन्द्री हीणी थाय, आउषो उंठो थयो जीवा, धर्म कीयो किम जाय. ॥ जी० २३ ॥ कदा सनरत्नव पामीयो जीवा, उत्तमकूल अवतार; देही नीरोगीपां मने जीवा, जायज मारो हार. ॥ज़ी० २४॥ टग पासीगर चोरटा जीवा, जीवर कसाई न्यात; न उपनोने न मुवो जीवा, ईसी नही कांई वात. ॥ जी. २५ ॥ चवदेही राजलोकमे जीवा, जन्म मर्णरा जोरु; वालाग्र मात्र कठे जीवा, पाली न राषी कठे ठोरु. ॥ जी.२६॥ एहीज जीव राजा हुवो जीवा, एहीज हुवो फकीर; एहीज जीव हाथी चढ्यो जीवा,

मस्तक आएयां नीर. ॥ जी. २७ ॥ ईम संसार ज्नमतां थका जीवा, पांमी सामग्री सार; आदरने ढीटकायदे जीवा, जायज मारो हारजी. ॥ जी. २८ ॥ षोटा देवजसरधीया जीवा, लागो कुगरुने केरू; षोटो धर्मज आदरी जीवा, चीहुंगती कीधा फेर. ॥ जी. २९ ॥ कूगरु ज्नरोसे जीवा, युं रूवरुीयो मुढ; ज्नलने जा करतोऊलरी रुढ, जीवहणे धर्म जांणीयो. ॥ जी. ३० ॥ कोला पाक रेवती कीयो जीवा, ज्नेल्यो ज्नगवंत ज्नाव; सीहे अणगार न वेरीयो जीवा, देषो सूत्रन्याव; ॥ जी. ३१ ॥ प्रथ्वी पांणी अगन वायरो जीवा, वीनासपतीत्रस काय; कांम धर्म हेते हणे जीवा, ते अवतरीया माय. ॥ जी. ३२ ॥ ढंगोने वले मुषपती जीवा, मेरु जीतरा लीध; क्रीया करतुत वाहरो जीवा, ऐको काज न सीद्ध. ॥ जी. ३३ ॥ च्यार ग्यांन गमायने जीवा, नर्ग सातमी जाय; चवदे पुर्व ज्नणी करी जीवा,

ीया नगरे माय. ॥ जी. ३४ ॥ भगवंत धर्म ायां पछे, युंही न जावे फोक; कदाचीत उत्कष्टो ळे जीवा, तोही अर्ध पुदगलमे मोक्ष. ॥ जी. ३५ ॥ सुक्ष्मने बादरपणे जीवा, मीले वार्गणा सात, एक पुदगल परावर्तनी जीवा, ऊणी घणी छे वात. ॥ जी. ३६ ॥ अनंता मुगते गया जीवा, टाली आत्मदोष, न गया न जावसी जीवा, एक मुलारा जीव मोष. ॥ जी. ३७ ॥ एहवा भाव सुणी करी जीवा, श्रद्धा आई नांह; ज्युंही आयो ज्युंही गयो जीवा, लष चोरासी माह. ॥ जी. ३८ ॥ तप जप, संजम पालने जीवा, टाली आतम दोष; जाय अर्ध पुदगल मधे जीवा, अनंत चोईसी मोष. ॥ जी. ॥ ३९ ॥ कवहीकतो नरके गयाजी, कवही कहु वो देव; पाप पुन्य फल भोगवी जीवा, न मीटी मीथ्यातनी टेष. ॥ जी. ४० ॥ केई उतम नर

चेतीया जीवा, जांएयो ईथर संसार; साचो मारग पालने जीवा, पहूंता मोक्ष मजार. ॥ ॥जी. ४१॥ दांनशिल तप ज्ञावना जीवा, एहथी राषो प्रेम; कोम्न कल्यांण बे तेहने जीवा, रुष जेमलजी कहे एम. ॥ जी. ४२ ॥ईती संपुर्णम्ः॥



॥ नं० ॥ ८८ ॥

॥ आबे लाल ए राग. ॥

विचरंता गामोगाम नेमजीनेसर सांम; आबे लाल, नगरी हो द्धारामती आवीयाए. ॥ १ ॥ कृस्नादीक नरनार, सहु मीली परषदा बार; आः नेम वंदणने आवीयाए. ॥२॥ देवे देशना जीनराय, आवे सहुने दाय; आः रुषमणी पुबे नेमने ए. ॥ ३ ॥ पुत्रने मारे वीजोग, हुवो हुसे कर्मनो ज्ञोग; आः ज्ञगवंतजी मुज उपदीसोए. ॥ ४ ॥ पुर्व ज्ञव विरतंत, तव ज्ञाषे ज्ञगवंत. आः

कीधा कर्मने बुटीयोए. ॥ ५ ॥ हुंती तुं वीप्रनी नार, पुर्वन्नव कोईवार; आः उपवन रमवा संचर्याए. ॥ ६ ॥ जोता वनह मजार, दीठो एक सहकार; आः मोरनी वीहांणी तीण हेठले ए. ॥ ७ ॥ साथे तुमारो नाथ, इंम ऊाल्या हात; आः कूकूवरणा ते थयाए. ॥ ८ ॥ नवी उंलपे ते मोर, करचा लागी सोर; आः सो लेगनी नवी सेवीयाए. ॥ ए ॥ उंनो गाजे जोर, मधूरा बोले मोर; आः चीहुंदीस चमके दांमनीए.॥१०॥ पठे वुठो मेह, धुवणा इंना तेह, आः मोरंनी इंना सेवीयाए. ॥ ११ ॥ बाध्यो तीहां अंतराय, ईम बोल्या जीनराय; आः सोले वर्स वीरहो पड्योए. ॥१२॥ हस्तां बांधे कर्म, नवी ओलषे जीनधर्म; आः रोयां नवी बुटे प्राणीयाए. ॥१३॥ देसना सुण अन्नीराम, रुपमणी रांणी तांम, आः सुधो सजम आदर्योए. ॥ १४ ॥ थीर राषी

मनवच काय, मुक्तपुरीमें जाय. आः राजवी जे रंगे न्नणेए. ॥ १५ ॥ ईती संपुर्णम् ॥



॥ नं० ॥ ॥ हिन्दानी ए राग. ॥

लष चोरासी मांहे न्नमंता, काल अनंत गमायोरेः कोईक पुन संजोग करीने, डुर्लन्न नरन्नव पायो रे. ॥ १ ॥ चेतन चेतो रे,२ ओकाल न्नयंकर ऊटके लेसी रेः चे० टेरः आ रजदेत्र उत्तमकूल मीलीयो, देह नीरोगी पाई रेः सुध आचारी सतगरु मीलीया, पुनमे कसर न काई रे. ॥ चे० २ ॥ नरन्नव रतन चिंतामण सरीषो, जो हुवे सो कीजे रेः सुर्प वीषीया रसके माहीने, एलजनम मत षोवे रे. ॥ चे० ३ ॥ बालपणे लरु-कां रे साथे, वीरथा षेल गमायोरेः न्नर जोवनमे आंधो हुय गयो, त्रीया संग लपटायोरे. ॥ चे० ४ ॥ जोवन मदके फुले गर्वमे, मनमे बोत्त

मगरूरी रेः देह तणे तो पेह न लागे, राघे फीटक सींडुरी रे. ॥ चे० ५ ॥ जोवन वीत जराऊर लागी, सीरपर धवला आयो रेः नेण तो दोनु ऊरवा लागा, कंपण लागी काया रे. ॥ चे० ६ ॥ वासुदेव बलभद्र मुरारी, चक्रवती जे सुरारेः ईंद्र नरेंद्र धरणेंद्र केवावे, काल करगया सव पुरारे. ॥ चे० ७॥ काल वली केहने नही ठोरे, क्या राजा क्या रांणारेः ठीन मांहे जीव घांटी पकरे, चिरी जीम सिंचांणारे. ॥चे०८॥ न्याती गोती सार न बुजे, सव मुत्तलवके गरजी रेः रोकरीयो अव मरवो बेठे, करे रामसु अरजी रेः ॥ चे० ९ ॥ एवी जांणीने भव प्रांणी, धर्म ध्यांनथे कीजोरेः परभव मेये सुष पावोला सीव रमणीनें वरसो रे. ॥ चे० १० ॥

॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं०८ए ॥ ॥ राग ॥ फागणरी ए ॥

जतनांसुं तो जीतनो कोई, काम करे सोई सागेरेः तीन वातांमे डोस संता चोरू लागेरे. ॥ १ ॥ सगला सुण लीजो, निरपक्षी पथ मारे दाय आवेरे; रीसांमत वलजो. टेरः पातरांने पाणी जागा, नीजरो देष लोनीरे; सुणजो संतां मनसुं, चोरी छानी कोईनीरे. ॥ स० २ ॥ जती संवेगी साडु प्राये, पातरामे पावोरे; घरवासीरे बोलो कांई, काम आवेरे. ॥ स० ३ ॥ आदा कर्मि डोस संतां, चोरू हेला पारूरे; मोललीयो काचोरू आंपां, लेवां पंचम आरेरे. ॥ स० ४ ॥ कोई ग्राममे जावे सादू, वासरमे फोलेरे; पाली आवे पांणी केरी, रूव रूव वोलेरे. ॥ सं० ५ ॥ श्रावगजीने केवे न्नाई, धोवण ओठो आयोरे; गाम सारा मांहे रुंमी पीटे, न्नोलो न्नायोरे;

धोवण करदीनो, वावा पाणी धरदीजो. ॥ ६ ॥ दूजे दीनतो फटके आपां, पातरा न्नर लावोरे; नाहक आंपे जताव्यातरी, घोरू घुमावोरे, दोषण लागेला. ॥ नि० ७ ॥ साडुजीरी जाची पुजी, साडू जगा सोवेरे; ज्ञानानी तो च्यार चीजां, सादू न लेवेरेः असलीजेनका. ॥ नि०८ ॥ थांनकमे तो दोष सादू, परदेसी फुरमावेरे; हवेलीमे दोशवेतो क्यु नहीं गावेरे· वांने पुछोनी ॥नि० ए ॥ आपमे जो रेलो आवे, दीज्यो आगे ठेलीरे; हवेलीमें दोश लागेः सगलां पेलीरे ॥स०१०॥ परना अवगुण काढो सर्ता, अपना अवगुण ढांकोरे, साची वातां जोगारत्नको, मारग वांकोरे. ॥ स० ११ ॥ थांनक वाला बोले प्यारे, थांनक हे नीरदोसीरे; जांनन वाले सवही जांणे, आकद होसीरे. ॥ स० १२ ॥ असल फकीरी पेंमो न्यारो, जांनन वालो जाणेरे; असल फकीरी

जदमे जांणुं, निंध्यां न आंणेरे. ॥ स० १३ ॥ नथमलजी माहाराज सामी, निरपक्षी गुण धारीरे: चोतमल कहे ए सीमे पीण, मनमे धारीरे. ॥ स० १४ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ए० ॥ ॥ दोहा ॥

अहो एक कलीयुग वीषे, केई तज्या सकल वोपार: सेहलीला अरु फाटको, ईनहीको अधीकार. ॥ १ ॥ सधन थकी नीरधन हुवे, स्वस पर आधीन: सनीपात ज्‍यु स दसा, भये दीन परवीन. ॥ २ ॥

॥ सुंणीयोरे वाबु ए राग ॥

सुंणीयो नर सेणा, मतीय करोरे तुमे फाटका. सुः घरका रहो न घाटका. सुः देते हे सतगरु चाटका.सुंः मत पीवो जेर भर वाटका.॥सुः ख्याल वण्याहे जाटका टेर:॥आरत ध्यांनरहे नीत मनमे,

धर्मध्यांन नही सुजे जो कोई मीले अलीयां गली-
यांमे, प्रथम भावकूं बुजेरे. ॥ सु० १ ॥ अबके
भईया तेजी भारी, सुंण जीव होय गयो राजी;
घरमे आय कहे सुण प्यारी, करो रसोई
ताजीरे. ॥ सु० २ ॥ कंचन माहे करायदूं वाजुं,
करदूं पीलीज रद; भुसण सर्व भांतका भारी,
तो जांणीजो मरदरे. ॥ सु० ३ ॥ भांगांधोटे
तार जमावे, वजांरा विच जावे; ईनराहीमे
मदी हाली, ठांने भुसक्यां पावेरे. ॥ सु० ४ ॥
डेप कांमनी बोले कंता, डीसो बदन उदासी;
बोल्यो सटक पोलदेगेणो, नहीनो यार कांमी रे.
॥ सु० ५ ॥ बोली त्रीयामे पहेला बरज्या, भंगो
नही ए चालो; गेणो सबला मुग कीको, ईणकी
वाटम न्हालोरे. ॥ सु० ६ ॥ नेण लाल
बोल्यो त्रटकी, पोले ठे के नाही;
नही ठे गहणो, तुंकलासुं

जो मुजसे तुं करे जिंदगी, तो कूवे पऱवां जाउं;
हात जोऱ बोल्यो सुण प्यारी, वेगो एह बुला-
उंरे. ॥ सु०८ ॥ ज्युं त्युं चली चालीयो वांने, अव
वोरापे आवे; डुणो ड्रव्य व्याज अरुदुणो, कांटो-
लार लगावे रे. ॥ सुं० ९ ॥ ईतने सुणी वन आयो
अवधु, नेन पलक नही षोले; फरक आंप उनसे
नही,चांना जो कुछ वननज पोलेरे.सु०१०॥लटका
कर२ करे ऱऱोतां, जो कूछ वात वतावे, जावे
बजारपे वाले आवे, गांजा चऱस पीलावेरे. ॥
॥ सु० ११ ॥ पलक पोल कहे सुणरे वचा, माई
सक्ती डुकम सुनायाः ईतना फरक धरकघर मत
रषे, फीरतो अलष जगायारे. ॥ सुं १२ ॥ जाजा
कही शिप जवदीनी, कीनकुं नही सुणावोः
आय सदनधन सवचूंचायो, वाबो करगयो हावो
रे. ॥ सु० १३ ॥ मुलां फकीर जोतपी जिदा, ऱाव
ऱेरुका गावेः अकल वध सवकूंही धोके, फीर

दालीद्र जोग नही जावेरे. ॥ सुं० १४ ॥ ईण भव एह फजीती होवे, परभवमे दूष पावे; तो पीण भोले नर नही समजे, अदर ज्ञांन न आवेरे. ॥सुं०१५॥ बयालीस उगणीसे काती, चवदश चोमासी वारु, नवेनगर हलुकर्मि हितकूं वदी ढालए वारुरे. ॥ सुं० १६ ॥ रेपराजजी कहे सुप चावो, तो दीनमे इनने ढीटकावो; लाभ हांण करमां अनुसारे, धर्मध्यांन लीवलावोरे. ॥ सुं० १७ ॥ ईती संपुर्णम्. ॥

॥ नं० ॥ ए१ ॥ ॥ विणजारानो ॥

विणजारारेः देषी पोला च्यारः लष चोरासी चोवटाः ॥ वी० १ ॥ वाः थारे वालद लषकोरु, कर्म कीयाणोथे भर्यो ॥ वी० २ वी ॥ थारे छे दोय नार, एक गोरी डुजी सांवली. ॥ वी० ३ वी० ॥ सांवलीसु बहू हेत, ईणरो भरमायो तुं

न्नम्यो. ॥ वी० ४ वी० ॥ गोरी ले गुणवंत, इणरी
सीषे चालजो. ॥ वी० ५ वी० ॥ वार२ घर डूर,
सीरपर बोज लीयो घणो. ॥वी० ६वी०॥ सवलो
लीजोरें सात, आगे नही हट वाणीयो. ॥ वी०
७ वी० ॥ आगे ले थारो सेठ उठे लेषो मांगसी.
॥ वी० ८ वी० ॥ वीणज्या वीणज अनेक, शिव-
पुर पाटण वीण जीनही. ॥ वी०एवी० ॥ षासी
सगलोई साथ, लान्न टोटारो तुं धणी. ॥ वी०
१० वी० ॥ तुं कांई सुतो नचिंत, परवात्यो तारो
उगीयो. ॥ वी० ११ वी० ॥ आयो मुठी न्नींच,
हात पसारीने जावसी. ॥ वी० १२ वी० ॥ पांकी
हांकी देलार, गाको न्नरीया लाकका. ॥ वी०१३
वी० ॥ हांकी रहीरे मसाण, वालीने पाठा
वल्या. ॥ वी० १४ वी० न्नाई वंदवरी जोरू, वाल
न्नीया वील२ करे. ॥वी० १५ वी०॥ उन्ना मेल्या
रेंमेल, मातपीता कुरे घणा. ॥ वी० १६ वी० ॥

मोह मीथ्यातनी निंद, जीवको जाय परवस पड्यो. ॥ वी० १७ वी० ॥ सतगरु चोकीदार, हेलो देदे जगावीयो. ॥ वी० १८ वी० ॥ समय सुंदर कहे करजोरु, ममता मोह करोमती. ॥ वी० १९ वी० ॥ करजो कबु करतुत, सीवर मणी वेगीवरो. ॥ वी० २० वी० ॥

॥ ईती सपुर्णम्ः ॥



॥ नं० ॥ ए२ ॥

चेतन तु ध्यान आरत कीम ध्यावे, हारे नाहक कर्म संचावे. ॥ चे० टेरः ॥ जोजो ज्ञगवंत ज्ञाव देषीया, सो सोह, ?रतावे; घटे वधे नही रंच हूतामे, काहेकू मनकु लावे. ॥चे०२॥ जालत काल जो चिता अगनी, उपजत सोज वीणसावे; सोकातुर वीते दीनरेणीको, धर्मध्यांन घट जावे. ॥ चे०३॥ सुषसुं निंदन आतन रातन

अनउदक नही आवे; पहेरण उढण चीत न चाले तो, राग नरग सुहावे. ॥ चे० ४ ॥ भुगत्यां वीन तुटे नही कवही, असुभ उदे नही आवे; लादु कार सीरोमणी सोहीसो, हर्षसुं कर्म चूकावे. ॥ चे० ५ ॥ सुप न र्योतो दुष कीम रहेसी; एभी सात गुजरावे; कर्मबंध जुगतणही परूसीतो आ तमने रूंरूावे. ॥ चे० ६ ॥ प्रभु समरण अरु तपस्या करंतां, दूकृत रज रुटकावे; जेष्ट कहे समतां रस पीतांतो, तुरतही आणंद पावे. ॥ चे० ७ ॥

॥ ईती संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० ॥ ८३ ॥ ॥ लावणीए ॥

ले मांनव अवतार मती कर निंदयां२ रतन चिंतामण सार सांभल तुं वंदा, च्चारुं गतके वीचसे क्यो तुधांणी२ पचे कूटंवके वीच

वलद ज्युं घांणी, जरा लगी तुजलार करे पिंरू-
हांणीर. आयो आ रजपेत्र उत्मकूल प्रांणी, देषी
धन परीवार गर्व्नमे गंदार. ॥ ले० १ ॥ म्हान
अणी जल आयु जाय नीत वीतोर, सीरपर
घूमे कालमुढ रयो न चितो; लीयो न सुकृत
लार जाय तु रीतोर काची देहीकाज गर्व्न करे
ईतो, नही जगमे थीर वास सुणो मती मंदार
॥ ले० २ ॥ जमका लसकर पुर लग्या तुज केरू,
र सुरप संचे पाप आप जमतेरू, मातपीता
परीवार नही कोई नेरूर परूगुजरकी मार धार
घम ठेरू; पटक पछारू पाव आव अव जंदा र
॥ ले० ३ ॥ सुपना ज्युं संसार ईथर जग वासीर
करर पोटा कांमरुले चोरासी; सुतो तुं कीण
निंद विंद रूष पासीर मेलो मीलीयो आय
वीधरयो जासी, तजो पराई कथ भजो जीन-
चदार ॥ ले० ४ ॥ करर निंद्या कूरू जनम ते

षोयोर चलता हातीलार स्वांन ज्युं रोयो; ढोरू गुणेको म्हेल लाजअरु जोयोर तज मेवा पकवांन काग मुष षोयो; वहे सदाही षाल नीच मुष गिंदार ॥ ले० ५ ॥ तजो पराई वात माताका जायार कबु न लागे हात देहेपर काया; निसदीन भज जीनराज हीर गुण गायार हीये गुणांरी माल पेररे भाया; मानव भवको लाभ तजो सब धंदा. ॥ ले० ६ ॥ ईती संपूर्णम्ः ॥

॥ नं० ॥ ९३ ॥ ॥ लावणी ॥

देषी संपत पुत गर्भ मत कररेर सुपनासो संसार वार नही थीररे; बोले ऊंचां बोल तोल नही तील भररेर चार दिवसकाक बल अवल तुं कररे, सीरपर सांधे फाल कालसु डररेः नही थीर वासो कोय जोय तुं मररे. ॥ दे०१ ॥ धन जोबन वली रुप गर्भ कीम कीजे,२ थीर नही

जगमेंश्रात हातसुं दीजे,जोवन नंदीको नीर वहेत उंडीजे २ वीजलको प्रतीविंव रुप क्युं रीजे; वड़ा२ माहाराय गया सहू मररे.२॥दे०२॥छपन क्रोड़ जदू वंस हुवा एक सारी२ सोवन गढ सीणगार द्वार क्रुस्न मुरारी; कीयो कंस विधं सजरासिंध मारी२ नाथ्यो कालीनाग भुजाबल भारी, उग्रसेन फंदकाट राजपद धररे२ ॥दे०३॥ सोल सहेंश्र राजान सेव करजोडी२जादव सी-रसी जोड़ जगतमे थोडी: अभीमानी माहाराय दीया मदमोडी२ जादव वदीया जोर वहोतर कोडी: सोल वसंरा राज वेठा श्रीहररे.२॥दे०४॥ कंस न दीसे कोय कर्ण अभीमांनी २ केरव कुल सीणगार दुर्योधन मांनी, थीर नहीयोमां-नसुंनोहीये ध्यांनी:२ हरचद सीरधाराज नीच घर पांनी: पांडव गलीयां मांन जान सहू फीररे.२ ॥ दे०५॥ जादव सीरपा मांन रया नही कोई,२

कंचन लंकाद्वार ठार थल होई: अरट तणी घरूमाल जगतमे जोई:२ तीनु वेरतुं देप गगन पंथ सोई, हीराचंद तज मांन मुगतपद वरेर२ ॥ दे० ६ ॥ ईती संपूर्णम्. ॥

॥ नं० ए४ ॥ ॥ लावणी ए ॥

सीरपर आया केस धोला अवलजरे२ थेदीयो जमारो पोय प्रभु तुं नजरे: लप चोरासी मांय सवे फीर आयो,२ रतन चिंतामण सार नीठते पायो:घोवेरे मुढगीवार परष वीन पायो,२ पीछेही पीछताय रंकजी मरायो: सुपना ज्युं संसार पाप तुं तजरे.२॥ सी० १ ॥ छीन२ वीतो जाय षवर न कांई२ गीरनंदीनो नीर जोवन ज्युं जाई; अलप दीनांको सुषरुपकी छाई; २ स्वारथीयो संसार मारतुं षाई, ज़रा मंजारी लार लगी तन तुजरे.२॥ सी० २ ॥ कोरव पंडव जोर कर्णसा

न्राई,२ मारथींया माहाराज धरा धूजाईः कंसन दीसे कोय, जरा सिंदुराईः२ वके२ माहाराज हूवा जगमांई, च्यार दीनां कीवेर गया सहू तजरे.२॥ सी० ३ ॥ जरा पहोती आय नगेनी साई,२ काया माया देष वादलकी ठाईः लीयो न सुकृतलार उत्तम कूल आई,२ सुणे न देवे कोय लोन्न घटलाईः ऊं जुग चलीयो जाय देष तुं अजरे.२॥ सी० ४ ॥ करे पराई कथ वेठके दुनी,२नही लागे कछु हात न्नाथ न्नरे सुनीः देवे कलोल गाय वात कर जुंनी,२नांम जपो जीनराज होय कर मुनीः हिराचंदसु पांरी पांन मुक्तीपद न्नजरे.२॥ सी०५॥ इती सपुरणा

॥ नं० ए५ ॥ ॥ लावणी ॥

तजो पराई कथ हात नही आवे२ वाज रही घमीयाल आउषो जावे, आवे सुणवा काज वात केइ ठेके२ राजा नारके पांन कथाउ ठेके;.

बेठे सारां वीच नीचके नेकेर नही धर्मरी
तातपर ठेके, सुणर फुटा कांन धर्म नही
॥ त० १ ॥ समायक संभाल लाभ घणो मो
हात जपे जपमाल नांमको ओछो, जे कोई
सीष धेपकर जावेर. ॥ त० २ ॥ बग जीम
ध्यांन झांन नही चित्तमेर करे कसाई-
उेठी जगथी तमेः अेंका घकी उकाय-लोभ
हीतमेर कुटा काढे सुं सधर्मका नीतमेः श्रा
नांम राय सुक वले पावेर ॥ त० ३ ॥ कू
कबीला काज संचे तुं जोरीर दया नही
मांय धर्मका धोरीः चूगली मोसा मर्म
नही ठोरीर पाय अ ी को माल- कुवी
तोरीः आया धोल जे वेर

काग सुप पोवेः लगे मर्मकी आन प्रांन वरतावे२ ॥ त० ५ ॥ पोते अवगुण लाष न्नाप तु दीजे२ जे गुण देष माय तास तुं कीजेः पाई मीनषा देह जगत जस लीजे२ हीर कहे जग वीच मुनसु रहीजेःपीणे पके जगमाय आपके न्नावे.२ ॥ त० ६ ॥ ईती संपुर्णम्ः ॥

॥ न० ८२ ॥ ॥ राग धमाल बे ॥

लाषांने फोजांमे रीपन्न एकलारे लाल, आई हूलकररी फोजां. माहाराज. ॥ ला० १ ॥ न्नाज हूलकर तोतीयोरे लाल, आगल मुगल पवांण माहाराज. ॥ला०२॥ नगर धुलेवो आंण घेरी-योरे लाल, पोह उगते सुर. मा० ॥ ला० ३ ॥ माल षजाना लुटीयारे लाल, पकाने लीना पकरायो मा० ॥ ला०४॥ चढीया न्नेरु जीवंक-कारे लाल, धोकीया तो समदां जाय. मा० ॥

वेठे सारां वीच नीचके नेंकेर नही धर्मरी वात तातपर ठेरू, सुणर फुटा कांन धर्म नही पावेर ॥ त० १ ॥ समायक संज्राल लाज्र घणो मोटोर हात जपे जपमाल नांमको ओठो, जे कोई देवे सीष धेपकर जावेर. ॥ त० २ ॥ वग-जीम राषे ध्यांन झांन नही -चित्तमेर करे कसाई- काम ऊंठी जगथी तमेः ओंरा घर्मी ज्राय लोज्राका हीतमेर क्रुटा काढे सुं सधर्मका नीतमेः श्रावग नांम राय सुक वले पावेर. ॥ त० ३ ॥ कूटंव कवीला काज संचे तुं ज्रोरीर दया नही दील- मांय धर्मका धोरीः चूगली मोसा मर्म अजे नही ठोरीर पाय अनीतको माल- फ्रुवी सहू तोरीः आया धोला केस अजे नही धावेर. ॥ ॥ त० ४ ॥ परकी निंद्या ठोरू मेल क्युं धोवेर नीजतन लागे पारउ निरमल होवेः धुल ज्ररी नीज सुंरू आप सीर ढोवेर तज मेवा पकवान

मा० ॥ ला० १५ ॥ राव सदासीव आवीयो रे लाल, थे हमके मोहन उगारो. मा० ॥ला०१६॥ छतर चमाळू सोना तणो रे लाल, कठे न आवे दरवारो. मा० ॥ ला० १७ ॥ श्रावग धनो करे वींनती रे लाल, मारी आवागमण नीवारो. मा० ॥ ला० १८ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥: नं० ९७ ॥:

॥ अथ चोवीसीरो अष्टक लिषते ॥

श्री आदीरीषन्न जुनान्नीके सुत, मात देवी मुरारहीः अवतार धार वनीता नगरीः जुगह्या धर्म नीवारहीः धर ध्यांन ध्यांनीः ज्ञांन धारण धर्म राहसु धारीत श्री श्रीजीनेश्वर रत्न चोवीसीः न्नेट न्नवीज न्नगवतं. ॥ १ ॥ दुजा अजीत जीनकर्म मारे, पहूंता मुक्ती प्रमाणीयं; तीजारु संन्नव तरण तारण, वेण सुन्न नीरवाणीयं. नीत

॥ ला० ५ ॥ आपतारो जाजां सेठां तणीरे लाल, लारे नेलीयो धुलेवारो धन. मा० ॥ ला० ६ ॥ धवलोतो घोको हंसलोरे लाल, मोत्यां जकीहे लगामो. मा० ॥ ला० ७ ॥ करुीये कटारो सोवे वंकरोरे लाल, कनक सोवनी ढाल माहाराज. ॥ ला० ८ ॥ लाल गुलाल अंगीयां सोनतीरे लाल, के सरमे गरकावो.मा० ॥ला० ९ ॥ झाक-कारां कीदा नीलकारे लाल, बुटी तीरनकी मारो मा० ॥ ला० १० ॥ रीषवदेव नेरु आवी-यारे लाल, नागी असुरांकी फोजों. मा० ॥ ला० ११ ॥ फोज पजांन लुंटीयारे लाल, पंकाने टीना ठोकाय. मा० ॥ ला० १२ ॥ रुपीये२ घोरुलोरे लाल, पईसे वगतर टोपो. मा० ॥ ला० १३ ॥ गलीयेर तुरकणीरे लाल, पईसे जीणल गांमो. मा० ॥ ला० १४ ॥ जीत्या धूलेवारा धणी केस-र्यारे लाल, जीणां प्रथ्वीमे कीनो अमर नांम.

नाथ वीचारही, गुण नेमनाथज मोक्षझांनी; गीर चढ्या गीरनारही: पार्श्वनाथ तेवीसमा प्रभु, वीर चोवीसमात्रीतं. ॥ श्री० ७ ॥ चोवीस ए जीनचरण सेवो, सफल कांम सुधारीय; नीत प्रते दृढ चीतरषोनेचे, वंदे वारंवारयं: करजोड चीमन वीनती करे, हरो कर्मदे फलहतं.॥श्री०८॥

॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ९८ ॥ख्यालकी ए राग ॥

घरा एकसो आठ सेलडी, रसभरीया छे नीका; उलटभाव श्रीअंसवेरायो, मांडलीया प्रभुबुकाहे. ॥ १ ॥ मारी रस सहेलडी, आज आदेसर कीनो पारणो: टेर: देव दूंधवी वाज रहीने, सोनैयांरी वीरषा; वारे माससु कीयो पारणो, गई भुषनेत्रीषाए. ॥ मा० २ ॥ रुद्धबृद्ध ने मनोकांमना, घरर मंगला चार; घरर रग

प्रतीवंदन अन्नीनंदन, वासुपुज्य वीराजीतं. ॥ ॥ श्री० २ ॥ पंचमा सुमतीनाथ प्रणमुं, हीये हर्ष हूलासही; पुरजोर षटमा पदम प्रभुजी, सप्तमासु पासही. अष्टमा चंदा प्रभु ओलष, सेहरचंद्रा परसतं. ॥ श्री० ३ ॥ सुवध्द जिनेसर नेक नवमा, जतन केई कंदाके थई; दशमा ज्युं शितलनाथ दीपत; सेहर सुभद्रापुर सहा; सेयोसे हंस मुनींद साहेब, प्रभु मोक्षजुं प्रापतं. ॥ श्री० ४ ॥ द्वादसमा चंपावती दध; वासुपूज्य, वंषाणीयं; षट सप्तकमल पूरावासी. प्रभु वीमल प्रमाणीयं, सप्तहूणमा जीन सहरजवज्या, अनंत नाथज गुणअंत. ॥ श्री० ५ ॥ जीन श्रीजीनेश्वर पनरमा जीन, धर्मनाथसु ध्यांनही; सोलमा श्री शँत जीनेश्वर, निर्म्रे केवलज्ञांनहीः गज नेरपुरी यण कुंथुज्ञांनी, ए अरे नाथ गुणअतं. ॥श्री०६॥ मलीनाथ जगणीस, वीस मुंनीसु व्रत; नमी-

नाथ वीचारही, गुण नेमनाथज मोक्षांनी; गीर चढ्या गीरनारहीः पार्श्वनाथ तेवीसमा प्रभु, वीर चोवीसमात्रीत. ॥ श्री० ७ ॥ चोवीस ए जीनचरण सेवो, सफल कांम सुधारीयं, नीत प्रते दृढ चीतरषोनेचे, वंदे वारंवारयंः करजोड चीमन वीनती करे, हरो कर्मदे फलहत ॥श्री०८॥

॥ ईती संपूर्णम् ॥

:॥ नं० ९८ ॥ख्यालकी ए राग ॥:

घड एकसो आठ सेलडी, रसभरीया छे नीका; उलटभाव श्रीअंसवेरायो, मांडलीया प्रभुबुकाहे. ॥ १ ॥ मारी रस सहेलडी, आज आदेसर कीनो पारणोः टेरः देव दूंधवी वाज रहीने, सोनैयांरी वीरषा, वारे माससुं कीयो पारणो, गई भुषनेत्रीषाए. ॥ मा० २ ॥ रुडबुड ने मनोकांमना, घर२ मंगला चार; घर२ रग

वंधावणासरे, आपातीज ते वारए. ॥ मा० ३ ॥ चिंताचूरो वीगन निवारो, राषो हमारी लाज; सेवगके सारी अर्ज सुणीजे, रीषवदेव माहाराज हे. ॥ मा० ४ ॥ ईती संपुर्णम् ॥



॥ नं० एए ॥

॥ शंकर वसेरे केलासमेः ॥ए राग. ॥

तप वडोरे संसारमे, जीव उजल थावेरे; कर्मरुई इंधन जले, सीवनगरीमे सीधावेरे. ॥ ॥ त० १ ॥ तपसे तीरुप-पामे घणो, होवे सुर अवतारीरे; ऋधवृध सुष संपदा, पावे लवदज नारीरे. ॥ त० २ ॥ राय आदर देवे घणो, चावे पीरने नीरोरे; लोक नाषा ईणपर कहे, ईणरी तपस्यांमे सीरोरे. ॥ त० ३ ॥ तपस्यांसुं रोग दूरे टले, वीघन सहुही जावेरे; तपसुं देव रक्षा करे, घरे लक्ष्मी आवेरे. ॥ त० ४ ॥ करतां तो

एक नवकारसी, सो वर्स नर्कीरा दुटेरे; दश पचपांण नफो दसगुंणो, आवागमणसुं दुटेरे. ॥ त० ५ ॥ अज्ञांनपणे तपस्या करे, तोही नीरफल न थावेरे; ज्ञांन सहीत तपस्या करे, गर्भावास न आवेरे. ॥ त० ६ ॥ परो पज्ञांनो तप मालरो, कोई पुनवंत घालेरे, चाल्या जांवे मोक्षमे, ज्यांने कोय न पालेरे. ॥ त० ७ ॥ पोते तो तप सच्यो हुवे, तेज पेखे नही मंदोरे; सेवग आंण मांने घणी, सदा वर्ते आणंदोरे. ॥ त० ८ ॥ तपस्यातो कीदी माहावीरजी कर्म कठंण जागारे, धनो मुंनीसर तप तपे, स्वार्थसीध जाय लागारे. ॥ त० ए ॥ वेलेतो वेलेकीयो पारणो, गणधर गोतम सांमीरे; मंत्रपंदकजीतपतपी, हूवा मुगतरा गांमीरे. ॥त०१०॥ जरजनमाली उधर्यो, मुंनीवर मेघ कुवारोरे; राय प्रदेसी तप तपी, जासी मुगत मजारोरे ॥ त० ११ ॥ अठ

वंधावणासरे, आपातीज ते वारए. ॥ मा० ३ ॥
चिताचूरो वीगन निवारो, रापो हमारी लाज;
सेवगके सारी अर्ज सुणीजे, रीषवदेव माहा-
राज हे. ॥ मा० ४ ॥ ईती संपुर्णम् ॥



॥ नं० एए ॥

॥ शंकर वसेरे केलासमेः ॥ए राग. ॥

तप करोरे संसारमे, जीव उजल थावेरे;
कर्मरुई इंधन जले, सीवनगरीमे सीधावेरे. ॥
॥ त० १ ॥ तपसे तीरुप पामे घणो, होवे सुर
अवतारीरे; ऋधवृध सुप संपदा, पावे लबदज
न्नारीरे. ॥ त० २ ॥ राय आदर देवे घणो, चावे
प्रीरने नीरोरे; लोक न्नापा ईणपर कहे, ईणरी
तपस्यांमे सीरोरे. ॥ त० ३ ॥ तपस्यांसुं रोग
दूरे टले, वीघन सहुही जावेरे; तपसुं देव रक्षा
करे, घरे लक्ष्मी आवेरे. ॥ त० ४ ॥ करतां तो

एक नवकारसी, सो वर्स नर्कांरा टुटेरे; दश पचषांण नफो दसगुंणो, आवागमणंसुं छुटेरे. ॥ त० ५ ॥ अज्ञांनपणे तपस्या करे, तोही नीरफल न थावेरे; ज्ञांन सहीत तपस्या करे, गर्भावास न आवेरे. ॥ त० ६ ॥ परो पजांनो तप मालरो, कोई पुनवत घालेरे, चाल्या जांवे मोक्षमे, ज्यांने कोय न पालेरे. ॥ त० ७ ॥ पोते तो तप सच्यो हुवे, तेज पके नही मंदोरे; सेवग आंण मांने घणी, सदा वर्ते आणंदोरे. ॥त०८॥ तपस्यातो कीदी माहावीरजी. कर्म कठण ज्ञागारे; धनो मुंनीसर तप तपे, स्वार्थसीध जाय लागारे. ॥ त० ए ॥ बेलेतो बेलेकीयो पारणो, गणधर गोतम सांमीरे; मंत्रपंदकजीतपतपी, हूवा मुगतरा गांमीरे. ॥त०१०॥ जरजनमाली उधर्यो, मुंनीवर मेघ कुवारोरे; राय-अरणक तपी, जासी मुगत मजारोरे ॥ त० ११ ॥ आठ

रांणी श्रीकुस्नरी, ब्रांमी सुंदर वालारे; तेवीस श्रेणकरी सुंदरी, तोड्या कर्मरा जालारे. ॥ त० १२ ॥ इत्यादीक बहू तप तप्या, केहुं केतायक नांमोरे; कर्म कठण दल जीपने, लहीसे अवीचल ठांमोरे. ॥ त० १३ ॥ सगत सारु तपस्या करो, निश्चे थे सुष पासोरे; रुप आसकर्णजी इम नणे, जोधाणे सेर चोमासोरे ॥ त० १४ ॥ पुज रायचंदजी, ज्यांरी पहोंच अती न्नारीरे; ज्यांरे प्रसादे जोमी लेपने, आसोज मास मजारीरे. ॥ त० १५ ॥ ईती संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० १०० ॥ ॥ बारे ब्रुतनी सजाय ॥

पेलेतो गोत्म जे, वांणी हीवरुे धरीजेः १ एर्ष त कीजे,

ठतां अठता आल न दीजे. ॥ ए० ३ ॥ तीजेत अदत्तादान न लीजे, जसी वस्तु धणी जाणीने आपीजे. ॥ए०४॥ चोते ते नीर्मल शील पालीजे, पालीने मुगताफल लीजे. ॥ ए० ५ ॥ पांचमे ते परीग्रामानुंमांन करीजे, पांच इंद्री पोता वस कीजे. ॥ ए० ६ ॥ ठदे ते दीसनो मान करीजे, दीन दीन पचषांण हीयके धरीजे. ॥ ए० ७ ॥ सातमे सचीतनो त्याग करीजे, सचीत मीस-रनो आहार न लीजे. ॥ ए० ८ ॥ आंठमे अन-रथ मंरून सेवीजे, हिंस्या तणो उपदेस न दीजे. ॥ ए० ए ॥ नवमे तो निरमल समाई करीजे, अवरतीने अवकार न दीजे. ॥ए०१०॥ दशमे दसावीगासी वृत करीजे, पचपांण करीयां उपर पाव न दीजे ॥ ए० ११ ॥ इग्यारमे पोषद व्रत करीजे, एक आसन वेसी ध्यांन धरीजे ॥ ॥ ए० १२ ॥ वारमे अतीथ दांन सज्ञलीजे,

साद सादवीयांने सुज तो दीजे. ॥ ए० १३ ॥ तेरमे सलेहणानो पाठ भणीजे, अवसर आया संथारो करीजे. ॥ ए० १४ ॥ दस श्रावग संथारो कीनो, जनम् जीतवनो लाहो लीजे. ॥ए०१५॥ पेले देवलोके मेरा पण दीधा, पालीने मुगतना फल लीधा. ॥ ए० १६ ॥ ईती संपुर्णम्ः ॥



॥ नं० १०१ ॥ ॥ आरतीनी सझाय ॥

॥ सायंकाल आरतीनी ए राग. ॥

पेलीरे आरती अरीहंत देवा, चोष्ट ईंद्र करे नीत सेवा; चोत्रीस अतीसय पेंत्रीस वांणी, अनंत दर्शन प्रभु अनंत नांणी. १ असी असी आरती करुं मन मेरा, जनम मर्ण तणा मीट जावे फेराः टेरः बीजी आरती सीध नीरंजण; भवदुष भंजन कर्म नीकंदण, क्रोड रवि करे कदे अजुवाला, एहथी प्रभुजीतणु रुप रसाला.

॥ अ० २ ॥ त्रीजी आरती श्री आचारज, सेवे जेने सरे साहुकार; गुण छत्रीसे तेहमां सोहे, निरषीने भवीजन मोहे. ॥ अ० ३ ॥ चोथी आरती उपाध्या मुनीवर, चवदे पूर्व पाठकगुंण गणधर; ईग्यारे अंग भणेने भणावे. दूर्गती दुर करी सुरगती अपावे. ॥ अ० ४ ॥ पांचमी आरती साहुजी नीभावे, साहु केरा श्रावग गुण गावे; गुण सतावीसथी सोहे सांमी, एकज शिवरमणी तणा कांमी. ॥अ०५॥ पांच इद्रीना दीवट बनावो, देहाअगनीथी कर्मतेल जलावो; ज्ञांन दीपक प्रगटे अजुवालो, जेथी जके प्रभु दीन दयालो. ॥ अ० ६ ॥ जीयां सुधी मोह ममता न छुटे, त्यांसुधी कूमतीनी जालर कूटे; करधर शिल संतोषनी घंटा, जनम मर्ण तणी तजवा चिंता. ॥ अ० ७ ॥ मनवंछीत सुप तेज न पावे, किंचीत कष्ट वली नवी आवे, रीषजी

कहे आ आरती गावे, ते जन अजर अमर सुष पावे. ॥ ओ० ८ ॥ ईती संपुर्णम्॥



॥ नं० १०२ ॥ ॥ पंचग्यांनरी आरती ॥

॥ ॐ हरहर माहादेव ॥

जय पार्श्व देवाः जय पार्श्व देवाः सुरनर करे तोरी सेवा. ॥ ज० १ ॥ पहेलुं रे मतीज्ञांन, अठावीस भेदेः अष्टकर्मने छेदेः पापना दल भेदे. ॥ ज० २ ॥ बीजु रे सुरत ज्ञांनः चौदावीश भुजाः चोदा पुर्वधर सुधाः भागे भवषुदा. ॥ ज०३ ॥ तीनीरी आरती अवदीज्ञांन केरीः मीटारू भवनी फेरीः सेवा करु तोरी. ॥ ज०४ ॥ चोती रे आरतीः मनपर जव जांणोः दोय भेदनो राणो. मुगतीस कराणो. ॥ ज० ५ ॥ पंचमी रे आरती केवल एक भाष्योः अषंरू सुष तेणे चाष्योः अजरामर राष्यो. ॥ ज० ६ ॥ आरती रे पंच

ग्यांनः जे कोई गासेः समकीत सुद अभ्यासेः सोभाग्य गुण गावे. ॥ ज० ७ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० १०३ ॥

॥ ईणकोरू पूर्वलगपांमीसाताए देसी ॥

ईम स्वार्थसीधरे चंदरवे, कांई मोतो झुंबक सोहेजी; वीचला मोतीसुं आफलता, सुरनरना मन मोहेजी. ॥ ई० १ ॥ तसपास झुंबकमो वीचलो मोती, चोष्ट मणरो जांणोजी; मोती च्यारवलेत सुपाषती बतीस मणरो वषांणोजी. ॥ ई० २ ॥ तेहने पाषती अतही नीर्मला, सोले मणरा आठ मोतीजी, सुंदरता ते निश्चे कहीये, देषत हर्षे जोतीजी. ॥ ई० ३ ॥ आठमण केरा मुक्ताफल सोहे, तेहने पासे कहीयाजी, ईणपरे सुरनाद उपजे, देषत हर्षे हीयाजी. ॥ ई० ४ ॥ च्यार मणरा तस पाषती, बतीस मोती दीपेजी;

जेजोवंता सुरनर केरी, क्षुप तृषा सहू जीपेजी. ॥ ई० ५ ॥ दोयमण केरा तस पापती, एकसो अठावीसोजी; ऊाकऊमाल करे ते तेजे, देवे सुधर्म इसोजी. ॥ई०७॥ दोयसे ने तेपन मोती, सर्व मीलीने लहीयाजी; त्रीसला नंदन वीर जीनेश्वर, केवलज्ञांनी कहीयाजी. ॥ ई० ८ ॥ तस ऊंबकरू नाद सुणंतां, सुरनें पांच जगीसोजी; ते रहे तीण उपर लीला, सुरसागर तेतीसोजी. ॥ ई० ए ॥ मुगताफलना नाद सुणंतां, आफलता वाउजोगोजी; ईणपर नाद सुंदर सुणीजे, सुरने आवे न्नोगोजी. ॥ ई०१०॥ दोय घरू काचीमें उपजे, वतीस वरसरी कायाजी; पून्यनीर जरा करणी करने, ईसरू जगा आयाजी. ॥ ई० ११ ॥ तेतीस हजार वर्स नीकल्यां, क्षुधनी इछ्या थावेजी, सास उसासने नीचो मेले, पंध तेतीसे जावेजी. ॥ ई० १२ ॥

वतीस वीधरा नाटक नीकले, ब रागसुं मोहेजी;
ठतीस रागणी मायती नीकले, सुर नाहीया
मोहेजी. ॥ ई० १३ ॥ सादपणो सुद चोषो पाले,
ईसरा मेलजे पावेजी; ढजं रीतना सुष भोगवे,
चवने मुक्ती सीधावेजी. ॥ ई० १४ ॥ स्वार्थसीद्ध
ना सुष जे ईसरा, पुन जोग पावे प्रांणीजी;
ज्ञांन धन श्रीवीर जीनेश्वर, वोले ईमृत वांणीजी;
॥ ई० १५ ॥ ग्यांन जीणारो ईसो नीरमलो,
नर्ग सातमी सुजेजी; संका परीयां तीर्थंकरने,
उठेहीज् वेठा बुजेजी. ॥ ई०१६ ॥ ईती सपूर्णम् ॥

॥ नं० १०४ ॥ ॥ दोहा ॥

श्रीजीन चर्णकमल नमुं, गणधर लागु पाय;
कलजुगनी रचना करूं, धर्मकथाके मांय ॥१॥
डूषमी आरो पांचमो, कयो श्रीजीनराय;
संषेपे करी वर्णवूं, ते सुणजो चीतलाय. ॥२॥

॥ नं० १०५ ॥

॥ ढाल बे ॥

श्री जंवुसांमी पूछ करे, करजोमी सीस
नमायहोः सांमीजीः डुषमी आरो होसी पांच-
मोः जीणरी कीणवीध रचना थाय होःसांमीजीः
॥१॥ मांसुक होजीर सांमीजीयां सुं वीनवूंः
टेरः अहो शिषजी वध सुषवंठसी अतघणो,
ठ्प होसी मरसी क्रुरहोः सांः पूरा पून पासी
जीवमा, सुष घटसी होसीदुप पुरहो.॥सां०२॥
एहवो दूषमीरआरो होसी पांचमोः टेरः ऐले
बोले नगर होसी गांमसां, दूजे गांम होसी
ज्युं मसांणहोः सां० तीजे कूटंव होसी दास
सारषा, राजा सरीषा जांणहोः ॥ सां०ए० ३ ॥
पांचमे परधान होसी सुंकड्या, छटे निच निर-
लज सुष पायहोः सां०
वेटीयां, ज्यांरे शिलदसा

ए० ४ ॥ आठमे पुत्र पोताके छांदे चालसी, गुररे शिष होसी प्रतनी कहोः सां० दसमे सजन दूषी दूर्जन सुषी इग्यारमे वैरी हुंसी देतां सीषहो. ॥ सां० ए० ५ ॥ बारमे दूप होसी परचक्रनो, होसी प्रथ्वी वीषम उजाड़हो. सां० तेरमे ब्रांमण गर्थना लोभ्रीया,करसी कूलधरमीसुं राड़ हो. ॥ सां० ए ६ ॥ सोलमे दयाधर्म थोड़ो हूसी, देसी हिस्याधर्म ऊडायहो सां० सतरमे मनुक मीथ्याती घणा होसी, अठारमे समद्रष्टी थोड़ा थाय हो. ॥ सां० ए० ७ ॥ उगणीसमे देवदर्शन थोड़ो हूसी, वीसमे विद्यामत्र जासी वीछेदहो. सां० ईकीसमे गोरसमे चीकणाई थोड़ी हूंसी, बलधन आउषो थोड़ो बहु षेद हो. ॥ सां० ए० ८ ॥ तेईसमे थांनक सादां ने थोड़ां हुंसी, चोइसमे गुरु शिष न पाढसी लीगारहो. सां० बोल पचीसमे पड़ीमा वीछे-

दसी, सौष्य होसी गुरां नेकलेकारहो. ॥ सां० ए०ए॥ सताईसमे सरल थोमाहोसी, अठाईसमे जड अनेकहो. सां० गुणतीसमे आपणे छांदे चालसी, तीसमे हिंडू थोमा मलेछ वीशेपहो. ॥ सां० ए० १० ॥ एह तीस बोल पांचमा आरा तणा, ओर दस बोल जासी विछेदहो. सां० द्वेष नरीया चरचा करसी बुरी, रागद्वेष करीपा सीपेदहो. ॥ सां० ए० ११ ॥ लबदी दोय श्रेणी टोयजो, मन पयवपर्म अवध हो. सां० जीनकल्पी चारीत्र तीनते, केवलज्ञांन दर्शन जासी वीछेदहो. ॥ सां० ए० १२ ॥ दाता निरधन कृपण धन धणी, पापी बहू जीव साधर्मि अल्पहो. सां० कुलहीण राज कुलवंत दासज्युं, प्रभु तजे प्रभनाको करसी जापहो. ॥ सां० ए० १३ ॥ ओर दूप घणाइपणे जांणजो, मांसु पूरा कया नही जायहो. सां० रुप लाल-

चंदजी कहे, रतलाममे, धर्म कथाको बोल सुणायहो. ॥ सां० ए० १४ ॥ ईती समाप्तम ॥

॥ नं० १०६ ॥

॥ नणदलनी राग. ॥

तीजा अंगने ठांणे तीसरे, अर्थमे इतरा बोलः मुं: वले वहतकल्पमे वरजीया, अरीहंत आष्यां दीनी पोल. ॥ मुं०१ ॥ दीष्या मत दीजो अजोगने, ठावी करलो ठीक. मु० पीछेही पीछतावसो, तीणथी पहले शिष. ॥ मु० दी० २ ॥ अतही वृद्ध वीध्यानही, वले निर्बल नांनो बाल. मु० नपुसगने रोगीयो, चोरने वले चंडाल. ॥ मुं० दी० ३ ॥ कोइ राजानो अपराधी हूवे, गेरी जेरी गुलाम. मु० आंधोने वले उंदमती, कूष्टी दूष्ठ परणांम. ॥ मुं० दी० ४ ॥ मोललीयो देवालीयो, हीण हूवे कूलजात. मुं० सुगांणो

सुद्ध वाहरो, रूपे दीनने रात. ॥मु० दी० ५॥
चूप वीना हसवो करे, गर्भवती वले नार. मु०
कीणरे चूगे ठोकरो, तीणने तज नीकले निर-
धार. ॥ मु० दी० ६ ॥ कांन नाक होट बुदा
हूवे, चक्षहीण मुष मुंग. मु० दोष घणो ने
मोह घणो, नांमहीण वांगोजुंग. ॥ मु०दी०७॥
वलछूधी हीणो हूवो, अपठंदो अवनीत. मु०
कपटी लंपटी कदाग्रही, कीणरी पुरो नही पर-
तीत. ॥ मुं० दी० ८॥ क्रोधी वले कलेसीयो,
लोल पीरसनें काज. मुं० चपल बोलो वाकी
वाहरो, नही नयणांमे लाज. ॥ मुं० दी० ए ॥
सजममे समजे नही, नही सुमत गुपतनी ठीक.
सु० सुन्य चीत समजे नही, दीनांन लागे सीष.
॥ मु० दी० १० ॥ पहीलथे करजो पारषा,
जीनसने लीजो जोय. मु० अधीराने उतावला,
कदेम दयजो कोय. ॥ मु० दी० ११ ॥ मूर्ष ने

मुंरू जो मती, जढमुढ जरूंग. मु० सुलटी कया उलटो परू, वले नागो जुगो जरूंग. ॥मु०१२॥ रयो घोरूो न दूवो, जो करे लाष प्रकरा. मु० रासजसुं हाले नही, हाथी हंदो जार. ॥ मु० दी० १३ ॥ काली ऊंनकू मांणसां, चढे न इजो रंग. मु० काग न होवे उजलो, जो नावतही गंग. ॥ मु० दी० १४ ॥ लोग सहू कूपात्र कहे, वले वर्जे वाला सेण. मु० लेवीने वली ठोरूतां, दोनुंही वातां देण. ॥ मु० दी० १५ ॥ ठोड्यां पठेही ठीडृतके, राप्यां नही रहे रीत. मु० तीणसु पहीला कीजो पारपा, शिक्षकी जोसु वनीत. ॥ मु०दी०१६ ॥ वीकलांने जेला कीया, पठे लजावे जेष. मु० उपजे अवगुण अती घणो, तीणसु रापजो विवेक. ॥ मु० दी० १७ ॥ कोई जेष सेन्यासी जोगी जती, वले कोइ जेष धार. मु० तीणने तुरत मती मुरूजो, परपजो

महीना दोय च्यार. ॥ मु० दी० १८ ॥ जे कोई असंदो आवीयो, तिणरी ठीक नहि काय. मु० जिणरो नरोसो मत राषजो, ज्युं जतन पुस्तकना थाय. ॥ मु० दी १९ ॥ जीसा तीसाने मुंमने, पुरे चेलारी चाय. मु० गलीहार गधे सारसो अवगुंण काढे जाय. ॥ मु०दी० २० ॥ गुरवादीक वरजे वली, तिणमें नहि नलीहार. मु० इण वातरा अटकल लिजीये, चतुर लीजे चित्त विचार. ॥ मु० दी० २१ ॥ जीन महिमा हूवे जिनधर्मनी, हुवे सगली जायगासो नाग. मु० दिल चेन पावे चित आपरो, लोगारे वधे वेराग. ॥ मु० दी० २२ ॥ दीष्या पचीसी परषवा, रिष रायचंदजी कहे विमास. मु० संवल अठारे बतीसमे, नागोर सेर चोमास. ॥ मु० दी० २३ ॥ पहीली तो शिष पोते नणी, वले वंधे पेलारी पाल. मु० पुज जेमलजीरा परसा-

दसुं. जुक्तसुं जोफी ढाल. ॥ मु० दी० २४ ॥
॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ नं० १०७ ॥

राजतणा अति लोजीया, जर्ते बाहुबल जुजेरे; मुठ उपाफी मारवा, बाहुबल प्रती बुजेरे. ॥ १ ॥ वीरा मोरा गज थकी उतरो, गज चढ्यां केवल न होसी रेः ॥ वी० टेरः ॥ लोच करी संजम लीयो, आंएयो मन अज्ञीमांनो रे लघू बंदव वंदू नहीं, काउसग रयो सुज्ञ ध्यांनो रे. ॥ वी० २ ॥ वर्स दीवस काउसग रयो, वेलफीयां वीटांणो रे; पंषी माला घालीया, सीत ताप सुकाणोरे. ॥ वी० ३ ॥ बधव गजथकी उतरो, ब्रांमी सुंदरी इम ज्ञासेरे; रीषज्ञ जिनेसर मोकली, बाहुबल तुम पासे रे. ॥ वी० ४ ॥ सादवी वचन सुणीइसो, चमक्यो

चित मजारो रे; हय गयरथ पायक तज्या, पीण मूक्यो नही अहंकारो रे. ॥ वी० ५ ॥ वेरागे मन वालीयो, मूक्यो मन अभीमांनो रे; पाय उपाडी वंदवा, उपनो केवल ज्ञांनो रे. ॥वी०६॥ पहुंता केवली पुरषदा, बाहूबल रीपरायोरे; अजर अमर पदवी लही, समय सुंदर वंदे पायोरे. ॥ वी० ७ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० ॥ १०८ ॥

॥ नगरी पुववणी ठे रागः ॥

उठ सवारे धंधे लागी, अण बुहारी घरढी; ले पुंणीने चर्पे वेटी, धर्म कर्णनेमाठी. १ कांइतुं गर्व रहीठेहे, आ घर माहरो ने हुं घरकी. टेर. केइक बायां पीणघट चाली, मलकर पग देवे; पाठी आयने करे रसोइ, प्रभु नांम नही लेवे. ॥ कां० २ ॥ धर्म तणो अक्षर नही जाणे, परी

जीन्नरे गटके; संतां केरो संग न राषे, परी कूसंगे न्नटके. ॥ कां० ३ ॥ केइक वायां चषै वेठी, महीर तांनज सांधे; कजीयो करे वातरे साटे, घणा कर्मने वांधे. ॥ कां० ४ ॥ अणुं कया नही कीणी वातरी, धोवे हांमा मोइ; एक चीत करे पापरो कामो, न्नली तुं घरमे सोई. ॥ कां० ५ ॥ घरकी मंन्न होयने वेठी, पाप करणने हांजी; जरा जोजरी हो गइ देही, तो पीण समजे नांजी. ॥ कां० ६ ॥ केइक वांयां उदम करने, धर्म ठीकांणे आवे; समायक लेइने वेठी, तो पीण रग नही जावे. ॥ कां० ७ ॥ धर्मतणो अक्षर नही जांणे, पन्नी जीन्नरे लटके, कजीयो करे वातरे साटे, घणो कालजे पटके. ॥कां०८॥ दोय च्यार मील वात वणावे, घणां घरांने न्नंन्ने; एक वषांण रीषीसर मन्ने, दूजो वांयां मंन्ने. ॥ कां० ए ॥ युं नही जांणे जीनवर वानी,

सुएयां चीकणा टुटे; हेत तणी सीषामण देतां, तरुक न्नरुकने उठे. ॥ कां० १० ॥ कूबद दंगो केलवती न्नोली, अहीलज मारो जासी; सतगरुकी तो सीष न मानी; पछे घणी पीछतासी. ॥ कां० ११ ॥ एरगेर कोइ वचन मत काढो, ओछोले मतीछंगो; रीषजसरुपजी कहे जीनवर वांणी, बालकनी परे चूंगो. ॥ कां० १२ ॥

॥ इती संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० १०ए ॥

॥ सादुजीने वंदना नित२ कीजे ए ॥

अपुर्व जीव जीनधर्म पामीयो, जीणरे कूमीयन रेवे कायरे प्रांणी; कल्पवृक्ष जीमघरे आंगण उगो, मनवछीत फल पायरे प्रांणी. १ चितसमाध हूवे दस बोले, टेरः दुजे बोले जाती समरण, पामे युन प्रमाणरे प्रां० पुर्वलो न्नवदेषे

ग्रलीपर, केइ समजे चतुर सुजाणरे प्राणी० ॥ ची० २ ॥ उतकष्ठ न वसे ग्रव लगता, पर्ने सनी पचेंद्रीनी ठीकरे प्रां० आउषो जांणे आपणो परायो, इसो मतज्ञांन मंगलीकरे प्रां० ॥ ची० ३ ॥ मृगापुत्र मेलमे पामे, मुनीवर मेघकवांररे प्रां० मलीनाथजीना षट मित्री, दृढ समगत पांमी साररे प्रां० ॥ ची० ४ ॥ षत्री नामे राय रिषेसर, वले सुदर्शन शेठरे प्रां० नमीराय संजम आदर्यो, तीनुं पहुंता ठीकाणे ठेठरे प्रां० ॥ ची० ५ ॥ ग्रगु ब्रांमणना वे वेटा, वले तेतली नांम प्रधानरे प्रां० जातीस्मरणथी सुष पांम्यो, कोइ कहेतां न आवे ज्ञांनरे प्रां० ॥ ची० ६ ॥ तीजी वोले जथातथ सुपनो, जीव राजी हूय जावे देषरे प्रां० रुद्धवृद्ध पामे परभाते, इणरा अर्थ अनेकरे प्रां० ॥ ची० ७ ॥ उणहीज ग्रवकेइ मुक्त सीधावे, एहवा स्वपना

श्रीकाररे प्रां० अरीहंतजीरीमा आदी देषे, जहा ज्ञगोती विस्ताररे प्रां० ॥ ची० ८ ॥ चोते वोले देवनो दर्शन, दिठां ठरे दोय नेणरे प्रां० झीग मीग जोत ज्योत करंतो, वालो सम्यगद्रष्टी सेणरे प्रां० ॥ ची०९ ॥ सोमल व्रांमणने सम- जायो, देवसम द्रष्टी आयरे प्रां० समकतमे पाछो करदीयो सेंठो, न्नाष्यो नीरावलका मांयरे प्रां० ॥ ची० १० ॥ पांचमे वोले अवधज ज्ञांनी, सुत्र नंदीमे वीस्ताररे प्रां० आणंद श्रावग जीम साता पामी, श्रमन केसी कवांररे प्रां० ॥ ची० ११ ॥ स्वार्थसीद्धना देवता देषे, वेठा थका नोकनालरे प्रां० अरीहंतदेवने प्रश्न पुछे, उत्तर दे दीनदयालरे प्रां० ॥ ची० १२ ॥ अवध लीया अरीहंतज आवे, मताना गर्भ मांयरे प्रां० पेटमे पोढ्यां दुनीयांने देषे, पुरा पुन्य संच्या जीनरायरे प्रां० ॥ ची० १३ ॥ छटे,

धज दर्शन; ते-देषे सर्व संसाररे प्रा० सातमो वोले थे सुंणो सुगणनी, मन पर्यवनो इधकाररे प्रां० ॥ ची०-१४ ॥ दोय समुद्रने दीप अढाई, ज्यां मेसनी पंचेंद्री होयरे प्रां० ज्यां जीवांरे मन रीवांतां, ढांनी नरेवेकोयरे प्रां० ॥ १५ ॥ मन पर्यव मुंनीवरने होवे, वलेल वदवंत अणगाररे प्रां० सतपुर सांज्यां सुत्र में गुथ्यां, चउनांणी अणगाररे प्रां० ॥ ची० १६ ॥ आठमे वोले केवल ज्ञांनी, नवमें केवल दर्शन नांणरे प्रां० चवदेही राजने देषी रह्या, सर्व वातना जांणरे प्रां० ॥ ची० १७ ॥ लोकमांहे ज्योतना कर्ता; केवली हुवा चोवीसरे प्रां० तिर्थ थापीने कर्मने कापी, जग तारण जगदीशरे प्रां० ॥ ॥ ची० १८ ॥ जगत तीर्थंकर वीश वीराजे, उतकष्टा एकसोनें सांठरे प्रां० गणधरसाद नसुं सीरनांमी, केवली पाटोपाटरे प्रां० ॥ ची० १९ ॥

दसमे बोले केवलमर्ण बोल्या, ते पहुछे नीर-वांणरे प्रां० बोल दसुंही थया संपूर्ण, वीरवचन प्रमांणरे प्रां० ॥ ची० २० ॥ नेउ जीणांरानांमज चाल्या, कियो अंतगढ मांहे जंतरे प्रां० केवली मर्णे मुक्ती पहोता, सहू साद थया भगवंतरे प्रां० ॥ ची० २१ ॥ दसासुतकंद सुत्रमे चाल्यो, वलेसम वायंगनी साषरे प्रां० समदृष्टीप चीसी-साताकारी, रीष रायचंदजी इम भाषरे प्रां० ॥ ची० २२ ॥ प्रसादपुजजे मलजीकेरे, कीधो ज्ञांन अभ्यासरे प्रां० संवत अठारे वर्स तेतीसे, मेरूते नगर चोमासरे प्रां० ॥ ची० २३ ॥ ईती संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० ११० ॥ ॥ हिंमानी राग ॥

दर्शन दिठाजी२ मुंनीराज तुंम तोला गोमी-ठाजी. द० टेर० गांम नगरपुर आप वीचरता,

ञवजीवांने तारयाजी, आज हमारा ञाग जोरसे, आप पदारयाजी ॥ द० १ ॥ दर्शन दीठां लागे मीठा, पुन उदय सेपायाजी, एसे मुनीना दर्शन करतां, पाप पुलायाजी ॥ द० २ ॥ पंच माहाव्रत पालेंपुरा, दोष बयांलीस टालोजी, ञोन२ मुनी उपदेश सुणावो, पापंरु मतने गालोजी ॥ द० ३ ॥ सुर्त थारी लागे प्यारी, दिठा मोहनगारीजी, बालवृमचारी नही वंठेनारी, वदणा हमारीजी ॥ द० ४ ॥ दयाल मुंनीओ रहेम मुंनीसर, अेमदावादमे आयाजी, धर्म ध्यांनका ठाठ लगाया, रंग वरसायाजी ॥ द० ५ ॥ जगणीसेने साल इकास्ये, कार्तिक मांसके मांइजी, हेम राज कीयाही वीनती, सुणजो ञाइजी ॥ द० ६ ॥

॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ नं० १११ ॥

प्रहऊठी गोत्म प्रणमीजे, मनवंछीतनो दातार, लवदी निधांन सकल गुंणसागर, श्रीवृधमांन प्रथम गणधार ॥ प्र० १ ॥ गोत्म गोत्र च वदे विधानीधी, प्रथवी मातपीता वसुभुती, जीनवर वांणी सुणी मन हर्ष्यों बोलायो नामे इंद्रभुती ॥ प्र० २ ॥ पंच महाव्रत ले प्रभु पासे, दे जीनवर त्रीपदी मनरंग, श्रीगोत्म गणधर तीहां गुंथ्यां, पुर्वच वदे द्वुवादस अंग ॥प्र०३॥ अदभुत एह सुगुरुनो अतीशय, जसु दीसेत सु केवल ज्ञांन, जाव जीव छट२ तपपारणो, आपणपे गोचरीरेम ध्यांन ॥ प्र० ४ ॥ कामधेनु सुरतरु चिंतांमण, नांम मांहे जसु करे निवास, सेसत गरुनो नांम जपंता, लाभे लीप मीलील वीलास ॥ प्र० ५ ॥ लाभ घणो वीणजवो पारे, आवे प्रवण कूसले षेम, ते सतगुरुनो ध्यांन

धरंता, पामे पुत्र कलत्र बहू प्रेम. ॥ प्र० ६ ॥ गोतमस्वामी तणा गुण गातां, अष्टमाहासिद्धी नवरे निधान; समय सुंदर कहे सुगुरुने प्रसादे, पुन उदय प्रगट्यो प्रधान. ॥ प्र० ७ ॥

॥ ईती संपूर्णम्. ॥

॥ न० ११२ ॥

चोवीसे जीनवर करुज जाप, नाम ठाम लंछन माय बाप; प्रथम शिष सीषणी दातार, वनसत ठांणे तवन विचार. ॥१॥ ऋषभ लंछन नाभ्रीराय, वनीता नेम रुदेव्या माय; उसभ्र-सेन श्रांमी सुपकार, श्रीयस दाता प्रथम उदार. ॥ २ ॥ अजीत अजोध्या विजीया माय, गज लंछन जीय शत्रुराय; सिहसेन गणधर फगु-सती, बृमदत्त नामे दाताबृति. ॥ ३ ॥ सभ्रव साव जीतारथ तात, अश्व लछन श्री सेनामात;

च्यार मुनिवर सोमा साहूणी, सुरदत्तनी महिमा घणी. ॥ ४ ॥ अभिनंदन वनीता पल्यव धजा, विहर मुंनी अती रांणी अजा; संवर राजा सिद्दता माय, इंद्रदत्त नामे दाता थाय. ॥ ५ ॥ सुमती क्रोचलंछन कोसल्या, मेघरथ नृप मात मंगल्या; चमर मुनीवरका सवी जांण, धरमसी दायक प्रथम वषांण. ॥ ६ ॥ पदम प्रभु कोसंबी धरराय, कमल लंछनने सुसमा थाय; सुव्रत गणधर ने अजारती, पहीलो दाता कहीये सुमति. ॥ ७ ॥ सुपास वणारसी सथीचिन्न, प्रथीष्ट राजा प्रृथ्वी तन्न; सोमाअजावी ड्वगण धार, धरमीत दाता कयो विचार. ॥ ८ ॥ चंद्र प्रभ्न चंद्रपुरी अवतार, माहासेन नृप तालीषमा नार; दिन गणी समणा संजती, पुफदाता लंछन धीजपती.॥ ए ॥ सुवृद काकंदी सुग्रीव नरिंद्र, मकरध्वज वली रामानंद, वाराह मुनी वारुणी

आणंद; पुनर्वसु दाता कहीये नरेंद्र. ॥ १० ॥
सितल नदल पुरवर वसे, द्रढरथ माता नदा-
रसे; आणंद सुलसा समणी एह; नंद दाताश्री
वठधरेह. ॥ ११ ॥ श्रीश्रंससिंह पुरविस्नु नृप,
विस्नुता रुप अनुप; गोथुन्न धारणी दाता सुनंद,
षग्ग लंछन धर्‍यो अणंद. ॥ १२ ॥ वासुपुज
चंपावती सुवास, वासुपुज जननी जया जास;
सोहमी मुंनी धरणी सुसास, महीष लंछन जय
दाता तास. ॥ १३ ॥ विमल किपलपुर वाराह
चीन, कृत वृमराजा सोमधन; मदिर मुंनिवर
धरणी धरा, विजेदातानी किरत वरा. ॥ १४ ॥
अनत अजोज्या नृपसीहसेन, सुजसा जणणी
लंछन सेण; जस गणहरने पोमावस्री, पदम-
दातानी सफली घरी. ॥ १५ ॥ धर्म वज्रलछन
रतन पुरे, भानुराय सुव्रता घरे, सिवा साधवी
अरिष्ट गणधार, सोमदत्त नामे पहीलो दातार.

च्यार मुनिवर सोमा साहूणी, सुरदत्तनी महिमा घणी. ॥ ४ ॥ अभिनंदन वनीता पल्यव धजा, विहर मुंनी अती रांणी अऋा; संवर राजा सिंहदता माय, इंद्रदत्त नामे दाता थाय. ॥ ५ ॥ सुमती क्रोचलंछन कोसल्या, मेघरथ नृप मात मंगल्या; चमर मुनीवरका सवी जांण, धरमसी दायक प्रथम वषांण. ॥ ६ ॥ पदम प्रभु कोसंवी धरराय, कमल लंछनने सुसमा थाय; सुव्रत गणधर ने अजारती, पहीलो दाता कहीये सुमति. ॥ ७ ॥ सुपास वणारसी सथीचिन्न, प्रथीष्ट राजा पृथ्वी तन्न; सोमाअजावी ड्वगण धार, धरमीत दाता कयो विचार. ॥ ८ ॥ चंद्र प्रभ्र चंद्रपुरी अवतार, माहासेन नृप तालीषमा नार; दिन गणी समणा संजती, पुफदाता लंछन धीजपती.॥ ए ॥ सुवद काकंदी सुग्रीव नरिंद्र, मकरध्वज वली रामानंद, वाराह मुनी वारुणी

दवी जेसे वादेवीश्ला; अजा जषणा वरद तरीष,
वरदत दाता लंठन संष. ॥ २३ ॥ पारसनाथ
वणारसी हुलास, अश्वसेन वामा राणी जास;
दीन गणी पुफ चूला सोय, धनदाता सर्पलंठन
होय. ॥ २४ ॥ कूंमण पुरवर विर जिणंद, पीता
सिधारथ त्रीसलानंद; इंद्र जुश्चनणा वषाण,
वहुल दाता सिंह अक जाण. ॥ २५ ॥ पदम
प्रभु वासुपुज रातेवढण, चंद्रप्रभुसु वढीज जल
तन, मल्य पार्श्वनील सुवयनेम, सांम सोले रंगे
हेम. ॥२६॥ अष्टापद सिद्धा रीषभसपीर, चपा-
वासपुजने पावावीर; श्रीअरीष्ट नेमी गढ गीर-
नार, वीसे सीधा समेत गीर सार. ॥ २७ ॥
श्रीजीन नायक लायक सुण्यां, नांम ठांम ले
विधसुं भण्या; समतश्पु रस अश्वरवी गिण्या,
प्रथम जिनने ढासे भण्या. ॥ २८ ॥

॥ १६ ॥ संती मृगलंछन हथीणाउरे, विश्वसेन रायने अचीरावरे; चक्रायुद्ध समणी सुइ म्रणी, महेंद्रदत्तनी सोभ्रा घणी. ॥ १७ ॥ कूंथुनाथश्री देवीनंद, गजपुर राय सुरमहंद; सयंभ्रु मुनि अजु अजा होय, सोमदत्त अजलंछन सोय. ॥ १८ ॥ अरेनाथ नागपुरी अभ्रीरांम, सुदंसन देवी मायनो नाम; कूंभ्र रीपीया करु आवर्त, आपरे दाता दावर्त. ॥ १९ ॥ मलीनाथ मीथला कूंभ्रराय, प्रभ्रावती गढलंछन थाय; भ्रीसक मुनिवर बंधु अजा, विश्वसेन दांने नहीका कजा. ॥ २० ॥ मुंनीसुव्रत राजग्रीपुरी, सुमती-राय पोमावइ सुंदरी; इंद्रपुफवती वंद्रू सुसेन, कूर्म लंछणने उसभ्रसेन. ॥ २१ ॥ नमी नीलो-त्पल लंछण जाण, वीजे विप्रामांय वषाण; मी-थला नगरी दीन दातार, कूंभ्र गणहर अनीला सार. ॥ २२ ॥ नेमीनाथ सोरीपुर भ्रला; समु

चोवट मोले चोटे बेसी, थाय ने घोदे घरने. ॥ जो० ३ ॥ आपी संघमां एक रुपैयो, वेनो करे नुकशान; लेस वातमां कलेश करे, वले त्र्यापानो नही ज्ञान. ॥ जो० ४ ॥ जीसके तरूमे लरु त्र्याइ, उसकी तरूमे इमत्र्यी तयार; सुद्धी असुद्धी स्थान जोवे नही, वस्त्र वीगारे सार. ॥ जो ५ ॥ गाम सारु परमो करवो, पांते थाय पवार, ज्ञानतणा पातां धूल थातां, लीये न कांइ संत्र्याल. ॥ जो० ६ ॥ धर्मध्यांनना परमासे नो, रकम मंमावे मोटी, देवा टांणे देवालीयो, दीयन दांनत पोटी. ॥ जो० ७ ॥ उपश्राथी चोरी करने, जुवे रमवा जाय, कोइ शिपांमण देवेतो, लरुवा सामो थाय. ॥ जो० ८ ॥ धर्म तणी जो वात करे तो, वचमे आमो वोले; लोत्र्ये तमारो मन ललचांणो, लाज रती नही आणे. ॥जो०९॥ जो समजे तो नाक कपाणुं;

॥ कलशः ॥

सहू भवीयण तारण दूष नीवारणः चोवीसे जिनराजएः गगरांणे भल भावसेतीः तवनए समाजए. ॥ १ ॥ ज्ञांनचंद सुवद सेवगः श्री देवने देवराजएः कल्यांण मुंनीवर सीष रीषभोः लहे इम सुष साजए. ॥ २ ॥ ईती संपुर्णम्. ॥

॥ नं० ११३ ॥

॥ मारा भाग्य तणो नही पार ए ॥

जोयलो वांणीया भाइना कांम, वगरी बुद्धी थया वदनांमः टेरः उपासराथी लीये पतासा, भरावे सहूने दभे; जे वल घाले आंगलीये, ने त्रीजु वेसाले धंदे. ॥ जो० १ ॥ वर्से एकमां एक वगतजो, आवे धर्मने स्थांन, मुफत सुमती मागे मुरषो, रह्यो न षावा धांन. ॥ जो० २ ॥ देवुं तो वले डुर रयो पण, देवा दे नही परने;

चोवट मोले चोटे वेसी, षाय ने षोदे घरने. ॥ जो० ३ ॥ आपी संघमां एक रुपैयो, वेनो करे नुकशान; लेस वातमां कलेश करे, वले न्नापानो नही ज्ञान. ॥ जो० ४ ॥ जीसके तरूमे लरु न्नाइ, उसकी तरूमे हमन्नी तयार; सुद्धी असुद्धी स्थांन जोवे नही, वस्त्र वीगारे सार. ॥ जो ५ ॥ गाम सारु परमो करवो, पांते थाय पवार; ज्ञानतणा पातां धूल थातां, लीये न कांइ संन्नाल. ॥ जो० ६ ॥ धर्मध्यांनना परमासे तो, रकम मंमावे मोटी, देवा टांणे ढेवालीयो, दीयन दांनत षोटी. ॥ जो० ७ ॥ उपश्राथी चोरी करने, जुवे रमवा जाय, कोइ शिपांमण देवेतो, लमवा सामो थाय. ॥ जो० ८ ॥ धर्म तणी जो वात करे तो, वचमे आमो बोले; लोन्ने तमारो मन ललचांणो, लाज रती नही आणे. ॥जो०९॥ जो समजे तो नाक कपाणुं,

जगमे नथी अजाएयुं; वणीक नाम ते कुट न बोले, कदी न ओबो आपे. ॥ जो० १० ॥ धर्म तणी थापण ओलवतां, कांइ धुरत न करे विचार; दुरगतीनो डर नही राषे, परनारीसुं प्यार. ॥ जो० ११ ॥ चूंगी विना तो जरा न चाले, बीडी बजारां बीच फूंके; पुंषु दिवस रात करे पीण, तो पण बीडी नवी मुके. ॥ ॥ जो० १२ ॥ विर पीतानो पवित्र पूरो, दया दयामे धरम; वलन्न तेने कलंक लगाड्यो; करी अविचारी करम. ॥ जो० १३ ॥

॥ ईती संपूर्णम्ः ॥

॥ नं० ११४ ॥

॥ ईण-स्वार्थसिद्धरे चंदरवे. ए ॥

साधपणाको मारग लेने, निंदा कर रयो परकीजी; रात दिवस करे वंदगोइः षोवे पुंजी

घरकीजी. ॥ १ ॥ कांइ आप थापीने परनो निंदक, तिणमे तेरे दोषोजी; बीजे संवर द्वारे भाष्या, किणवीध पामे मोषोजी. ॥ कां० २ ॥ लोकांने प्रतीबोधज देवे, बुधवंत नही कहीजेजी; प्रश्न व्याकरण सुत्रमे पाल्यो, तीणने धीनकारो नही दीजेजी. ॥ कां० ३ ॥ नंदकने धर्म प्यारो न कहीजे, नही निर्मल कूलसु जातोजी; सांधां केरी हलकी कर्ता, लाजे जीणरा तातोजी. ॥ कां० ४ ॥ दान तणो दातार न कहीजे, नही कहीजे सतवत सुरोजी; सोभावंत तिणने नहि कहीजे, जीणरे निचारो बल पुरोजी. ॥ कां० ५ ॥ रुपवंत निंदकने कहीजे, न कहीये पिंडत भणीयोजी; वहू श्रुति तपसी नहि कहीजे, जिणने ज्ञांनीलेपे नहि गीणीयोजी. ॥ कां० ६ ॥ सहस्र मिथ्यात गयो नहि कहीजे, भलीमत सदा नही आइजी; घणो१

उणने नहि कहीजे, दाख्यो व्राधक पदवी मांइजी. ॥ कां० ७ ॥ अवरसा दांरी करेज निंदा, आपतणो अधिकारोजी; केवलज्ञांनी वेणज जाष्यो, तिको जमसी अनंत संसारोजी. ॥ ॥ कां० ८ ॥ ठाणायंग सूत्रमे चाख्या, अजिर्ण च्यार प्रकारोजी; क्रियाधारी होय नंदा मांके, ज्ञान जणी करे अहंकारोजी. ॥ कां० ए ॥ क्रोध वमणठे तपस्या केरा, पीणमे करडे पारोजी; जोजन जीम्यां होय गई उलटी, प्रजु प्रत्यक्ष आपज जाष्योजी. ॥ कां० १० ॥ आप मांहे गुण कोइ परुीयो, तो कीजे घणी नरमाइजी; मीत्रीजाव सगलासुं राषे, ज्युं दीपे जगतरे मांइजी. ॥ कां० ११ ॥ एसा जाव कोइ पुनवंत सुणसी, बुद्धवंतने सुंणावजी, किरीया कर२ मांने तोके, ते जासे निरवांणोजी. ॥ कां०१२ ॥ संवत अगारे वर्स वहोतरे, सेर जोधाणे चोमासोजी;

रीष-श्रासकर्ण जीण इणपर न्नाषी, गुण लीध
सुषपासोजी. ॥ कां० १३ ॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ११५ ॥

॥ अलवेल्यानी राग. ॥

च्यार पहोरनो दिन हूवेरे लाल, च्यार
पहोरनी रातरेः चतुरनरः दोय घमी करो आप
नीरे लाल, ज्यु परन्नव परची साथरे. ॥च०१॥
कोइ चतुर विचारीने चेतजोरे लालः ॥टेर०॥
साध कहे नर सांन्नलोरे लाल, एले जनम
सतहाररेः च० क्षीणहीक सुषरे कारणेरे लाल,
कांइ सहे जम माररे. ॥ च०को० २ ॥ घमीय
आयु घटेरे लाल, थारे कवले ज्नो कालरे
सुः परन्नव जाणो एकलोरे लाल, कोइ न करे
पोतानी संन्नालरे. ॥ सु० को० ३ ॥ कोइ राजा
हूंतो मोटकारे लाल, वमार ज्ञुपालरे. च०

मुछमीयां वट घालतारे लाल, ज्यां नेहीले गया कालरे. ॥ च० को०४ ॥ जे घाट हिमोले हिचतारे लाल, बहु नर रहेता लालरे. च० मर्णो कदे नही जांणतारे लाल, ज्यांनेही लीधा माररे. ॥ सु० को० ५ ॥ आवाजी हठ चमेजीसीरे लाल, मीलर वीछरू जायरे. च० इण जवमे नही चेतीयारे लाल, ते परजव दुषीया थायरे. ॥ च० को० ६ ॥ मात पिता सुत कामणीरे लाल, या अलप दिवसनी वातरे. च० जोला नर चेते नहीरे लाल, पमीयाज मांरे हातरे. ॥ च० को० ७ ॥ राजाहूंतो एक मोटकोरे लाल, चढीयो फोजांले लाररे. च० मनमे आसाथी घणीरे लाल, हुले सुंपेलाने माररे. ॥ च० को० ८ ॥ फोजवर्णी बहु फूटरीरे लाल, ले चढीयो जुपालरे. च० पेला तांइ पहूंता नहीरे लाल, वीचमेही कर गयो कालरे. ॥

॥ च० को० ९ ॥ भर्ते बाहूबल जाणजोरे लाल, कोभां फोजां ज्यांरी लाररे. च० मर्ण थकी डरप्या घणारे लाल, त्याग दीयो संसाररे ॥च० को० १० ॥ ढाल भली उपदेशरीरे, सांभलो नरनाररे. च० ऋष रायचंदजी जोभी जुगतसुंरे लाल, लावो लीजे लाररे. ॥ च० को० ११ ॥

॥ ईती संपुर्णम्ः ॥

॥ न० ११६ ॥

॥ ज्ञानपंचमीनी सझाय ॥

पंचमी तप तुमे करोरे प्राणी, ज्युं निर्मल पामो ज्ञानरे; पहीली ज्ञान ने पिठी किरीया, नही कोइ ज्ञान समानरे. ॥ पं० १ ॥ नंदीसुत्रमे ज्ञान वषाण्यो, ज्ञानना पंच प्रकाररे; मती श्रुत अवधी अने मनपर्यव, केवल एक उदाररे. ॥ पं० २ ॥ मती अठावीस श्रुर्ति चवदे,

अवधी असंख्य प्रकाररे; दोय भेद मनपर्यव दाख्यो, केवल एक श्रीकाररे. ॥ पं० ३ ॥ चंद्र सुर्य ग्रह नक्षत्र तारा, तेज अछेस्युं आकासरे; केवलज्ञांन समो नही कोइ, लोकालोक प्रकासरे. ॥ पं० ४ ॥ पंच वर्षने पंचज मास, तप ए पूर्ण थायरे; ज्ञानावर्णि कर्मज तुटे, मुक्ती ले जावण जोयरे. ॥ पं० ५ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, माहरी पुरो उमेदरे; समय सुंदर कहे हुं पीण मागुं, ज्ञाननो पचमो भेदरे. ॥पं० ६॥

॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० ११७ ॥

॥ धर्मरुचीनी सझाय लिषंते ॥

चंपा नगर नीरोपम सुंदर, जठे धर्मरुची रीष आवे; मास पारणे गरुआज्ञा लेइ, गोचरीये सीधावे. ॥ १ मुंनीवर० ॥ धर्मरुची रीष वंदु,

ज्ञवश पाप नीकाचीत संचीत; दूरगत दूर निकंद. ॥ मु० २ ॥ निची ड्रष्ट धरी धुंनी चाले, मुंनीवर गुण ज्नंकारो; ज्निक्षा अटण करता आवे, नागसीरी घरबारो. ॥ मु० ३ ॥ जहेर हलाहल करूवो तुंबो, मुनीवरने वेहरावे; सहेज उकरमी आवी हमघर, वाहीर कहो कूण जावे. ॥ मु० ४ ॥ पूरण जाणी पाठा वलीया, गुरु आगे आय धरीयो; कूण दातार मल्यौ रूप तुजने, पूरण पातर ज्नरीयो. ॥ मु० ५ ॥ ना ना कहेतां मुंज वेरायो, ज्नाव अधिक मन आणी; चाषीने गरु कीदो निरणो, जहेर हलाहल जाणी. ॥ ॥ मु० ६ ॥ अपज्य अज्नोग्य कुटक समषारो, जो रूपजी तु पासो; निर्मल कोठो जेर हलाहल, अकाले मर जासी. ॥ मु० ७ ॥ अग्याले परठणने चाल्या, निरवद ठोरूरीषी आवे; बुंद एक परठी तीण उपर, किड्यां वहू मर जावे.

॥ मु० ८ ॥ अल्प आहार ने हिंस्या मोटी, सरवथा अनरथ जाणी; उजल जावना जाइ मूंनीसर, किरूीयांरी करुणा आंणी. ॥ मू० ए ॥ देह पमंतां दया निपजे, तो मोटो उपगारो; षीर षांम सम जाणी मूंनीवर, सगलाइ करगया आहारो. ॥ मूं०१० ॥ प्रवल पिरू शरीरमे उठी, आवण सक्ति थाकी; पाडूगमण कियो संथारो, समता ढ्ढकर राषी. ॥ मूं० ११ ॥ स्वार्थसिद्ध पहूंतां शुन्न ध्याने, माहा रमणी कवीमाण; चोसट मणरो मोती लटके, करणी रे परमाण. ॥ मू० १२ ॥ पवर करंता मूंनीवर आवे, रीषजी कालज कीधो; धृगपरू इण नागश्रीने; मूंनीवरने विष दीधो. ॥ मूं० १३ ॥ हुइ फजीती कर्म वहू वांधी, पहोती नरग मजारो, धन२ धर्मरुची मूनीवरने, करगया पेवोपारो. ॥ मूं० १४ ॥ पंसठ साल सेर जोधाणे, सुपे कीयो चोमासो;

रतनचंद कहे ते मूंनीवरनो, नांम लीयां सीव-वासो. ॥ मूं० १५ ॥ ईती संपूर्णम् ॥



॥ नं० ११८ ॥

संतोभाइ कूवे भांग पमी, एकरकी हट नही माने; सब मही आय अमीरे ॥ स० १ ॥ वमा घरांरीया वाजे सुंदर, वेस्यासुं जाय भीमीरे. ॥ सं० २ ॥ काल मरजादा कुलरी लोपी, आचाले गुमज भररे. ॥ सं० ३ ॥ सतगरु नाम धरावेजी सगला, पीण इंद्रीयां वश न करीरे. ॥ सं० ४ ॥ कहेत कबीर सुध धर्म न धार्यो, तो आगे नरग पमीरे. ॥ स० ५ ॥ईती संपूर्णः॥

॥ नं० ११ए ॥

मनारे तोने कीसबीध कर समजाउ, चेतन थांनेकीः वार२ समजाउः चे० टेर० हस्ती होय

तो पकरू मंगाउः पाय जजीर जमाउंः मावत होय कर उपर वेसुं, तोः आंकस देवस लाउंरे. ॥ म० १ ॥ सोनो होवे तो सोगी मंगाउः करले तावदीराउंः ले फूंकणीयो फूंकणने वेसुं तोः पांणी करने चलाउंरेः ॥ म० २ ॥ लोह हूवेतो एरण रोपाउः दोय२ धवण धूंषांउंः मार घणांरी घमचोल मचाउंः जंत्रीमी तार कढाउंरेः ॥ म० ३ ॥ ग्यांनी होय तो गाय रीजाउंः अंतर वीण वजाउंः कहेत कवीर सुणो न्नाइ साधोः जोतमें जोत मीलाउंरे. ॥ म० ४ ॥ ईती संपुर्णमः ॥



॥ नं० १२० ॥ ॥ दोहा ॥

नवमा अंग तीजा वरगमे,कया धनाना न्नाव;
सांन्नलो चतुर नरां, धरी चीत उठावः ॥१॥
वेरागी सीर सेहरो, धंन धनो ऋषराय;
तेह तणा गुण गांवतां, पातक डुर पुलायः ॥२॥

॥ ढाल १ ॥ रसीयानी रागः ॥

नगरी काकंदी होअती रलीयामणी, सहूँ श्रावन उध्यांन हो; नवीकजनः परज्या लोक सुषी तीए नगरमें, जीतशतरु राजान हो. ॥ ॥ न० १ ॥ नाव धरीने हो नवीयण सांनलो, टेरः नद्रा सार्थवाही तीहां वसे, धनसुं जीत सके नही कोयहो. न० तसघर धनो कवरजी जनमीया, रुप देषी मगन होयहो. ॥न०ना०२॥ जोवन वयमे हो आयो जांणी करी, परणाई वतीसे नारहो. न० महेल तेतीसे हो लीला कर रयो, नाटकना झीणकार हो.॥न०ना०३॥ षटरस नोजन चीजां नवनवी, घणा दासीने दास हो. न० कोरू वतीसे हो सोवन दायजो, वीलसे लील वीलास हो. ॥ न० ना० ४ ॥ वीचरत वीर जिनेसर पांगर्यां, लपण सहेंअने आठ हो. न० वंदण आवी हो वारे पूरषदा,

लग रया धर्मना थाट हो. ॥ ज० जा० ५ ॥ कर असवारी हो वंदण आवीयो, कोणक जेम धर कोड हो. ज० पंच अभीगम सुधा साचवी, वांदे बे कर जोडहो. ॥ ज० जा० ६ ॥ पेली ढाल संपूर्ण थइ, समोसर्या जीनराय हो. ज० नगरीमें हगमग लागी अती घणी, लोग टोले टोले जाय हो. ॥ ज० जा० ७ ॥

॥ ढाल २ ॥ तिण अवसर मुंनीराय. राग. ॥

धनो नामे कूंवार, बेठो गोष मझार; सुणजो चीतलाय, लोकांने जाता देषने. ॥ ए० १ ॥ कहे सेवगने एम, लोग जावे छे केमः सुं० कूण उछव मेलो मंड्यो. ॥ ए०२॥ सेवग कहे जोडी हात, समोसर्या जगनाथ. सुं० पूरषदा जावे वांदवा. ॥ ए० ३ ॥ सुण सेवग नीवांण, वाली अमीय समांण. सुं० वांदवा मन उलस्यो. ॥

ए० ४ ॥ सकल सजी सीणगार, वहू लोगांरे
वार. सुं० जमाली जीम चालीयो. ॥ ए०५ ॥
यो जीहां जीनराय, पंच अन्नीगम साज.
० वेठो सनमुष वीरने. ॥ ए० ६ ॥ न्नगवंत
उपदेश, काल घटे हमेश. सुं० जरामर्ण रोग
ग रयो. ॥ ए० ७ ॥ इथर संसारनी मांज,
ीसी उनालारी सांज. सुं० सम्रण वीधंसण
हमी. ॥ ए०८ ॥ मेलो मज्यो सराय, अजां-
यो उठ जाय सु० जीम वटाउ पावणो. ॥
। ए० ए ॥ इथर कुटंव परीवार, फलीयो माला
ाल सु० न्नमरा कमल तणीपरे. ॥ ए० १० ॥
सांन्नल श्री जीनवांण, लागो वेरागनो वांण.
सुं० धनो कहे कर जोमने. ॥ ए० ११ ॥ हूलेसुं
संजम न्नार, ठोरु वतीसेइ नार. सु० आउं
आग्या लेकरी ॥ ए० १२ ॥ न्नाषे श्रीजीनराय,
जीम थांने सुष थाय सुं० जेजम करो देवाणुं

पीया. ॥ ए० १३ ॥ वांध्या दीन दयाल; ए थई
बीजी ढाल. सु० माता पासे आवीयो. ॥ए०१४॥

॥ ढाल ३ ॥ अलवेल्यानी ॥

घर जाई माताने इम कहेरे लाल, हुं लेसुं संजमभार; सुणो मातजी हो, अज्ञा दीजे मोजणीरे लाल. ढील म करो लीगार. ॥सुं०१॥ कीरपा करी दीजे आगन्यारे लाल. टेर० एह वयण श्रवने सुणीरे लाल, मुर्छागत थइ माय. सुं०सावचेत थइ चीतवेरे लाल आज्ञा दीधी कीम जाय. ॥ सुं०२ ॥ चारीत्र छेयछ दोहीलोरे लाल, टेर० पंचमाहाव्रत पालवारे लाल,करवो माथारो लोच. ॥ सु० चा० ३ ॥ परूग धारापर चालणोरे,लाल कर्णो उग्र विहार. सुं०मोह माया दोय जीपवारे लाल, शिलपालवो नववारू. ॥ सुं० चा०४॥ उंषद सावज ना करेरे, लाल मार्गडुकर

घोर. सुं: हरगज तो सुनायलेरे लाल, मत कर कूमी जोरू. ॥ सु० चा०५॥ पुत्र एकाएक माहरे, लाल अज्ञा देख कीए रीत.सुं०ए कंचन ए कांमणी रे, लाल सुष भोगवो धर प्रीत. ॥ सु० चा० ६.॥ कुवर कहे माता सुणोरे;लाल गयो हुं नर्गनी गोदरे माय. सु० दूष अनंता मे सयारे,लाल कयोकठा लग जाय. ॥ सु० चा० ७ ॥ हरगज मांने वर जो मतीरे, लाल ठोरूसुं माया जाल. सुं० माता वरजती थाके गईरे,लाल पूरी थइ तीजी ढाल.॥ ॥ सुं: कीः ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ विछीयानी ॥

हांरे लाला माहाबल कूंवर तणी परे, माताजीसुं उतर दीधरे लाला; कृस्न थावरचानीपरे, मोटे मंम्हाणे दीष्या लीधरे. ॥१॥ वेरागी वेरागमे झील रयो. टेरः गेणांने गांठा उतारीया, माता

॥ ढाल ५ ॥ तप वडोरे संसारमे ॥

सुकी ढाल काष्टनी पावडी, जेहवा पग दोय सुकारे; मांसने लोही सुसे गया, दीसे डूरवल लुपारे. ॥ १ ॥ धनो मुंनीसर तप तपे, सुरत जाय लागी मोषोरे; कायातो षंपर डरावणी, सुको सर्पनो षोपोरे. ॥ ध० २ ॥ मुंग उडद कोमल कूली, सुकी तेहनी फलीयांरे; तेहवी तो धना मुंनीराजनी, सुकी पगनी आंगलीयांरे. ॥ध०३॥ पंषी तो कागने मोरीया, तेहवी सुकी रीषनी जंघारे; गोडातो गांठ वनस्पती, पीण प्रणाम चंगारे. ॥ ध० ४ ॥ साथलतो प्रीगु कूपलसारषी, कडीयां ऊंठ अर्द्धपगोरे; उदर तो जाणे सुकी दीवडी, पेट जंडो अथगोरे. ॥ ध० ५ ॥ आरीसा उपरा उपरी मेलीया, जेहवी पासलीयां जाणोरे; हात कडासण जेहवा, पांसलीलारली पीढांणोरे. ॥ ध० ६ ॥ ढाती

तो जांणे दूपको वींजणो, बांहसुंकीषे जम फली-
यांरे; हातनो पंजो वमनो पांनमो, कूलथफली
सुकी आंगलीयांरे. ॥ ध० ७ ॥ गलो तो सुको
करवा जेहवो, माढी आंवकूली जाणोरे; सुकी
जलोष होठ जेहवा, जीन्या सुकी साग पांनोरे.
॥ ध० ८ ॥ नाक वीजोरानी कातली, आंष्यां
बीड दोय त्रिणारे; अथवा तो तारो परन्ना-
तीयो, कांन कांदा बोत जीणारे. ॥ ध० ए ॥
सुको कोलो अथवा तुंबमो, जेहवो सुको रीषनो
सीसोरे; काकमा तुल काया कीसी, सुका बोल
इकवीसोरे. ॥ ध० १० ॥ उदर कांन होट जीब
ते, यांमेचांमनसाजालोरे; सतरमे बोलांमे गाल्या
हामका, मील दीसे महा वीकरालोरे.॥ध०११॥
ढीलो पीलांण तुरंगनो पागमो, तेहवा लटके
दोय हाथोरे; आउवल हाले चालवे, धूजे कंपण
वाय माथोरे. ॥ ध०१२ ॥ वाजे पीसाला तीलनी

सांकली, तीम पऊर हाळोरेः ढांकी अगनतणी परे, मांहे तेज छे गाढोरे. ॥ ध० १३ ॥ ढाल थइ ए पांचमी, मुंनी काया जोरकसीरेः परवा न राषी कांइ झीलरी, सुरत मुगतमे वसीरे. ॥ ध० १४ ॥

॥ ढाल ६ ॥ चोथा प्रत्येकवुधीना ॥

नगरी राजग्रही समोसर्‍या, जीणंदरायः करता उग्र वीहारः पुरपदा आवी वंदवाः श्रेणकरायः आयो बहू परीवारहोः ॥ १ ॥ धर्मकथा जीनवर कहीः श्रे० वांदे सीस नमायहोः दूकर करणी नीर्जराः जी० चवदे सहेश्र मांहे कूण थायहो. ॥ २ ॥ वीर जीणंद इम उचरेः श्रे० मुंनीवर चवदे हजारहोः दूकर करणी नीरजराः श्रे० धनो नामे अणगारहोः ॥ ३ ॥ कहे श्रेणक कारण कीसोः जी० कह्यो लारलो विस्तारहोः

वीरवांदी धनाजी तणाः श्रे० चर्ण वंदे वारंवार होः ॥ ४ ॥ सुकृत नरभव थेलयोः मोटा रीपः धन तुमचो अवतारहोः सेमुंष वीर वषांणीयाः मो० दूकर करणीरा करणहारहोः ॥ ५ ॥ नृपत गुण कीर्तकरीः श्रे० वले वाद्यां जीनरायहोः राजा गयो नीजथांनकेः श्रे० मुंनीवरना गुण गायहो. ॥ ६ ॥ छटी ढाल पुर्ण थइ. जी० विराज्या नगरीरे वागहोः धनोजी जाग्या रातनाः मो० जाग्यो वहूत वेरागहो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७ ॥ हुं वलीहारी जादवा ॥

धनोजी रुपमन चिंतवे, तप कर तुटी हमतणी कायके; वीरजीणंदने पुछने अझाले संथारो ठायके. ॥ १ ॥ धन करणीहो मुनीराजनीः टेर० पोह उगे वाद्यां श्रीवीरनें, श्रीजीन अज्ञा दीवी फूरमायके, वीमलगीरीहो थीवरांसगे, चाल्या

समसत साद षमायके. ॥ ध० २ ॥ आयो सं-
थारो एक मासरो, थीवर पाछा आया जीन
जीरे गोरुके; अंरु उपगरण सुंपने, गोत्म पुछे वे
करजोरुके. ॥ ध० ३ ॥ तप तप्यो षंदकनी परे,
कहो सांमी वासो कहां कीधके; सागर तेती-
सारे आउषे; नव महीनामे सवार्थसीध लीधके.
॥ ध० ४ ॥ माहाविदेह हमेसी जसी, विस्तार
नवमा अंगरे मायके; सत ढालीयो संपुर्ण थयो,
आसकर्णजी मुंनीगुंण गायके. ॥ ध०५ ॥ समत
अढारे गुंणसठे, वेसाषे वद पषरे मांयके; वीस-
लपूर गुंण गावीया, पुजरायचंदजीरे परसादके.
॥ ध० ६ ॥ उंछो इधको जोकयो, तेहनो
मीछयामीदूकर्म होयके; बुधसारु गुण गावीया,
सुत्रने अनुसारे जोयके. ॥ ध० ७ ॥ ईती
धनाजीनो सतढालीयो संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० १२१ ॥

(दोहा)

सासण नायक समरीये, त्रिसला देरानंदः
कर्म हणी केवल लही, पाम्या परमाणंद. ॥१॥
गोत्मसांमी गुणनिलो, लब्धी तणो जंमारः
सुधे मन अराधता, पामे जवनो पार. ॥ २ ॥
गुरुना चर्ण नमी करी, कहूं तपसीतणा गुण-
ग्रामः जवीप्रांणी तुमे सांजलो, राषी एकचीत
ठांम. ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ जलो मांरी जोरुरो ॥ ए राग ॥

जंबूद्वीपना जतमेरे, दीपतो सावरगामः अन
धन लक्ष्मी अतीघणीरे, सोजा करी अजीराम.
॥ १ ॥ जवीकजन सांजलोरे, तपसी तणा गुण
ग्रामः टेर० मोटा हूवा कला सीषीयारे, माहा
चतुरसुजाणः परणी घरणी रुयमीरे,चाले आग्या
प्रमांण. ॥ ज० २ ॥ संसारना सुष जोगवे,

जाण्यो इथर संसारः वेरागे मन वालनेरे, लीधो संजम न्नारः ॥ न्न० ३ ॥ अमरसींगजी हुवा दीपतारे, ठेला तुलसीदासजी जांणः तसुपाटे कोजुरांमजीरे, चेलो रांम पीचांण. ॥ न्न० ४ ॥ तीणांरे चेला हुवा दीपतारे, जसराज गुणवंतः चारीत्र पाळ्यो नीरमलोरे, सेणा सुधा संत. ॥ न्न० ५॥ तपस्यातो कीधी अतीघणीरे, तीणरो सुणो वीचारः सतरे मास षमण कीयारे, दोढो मासी दोयवार. ॥ न्न० ६ ॥ पांच पेंतालीस ज्ञाणजोरे, वासट कीया एकवारः दोय ठ्यां-लीस जांणजोरे, वावन कीया सुवीचार. ॥ न्न० ७ ॥ एकावन इकतालीसथे कीयारे, दोय व-यांलीस वषांणः दोय इकीसने वीस दोयसु रे, च्यार पचीसज जांण. ॥ न्न०८ ॥ नववार पनरे कीयारे, सोले कीया एकवारः पनरे नवसोले एकठरे, बारे कीया दोयवार. ॥ न्न०९ ॥ आंठ

वार दसतुमेकीयारे, पनरे अठाइ जांणः वावीस कीया सुधं न्नावसुंरे, सांन्नलो चतुरसुजांण. ॥ न्न० १० ॥ तपस्या तो कीधी अतीघणीरे, कयो कठालग जायः चोता आरानी वांनगीरे, पंचम आराने मांय ॥ न्न० ११ ॥ गांम नगरपुर विचरता, आया सून्नटपुर मांयः नरनारी हरपीया घणारे, धर्मनी महिमा थाय ॥ न्न० १२॥ पांच सुंमतकर दीपतारे, पंघर कीदी देहः सारवस्त सव काढनेजी, दीधो तनने छेह ॥ न्न० १३ ॥ चतुरवीध सिधने कहेरे, करसां संथारो सोय, साध श्रावग वरज्या घणारे, वरज्या न रया कोय. ॥ न्न०१४ ॥ साजा सुरा सेंठी करीरे, दीनो सथारो ठायः माघ शुकल तीथ अष्टमीरे, वर्स पच्यासीयारे मांय. ॥ न्न० १५ ॥ संथारो हुवो दीपतोरे, धर्मध्यांन राजी थाटः हर्षउछाह हूउ घणोरे, दीसे घणो गहे घाट. ॥ न्न०

१६ ॥ नरनारी परगांमनांरे, आवे दर्सण काजः सुरत देष राजी हूवेरे, धन मोटा मुंनीराज. ॥ न० १७ ॥ सुस पचपांणवृत आषमीरे, कीधा वहूजनलोयः सुरवीर तपसीजीसारे, हूवा वीरला कोय. ॥ न० १८ ॥ जसधारी जसराजजीरे, गुण तणो नही पारः धन धन मोटा मुनीवररे, नांम लीयां निस्तार. ॥ न० १९ ॥ गुरुभाइ हुवा दीपतारे, वीर पुरुष वीर जांणः हुकम हुवा हाजर पभारे, न करे तांणातांण. ॥ न० २०॥ वीने अकल वीवेकमेरे, राहा चतुरसुजांणः कयो वचन लोपे नहीरे, सेवा करे वीरजांणः ॥ न० २१ ॥ सोभा लीधी जगतमेरे, तप जपमे रहे लालः च्यारुं सीघ सेवे सदारे, भभा नीजर नीहाल. ॥ न० २२ ॥ सवा सोले वर्स पाली- योजी, तपसी संजमभारः वाकी सर्व वर्स जाणजो रे, पांच वर्स लीयो आहार. ॥ न० २३ ॥

तपसी तणा गुण वीनतीजी, कीनी किचीत् मात्रः संवत अगारे पीचीयासीयेरे, चैत्र मास विष्यात. ॥ न० २४ ॥ इसा न्राव सुणी करीरे, कीनो श्रीजीनधर्मः रत्नचितामण धर्मठेरे, तुटे आवुइ कर्म. ॥ न० २५ ॥

॥ कलश ॥

जसराज मुनीसरः दूकर तपकरः जीनमार्ग उजवालीयोः ढीन एकोतर केरो सथारोः सुध मने कर पालीयोः ॥१॥ आठ वर्स पंसट केरोः न्रोगवी उजल मन एः संवत अठारे वर्स ठीयासीयेः वेसाप वद तीज दीन एः ॥ २ ॥ दोय पहेर ढुलीयां त्रीजे पहेरः कालंमासे कालज कीयोः इसा मुंनीना गुंण गातांः न्रवीक जनम गह गयो ॥ ईती जसराजजी मुंनीना गुण संपुर्णम्र ॥

॥ नं० १२२ ॥

॥ नवकारमंत्रजीनो ध्यान धरो. ए. ॥

गुरु अमृत जीम लागे मीठा, मेतो नीठर नेणां दीठाः चीत नीत मारो दर्शन पावेः ॥१॥ कोइ गुरुवीना ज्ञान नही पावे. टेरः गुरु सीरपो कोइ नही दाता, गुरु दीठा दील पावे साताः गुरु मीळ्यां मीथ्यात मीट जावे. ॥ को० २ ॥ गुरकने एक अमर जडी, गुर मीलीया माने सुभनी घडी; मारे हर्षहीया मांहे नही मावे, ॥ को० ३ ॥ गुरतो मारे घटरे दीयो, गुरमीलीया मानेतरे फूलीयो हीयो; गुरु नीतर चीता आवे. ॥को०४॥ गुरु मीलीया जाणे कल्परुंषो, गुरु मीलीयां भाग जावे भुषो; त्रपतत नमन होय जावे. ॥ को० ५ ॥ चिंतामण जीम गरु वाणी, गुर मीलीयां मीले नीरवांणी; फेर गर्भावास मांहे नही आवे. ॥ को० ६ ॥ गुरु मुज

हीवड़ांमे रया वसी, जीम रेसम मांहे रगरयो फसी; कीरमचीरो रंग कदे नही जावे. ॥ को० ७ ॥ गुरु सारषो नही उपगारी, गुररी वाणी मांने लागे प्यारी; सुंणीयां जीवने समता आवे. ॥ को० ८ ॥ मेतो आज गुरांनो दर्शन कीधो, जांणे अमृतनो प्यालो पीधो; तुरत मन मांहे त्रपत होय जावे. ॥ को० ए ॥ मे गुरुना चर्ण पुन जोगे भेव्या, गुरु मनरा सांसा सहू मेव्या; अव जीवड़ो मारो झोला नही पावे. ॥ को० १० ॥ गुर सीरषी वस्तु नही दूजी, गुरु मीलीया तरे सुध श्रद्धा सुजी; गुरु वीना मार्ग कूण पावे. ॥ को० ११ ॥ गुरु नीर्मल मोत्यांरी माला, गुरु कीस्तुरी सरीषा काला, मांने सुगंधवस्त सदा सुहावे ॥ को० १२ ॥ गुरु मारा ज्ञानसुं भरीया, गुरुकोरू भवारा कर्म हरीया, गुरु मुक्त मेलमे लेजावे. ॥ को० १३ ॥ गुरु मुष दीठां हुवे सुष

साता, रहीजो गुरांने वचने रंग राता, गुणवंत गुरांना गुण गावे. ॥ को० १४ ॥ गुरु दर्शन मारे नयणे वसीयो. जीम मोरमगन मेहरो, रसीयो, पीण मेह मोररे माग्यो नही आवे. ॥ को० १५ ॥ गुरु मुप दीठां हुवे रंगरलीयां, जीम चीत हरणी चंपारी कलीयां, जीम भोगी भमररे मन भावे. ॥ को० १६ ॥ सपरे मन कीजो गुरुनी सेवा, गुरना कांने मत सुणजो केवा, निंदक नयणे दीठां नही सुंहांवे. ॥ को० १७ ॥ गुरुना गुण नही जावे कया, पुजरायचंदजी कहे चाउं गुरुनी मया, धनश्जीके गुरुने रिंजावे. ॥ को० १८ ॥ संवत अठारे चालीसे पेमो, सांमीये गाममे धर्मनो पेमो, जठे साध साधवी आवे ने जावे. ॥ को० १९ ॥

॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ न० ॥ १२३ ॥

शास्त्रका व्याख्यानः समापत होवेः जब सब
श्रावगः पके होकरः बोलनेका खट
❀द्रव्यः लिषंते ॥❀

खटद्रव्य जहांमे कह्यो जीनर, आगम सुंणत वर्षाणः पंचास्ती काया नव पदारथ, पंच भाष्या ज्ञान. चारीत्र तेरे कया जीनवर, ज्ञान दर्शन परधान ॥ १ ॥ जो शास्त्र नीत सुणो भवीयण, आणे सुद मन ज्ञांन. टेरः चोवीस तिर्थंकर लोक मांही तिरण तारण जहाज नव वासु नव प्रती वासुदेवा; बारे चक्र वृत जाण, बलदेवनवसव, हूवा त्रेसट, घणा गुणांरी षांन. ॥ जो० २ ॥ च्यार देसना दीनी जीनवर, कीयो पर उपगार, पंच अणुव्रत च्यार शिक्षा, तीन गुण वृतधार, पंच सवर जीनेसर भाष्या दया धर्म निधांन. ॥ जो० ३ ॥ अंग इग्यारे उपंग

चारे, बारमो द्रष्टीवाद जांण, चवदे पूर्व केरी विद्या, श्रीजीन वचन प्रमाण, जे कोइ अराधे भवी भावसेती, थासे पद नीरवांण. ॥जो०४॥ अवर कहां लग करु वर्णव, तीनलोक प्रमाण, सुणत पाप पुलाय जावे, थाय पदनी खांण, देव वीमांणीक मांहे पदवी, कही पंच परधान. ॥ जो० ५ ॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० १२४ ॥

श्रावग फोगट नाम धरावे रे, दील मांहे जरा दया नही आवे: टेर: होको तमाखुसी गरेट चीलम पीवे, एतो कंदमूल करूर पावे; भक्ष अभक्षना भेद न जाणे, त्यारे भांगना रगमा लगावे. ॥ श्रा०१ ॥ अणठांएयां पाणीमां पके, त्यारे भेसां जीमरोल मचावे; होलीयांमे षेले ने गेरीयांमे गावे, यांने सर्म जरा नही

आवे. ॥ आ० २॥ आवन आडवो आयो मेवाडी जाव, डुंगर चडर जावे; कीडीयां गजैयांने मारे गढैया, गोटां करर पावे. ॥आ० ३॥ पट्ट प्रवीना लाग न जांणे, एतो धर्मस्थाने नही आवे; परनारीसे प्रीत लगावे, ते तो वेश्याने घर जावे. ॥ आ० ४॥ आपो दीन धंधामांहे षोवे, अने सांज पड्यां रोटी षावे; कीडी कन्नेरी मोर कागला, रात पड्यां सुइ जावे. ॥ आ०५॥ सुलीया गुलीया अनाज षरीदे, एतो पापे पिड भरावे; इणभवको तो लालच करे, पीण मरीयने डूर्गती जावे. ॥आ० ६॥ अमल मगावे ने पेढीय चपावे, एतो नीला फूल मरावे; पोडोजी केवे इण पोटलाने, सादूजी केम समजावे. ॥ आ० ७ ॥ईती संपुर्णम्॥



॥ नं० १२५ ॥

॥ असवारीनी रांग ॥

धना मुंनी धन मांनवभव पायो, श्रीमुष युं फूरमायोः ॥ ध० टेरः ॥ श्रेणक पूछे वीरजी भाषे, उत्तम मुनीश्वर साराः रजमांहे तज हेत रतमजोगे, इधक धनो अणगारा. ॥ ध० १ ॥ श्रेणक राजा आत्महीत काजा, धना मुनीपे आवेः सीस नमावे गुण मुष गावे, जोतां तृपत्त न थावे. ॥ ध० २ ॥ नार वतीसे तजी अपछरसी, धन वतीसे कोड्योः संसारने पुठ दीवी मुनीवरजी, सीवपूरमाहे दोड्यो. ॥ ध० ३ ॥ निरंतर तप वेलेर, पारणे उछीत आहारो; वणी मग काग स्वांन नही वंछे, कीम तुम कंठ उतारो. ॥ ध० ४ ॥ चवदे हजार मुनीसरमाहे, आपने वीर वषाणोः दर्शन आपनो पुनवंत पावे, मे पीण आज पीछांणो. ॥ ध० ५ ॥ वार

इकीस जलमांहे धोइ, ते पिण षाइ जल पीवो,
एसो तप सुणतां डर मेरो कंपे, धनर थारो जीवो.
॥ ध० ६ ॥ नव मास लग सजम पाली, स्वा-
र्थसीद्ध मुनी जावेः रामचंद्र कहे एसा मुनी-
वरजी, क्यु नही मुक्ति सीधावे. ॥ ध० ७ ॥
॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० १२६ ॥

॥ अथ कीसनांजी माहाराजनो शिलोको छे ॥

सरसती सीवरु माता सुपदाइ, सुद्धी बुधी
दीजो सारदा माइः केसुं सीलोको कपटने
त्यागी, हुवा कीसनाजी मोटा वरुभागी. ॥१॥
जीणरा गुण तो जुगतीसुं गावुं, सारदमाताने
सीस नमावुंः पीयर कोटफी प्रगनो सवांणो,
मजल सासरो सुंताघर जांणो ॥२॥ वेटी जस
रुपरी बुदरी सागर, ढेलफीया कूळमे दीसेछ

जागरः माता हस्तु देतश्रु पूत्री जाइ, जीणने
जसरुपजी मजल परणाइ. ॥ ३ ॥ मुतावालो
जीम जलरा वासी, जीणरे न्नारज्या धर्ममे
साची: साची न्नारज्या बम्नी सुन्नकारी,, पुत्र
जनमीयो जवरो जयकारी. ॥ ४ ॥ अवल वरस
पांचमो आठो, लीनो वालोजी सुरगमे वासोः
वीचरता मुनीवर पुजजी आया; श्रावग उठे ने
सामा जव धाया. ॥ ५ ॥ वांणी इमृतसुं दीनो
वषांण, काया मायारा कूम्ना कमठांणः दारा
सुत बंदव जुठी जीदगानी, न्नवसागरमे जुले मत
प्रांणी. ॥ ६ ॥ लेसी संजम तो मुगतपद पासी,
मीनषा जनम फेर कव आसीः एसो उपदेस
रुगनाथने लागो, जांणे सुतो कोइ निंदसुं
जागो. ॥ ७ ॥ सार असार संसार कूम्नो, जपे
जीनवरने सोही नर सुरोः हूकम देरावो संजम
पालुं, दोष बयालीस सादूरा टालुं ॥ ८ ॥ धन

श्रे वेटा तुतो वरूभागी, थारी तो जोत जिन-
वरसुं लागीः आंपे मावेटा सजम लेसां, पाली
परवाते रवाने होसां. ॥ ए ॥ माहासतीयांजी
धर्ममे धीर, नामे ठेगांजी मोटा हमीरः वांदे
रुगनाथ वे कर जोरूी, सुणजो सतीयां वीणती
एक मोरी. ॥ १० ॥ साचो संजम मारे चित
लागो, हूप दालीड दर्शनसुं भागोः पाली पुज
पुनमचंदजी पदारुया, मनरा मनोरथ सगलाजी
सार्या. ॥ ११ ॥ समत उगणीसे अठावीसो
जाणुं, वेसाप सुदरी आठम वषाणुंः दोनुं मा
वेटा दीष्या सीरधारी, उतमपुर सारी जाउं
वलिहारी ॥ १२ ॥ मुंनी दयाल सजम लीनो,
सालेचा कूलने उजवाली दीनोः पप शुकलने
आठम अनुसार, जीण दीन सतीयांजी कीनो
विहार. ॥ १३ ॥ गाम नगरपुर विचरता जावे,
केतां कवी कोइ पार न पावेः काया वृन्द की-

सनांजीरी जाणो, पांच ठाणेसु कीनो पीयांणोः गढ जालंधर सेर सुन्नकारी. ॥ १४ ॥ सुंदर सोन्नंता श्रावग नरनारी, पोसा पम्रीकमण समायक राजपाटः थानकमे रेवे सदा मदथाट, पनरे वरस एक थांनक वीता.॥ १५ ॥ सीवपुर जावणरी लागी मन चिंता, वर्सं तीहूंतर महा सुदवारोः दस दीनांरो श्रायो संथारो, फागण वद तीजने संथारो सीनो. ॥ १६ ॥ कीसनाजी वासो सुर्गमे लीनो, वाजा गाजाने वेकूटी वाजे, ढोल नगारा नोपत वाजेः उड़े गुलाल जालर ऊणकारो. ॥ १७ ॥ कीसनाजी पुगा सर्ग मजारो, ओठव अपार कीनो नरनारीः चंनण काष्टसुं काया सुधारी. ॥ १८ ॥ अबतो टोलांमे सतीयांहे च्यार, वड़ा वरजूजी गुणरा भंडारः सोवे सीणगारांजी जवरा गुणजाण, रेणी करणी तो रतनांरी पांन. ॥ १९ ॥ दीपे

दीपांजी सारग प्रांणी, देवे वषांण मधुरी वाणीः वरती वीरांजीरी सदा सुखकारी, कीनो चूनोंजी अगाइ तप नारी. ॥ २० ॥ नवी आरज्यां वलभ कुमारो, त्रिया भणे सूत्र अनुसारोः वरस अ- ठुतर असाढ मासो, एक कोटमी कीनो चोमासो.॥२१॥ कांने सुणीने केसव लालनापी, सुणजो श्रावगां कही हूं साचीः भाव धरीने भक्तिसुं गावे, सीपे सिलोको सदा सुष पावे. ॥ २२ ॥ ईती सपुर्णम्. ॥

॥ न० १२७ ॥

॥ कर्म समो नही कोइ ए राग. ॥

सासन नायक वीर जीनेसर, मार्ग सुद वतायो; जीण मार्गने उथापी पापी, जाणे इंद्रजाल रचायो हो. ॥ १ ॥ कूमती भावना कहासु आइः टेरः एसी आगे कीणहीन भाइ

थारा संजममे लाय लगायने, आ कांइ मांभी ठगाइरे. ॥कू० २॥ ऊव्ये सादूनो संगज धरीयो, दोषीलो आहार जलावे; ग्रहस्थोरे घर आरंभ नीपजावेः पछे निदवने भावना भावेरे. ॥कू०३॥ भावना सुणके मन होयगो राजी, जाणे आज माल हात आवेः ऊटपट पातरा ऊोलीमे घाली, लारे चलीयो जावेरे. ॥ कु० ४ ॥ नेतरीयो पावणो आवे, तेभीया निदक जावे; आहाररे मांही दोष लगावे, जीभ्या वस नही आवेरे. ॥ कु० ५ ॥ आध वालाको वसबुलावे, काग उमंता आवे; कागला परे जीणघर ताके, नीदव भावना भावेरे. ॥ कु० ६ ॥ कीण घर लपसी कीण घर सीरो, जीणरे लाग रया छे पीरा; थोभीसीवेला पछे आइजो, जीतरे सांमीजी रहीजो धीरारे. ॥ कु० ७ ॥ उन उंगारी फलीयां लेजावे, वस्तु काची जो देषे; हेटो वेटने वटवा

लागे, धरणो दीयो कीण लेपेरे. ॥ कू० ८ ॥
ग्रस्थी पांवणो घरे ले आयो, चावल उतारण
रया थाकी; जीतरे पांवणा वारे वेठावे, निन्व
टेकज रापीरे. ॥ कू० ए ॥ पांवणो वाट जोवे
रसोइनी, दोनु वेगा करेह थाइ; पावणो पठे
पेली थांने धपावे, याकरी थे अधिकाइरे. ॥ कू०
१० ॥ रांन्डी जुन्डी होवे एकली वाइ, घरघुलो
मेल्यो नही जावे; दूजाकना सुंनेतो दीरावो,
सांमलीवाइ न्नावना न्नावेरे. ॥ कू० ११ ॥

॥ ईती संपूर्णमः ॥

॥ नं० १२८ ॥

देष्योर वीदाता तेरो अन्यावः ॥दे० टेर०॥
वालकको वीदवा कर देवे, जुन्डीया सुषसे माने
सुराकू नीरधन कर देवे, मुरष मोजा माणे
॥ दे० १ ॥ पारसके गले पथर बांधे, मुरषके

गले हंस; सुंवको वहू पुत्र देती, दाताके नीरवंस. ॥ दे० २ ॥ चंनण काष्ट सुगंधी अठी, रतनागर जल षारा; सोना सुंदर नाह सुगंधी, किस्तुरी रंग काला, धोला२ कीया बुगलेका वनाव. ॥ दे० ३ ॥ केतुम लिपतां निंद्रा आइ, के तुम वीजीया षाइ; फतेराज कर जोरु वीनवे, न्नइ वावली कांइ. उलटा उलटातो अंटमतीना चलावेरे. ॥ दे० ४ ॥

॥ ईती संपुर्णम् ॥

॥ नं० १२ए ॥

हरि मारा जीवा पटछ्यारे, तु सतनी षेती करजे; जेहथी न्नवसागर तुं तरजेरे. ॥ मा० १ ॥ आदमरुपी ज्नुमी करीने, षम्या षातमांही न्नरजे; मोह मायानो सुर काढीने, कर्णिनो कोदालो

हात धरजेरे. ॥ मा० २ ॥ संवर रुपी पाज बांधने, आश्रव उजाड परहरजे, कसाय कचरो दुर करीने, आतमभुमी सुध करीजे. ॥ मा०३ ॥ धर्म नामना धोरी करने, सजम हल जोतरजे; जतनारुपी जोतर वालीने, सुरता रास हाते धरजे. ॥ मा० ४ ॥ वीवेकनो वावणीयो लेइने, सत्य वीज बहु वाइजे; ज्ञांनरुपी उग्या अंकूरा, संवेग वाड तु करजे. ॥ मा० ५ ॥ मनरुपी मालो घालीने, टोयो तनरो करजे; सदगुणरुपी गोपण लेइने, गुरुगम गोला फेकजेरे. ॥ मा० ६ ॥ मोक्षरुपी मालज पाक्यो, ग्यांनरी गुणां भरजे; पापकी पसुआ परीहरने, सुभ ध्यान तु धरजेरे. ॥ मा० ७ ॥ काम क्रोध मद मोह ठगारा, पाप चोर परहरजे; अनंतगुण आतम भरीने, सीवरमणी तु वरजेरे. ॥मा० ८॥ एहवी रीते पेती करने, सुभ पजानोहु भरजे; आतम

गुण प्रगट करीने, गज मुंनीगुण धरजे. ॥मा०ए॥
॥ ईती संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० १३० ॥
॥ गरबानी राग छे. ॥

जीनंद थारो आसरो हम लीनोजी, मेतो लीनो सुधारस पीनो.॥ जी० टेरः ॥ श्री चितामण सुणो सांमीजी, तुमे पुरण अंतरजामीजी; त्रवीयण जीवना वीसरामीजी, में प्रणमुं सदा सीरनांमी. ॥ जी० १ ॥ मे पुन उदे प्रभु पायो जी, घर आंगण सरुतरु फलीयोजी; जीन मुष मंगल गायोजी, तनमन हरष सवायोः ॥ जी० २ ॥ मेतो पातक कीनो त्रारीजी, सेव्या अनाचार अविचारीजीः अनर्थ त्राष्या माहा दुषकारीजी, सोथे देष रया अवतारो. ॥ जी० ३ ॥ मे कूरू कपट वलछायोजी, सुंस लेइने

दोष लगायोजी; फीर पीठतावो नही लायोजी
एसो अकर्म काम कमायो. ॥ जी० ४ ॥ पं
आश्रवमे रंगरातोजी, क्रोध मान माया लोभ
मातोजी; रागद्वेष सुजोसज पातोजी, तो
अष्टादशको तांतो. ॥ जी० ५ ॥ तुमे अग
जन अवीकारीजी, तुंमने सहू अर्ज हमारीजी
दुर कीजो गुण भ्भारीजी, जीउर कोरू वर्ल
हारी. ॥ जी० ६ ॥ तुमे त्रीभुनके सीरवाजोजी
जीगमीग जोतमांहे गाजोजी; भ्भवरा घोस
जांण कीवाजी, वंछीत सफल करो माहाराजो
॥ जी० ७ ॥ ईती संपुर्णमः ॥

॥ नं० १३१ ॥

हरि जीवा तने वरजुचुं वीखीयारस प्याल
मत पीजे मेरे जीवा तोय वरजुंछुं. परनारीनं
संगत मत कीजेः टेरः नारी नागण सारपीरे

मत कीजेः तोंने खीणमें करे खरव. ॥जीवा०१॥ इणन्नव राजा कंमसीरे. मत० थांरी उतरजांय सव आव. ॥ जी० २ ॥ पदम नाम हूरमत गइरे म० गया कीचकरा प्राण ॥ जी० ३ ॥ एह मरने पहुंता नारकीरे. म० ज्यांने मारे बे जमरांण. ॥ जी० ४ ॥ लंकागढको अधप तीरे. म० जीको ले गयो रघुपतकीनार. ॥ जी० ५ ॥ लठमण हाथे मारीयोरे. म० वोतो पहूंतो नरक मजार. ॥ जी० ६ ॥ जीन रुपने जीन पालजीरे. म० ए बंधव होता दोय. ॥जी० ७॥ रेणादेवीरे वस पमीयारे. म०लीजो सूत्र ज्ञाता जोय. ॥ जी० ८ ॥ जिन रुप सांमां जोवीयोरे म० लीयो त्रिसुले पोय. ॥ जी० ए ॥ मरने माठीगत गयोरे. म० ओ न्नवश डुषीयो होय. ॥ जी० १० ॥ कंडप कंडप वस पमीयोरे. म० लायो म्हवलकी पटनार. ॥ जी०११ ॥ मलीया

सतीवंळयो नहीरे. म० जिणरी वलजल होय गइ राष. ॥जी० १२॥ इत्यादिक वहुला हुवारे. म० केइ वम्हारशा जांन. ॥ जी० १३ ॥ परनारी वसकटमुंवारे. म० इण जुगमे हुवा हेरान. ॥ जी० १४ ॥ धन मुनीवर संसारमेरेः गुंण कीजेः थे दीजो सूपात्र दान. ॥ जी० १५ ॥ कनीराम कहे जुगतसुंरे. गु० इणसुं पामो मोक्षनिधांन. ॥ जी० १६ ॥ उगणीसे चालीसमेरे गु० छोमो परनारी दुखदाय. ॥ जी० १७ ॥

॥ न० १३२ ॥

॥ राग प्रभाती. ॥

घरके लोग अनारी भया, घरके लोक अनारीरे० टेर० ममता माता हे दुख दाता, जेसें नागण कालीरे० लोभ वाप हे वम्होज जागर, उसने राहा भीगारीरे० ॥ धर० १ ॥

दुवध्या मासी जब जब आवे, दील न राखे करारीरे० क्रोध भ्रात हे घेटो दुरगुण, हे उसका सीरदारीरे० ॥ घर० २ ॥ कर्म कपुत हे घरमे तीनुं, कुमती नार मतवारीरे० मोह कांम काहे दोनुं हे, वऊत वर्के वाटपारीरे० ॥ घर० ३ ॥ डुर बुधी हे साली घरमे, रेतीतार मतारीरे० सुमत सवी उंरेवण न देवे, घरसे देत नीकालीरे० ॥ घर० ४ ॥ कुल गुरु हे अवोवेक हे निसाचर, वेहि पंम्मित आचारीरे० यो परिवार जस्यो घर ज्नितर, फीर क्या गती तुंमारीरे० ॥ घर० ५ ॥ ब्रह्मदत धिज ऐसे घरमे, केसें मीले वीहारीरे० शिवानंदसें सतगुरु सेवो, तो होय हंस उवारीरे० ॥ घर० ६ ॥

॥ ईति संपुर्णम्ः ॥

॥ नं० १२७ ॥

ग्यांन नही पायारे नहीं पाया, तनें कुगुरु कांन लगाया० ॥ ग्यांन० ॥ परमतके परसग वीचमें, भ्रमत जनम गमाया; साचा सतगुरु सुजत नांही, हीये हाथ नही आया० ॥ग्यांन० १ ॥ अवके अवसर क्युं नही चेते, लंपट लोभ लोभाया; घीरी २मेमिलसी मही, पर भवमे पीचताया० ॥ ग्यांन० २ ॥ मेरो चित एक जिमराज चर्णमे, उर मनमे नही भाया; जिमतिम करने पार उतारो, बेठो चरनकी छाया० ॥ ग्यांन० ३ ॥ जीनदास केणेको ग-रजी, करणेकी नही काया, ठग खाणेका दांत कपटका, लोकांने ओर वताया० ॥ ग्यांन० ४ ॥

॥ ईति सपुर्णम्ः ॥

॥ अथ चोवीसी लीषते: ॥

॥ उमादे नटीयांणीना गीतनी ए रागः ॥

श्री आदेश्वर स्वामी हो, प्रणमुं शीर नांमी तुंम नणी, प्रनु अंतरजांमी आप, मोपर मेर करीजे हो मेटी जे चिंता मरन तणी मारा काट पुरा कृत पाप० ॥ श्री० १ ॥ आद धर्मनीकीनी हो, नर्तक्षेत्र सर्पणी कालमे, प्रनु युगल्पा धर्मनोवार, पहीला नरवर मुनीवरहो, तिर्थंकर जीनद्वारा केवली, प्रनू तीर्थ थाप्या च्यार० ॥ श्री० २ ॥ मामरु देव्या थांरी हो, गज होदे मुक्ती पदारीया, तुम जनव्याही परमांण, पीता नान्न महाराजा हो, नव देवतणो करी नर थया, प्रनु पांम्या पद निरवाण० ॥ ॥ श्री० ३ ॥ नरतादीकसो नंदन ... पूत्री

प्रभुतीन भूवनमे वीष्यात० ॥ श्री० ४ ॥ इत्या-
दिक बहू तीरीया हो जीन कूलमे प्रभु तु
मउपना, आगममे अधीकार, ओर असंष्या
तारया हो, उदारया सेवग आपना,प्रभु सरणां-
रोआधार ॥ श्री०५॥ असरण शरण कही जेहो,
प्रभु बीरद वीचारो साहवा, अहो गरीबनीवाज,
शरण तुमारी आयो हो, हू चाकरनीज चरणां
तणो मारी सुणीये अरज अवाज० ॥ श्री० ६ ॥
तुंम करुणा कर ठाकूरहो, प्रभू धर्म दीवाकर
जग घणी, प्रभू भव दूपडुकत टाल, विनयचंदने
आपोहो, प्रभूनीज गूण सपत स्वासती दीना-
नाथ दयाल० ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल २ कूवीशनए ॥

श्री जीन अजीत नमो जयकारी, तु देव-
नको देवजी, जीय सत्रु राजाने वीजीया रांणी
को, आतम जात तुमेवजी० ॥ श्री० १ ॥ दूजा

देव अने एज गमे, ते मुज दाय न आवेजी, तह्मने तह चीते ह्मने, तुंही जङधक सुहावेजी० ॥ श्री० २ ॥ सेव्या देव गणा ञवरमे सो पीण गरज न सारीजी, अवके श्रीजीन राज मील्योतुं, पूरण पर उपगारीजी० ॥ ॥ श्री० ३ ॥ त्रीञु वनमे जस उजल तेरो, फेलरयो जग जांणेजी,वंदनी कपुजनी कस कलको, आगम एम वषांणेजी० ॥ श्री० ४ ॥ तुं जगजीवन अंतरजामी, प्राण आधार पीयारोजी, सव वीध लायक सत सहायक, ञक्त वत्सल वृध थारोजी. ॥ श्री. ५ ॥ अष्ठ सीध नवनीधको दाता, तो सम अवरन कोयजी, वधे तेज सेवगको दीनश जेथ तेथ जय होयजी. ॥ श्री. ६ ॥ अनंत ज्ञांन दर्शन संपती लेइ, शञगयो अवीकारीजी अवीचल ञक्ती वीनेचंद, कूद्यो तो जांणुं रीजवारीजीः ॥ श्री. ७ ॥

॥ ढाल ३. ॥

आज मांरां संन्नव जीनके, हीत चीत सुंगुंण गासांराज, मधुर २ सुर राग अलापी, गहरे साद गूंजा सांराज. ॥ आ. १ ॥ नृपजी तारथ सेन्या रांणी, तसु सुतसे वगथासां राज नव धान्नकन्नाव सुंकरने, प्रेम मगन होयजा सांराज ॥ आ. २ ॥ मन वचकायलाय प्रन्नुसेती नीस-दीन सासज सासां, राज संन्नव जीवनकी मोहन मुरत, दीये निरतर ध्यांसां राज. ॥ आ. ३ ॥ दीनदयाल दीनबंधवके, पांना जादक हांसां राज तन धन प्रांण समरपी प्रन्नुके, इन परवे गरिजां सांराज. ॥ आ. ४ ॥ अष्टक रमदल अती जो-रावर, तेजी त्यां सुषपासां राजजालम मोहमार फोजांमे, साहस करी न्नगासांराज. ॥ आ.५॥ उवट पंथ तजी दूर गतको, सुन्नगत पथ संन्नासां राज आगम अर्थ तणे अनुसारे, अनुन्नव

दसा अन्यां सांराज. ॥ आ. ६ ॥ कांम क्रोध मद लोन्न कपट तज, नीज गुण सुंलीवलासां राजवीनेचंद संन्नव जीन तुठां आवागमण मीटां सांराज. ॥ आ. ७ ॥

॥ ढाल ४. ॥

श्री अन्नोनंदन दुष नीकंदन, वंदन पूजन जोगजी; आसा पूरो चिंता चूरो, आपो सुष आरोगजी० ॥ श्री० १ ॥ केइ सेव करे शंकरकी, केइ न्नजे मुरारजी, गणपती श्रुर्य उन्ना केइ समरे; हूंसी मरुं अवीकारजी० ॥ श्री० २॥ संवर रायसी धारत रांणी, तेहनो आतम जातजी; प्रांण पीयारो साहेव साचो, तूंहीजी मातने तातजी० ॥ श्री० ३ ॥ देवकृपा सुंपां मेली ठमी, सोइन न्नवको सुषजी; तोतूं ठांइन न्नव परन्नवमे, कटे यनपांमे दूषजी० ॥श्री० ४॥

यद्यपी इंद्र नद्रनी वाजेः तदपी करतनो हालजीः तुं पूजनीक नेरेंद्रइंद्रकोः दीन दयाल कृपालजीः ॥ श्री० ५ ॥ जवलग आवा गमण न बुटेः तवलग ए अरदासजीः संपत सहीत ज्ञांन समगत गूणः पाउ द्रढ वीसवासजीः ॥ श्री० ६ ॥ अधमउ धारण वीरदती हारोः चावो इण ससारजीः लाज वीनेचंदकी अवतोनेः भवनीदी पार उतारजीः ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल० ५ ॥

सुमतजीने सरसाह्वोजीः मेयरथ नृपनो नदः सुमंगला माता तणोजीः तनय सदा सुषकदः ॥ १ प्रभु त्रीभुवन तीलोजीः ॥ सुमतीश दातारः महामहीमां नीलोजीः प्रणमु वार हजारः ॥ प्र० २ ॥ मधू करनो मन मोहीयोजी मालती कूसम सुवासः त्यूंमुज मन मोयो

सहीजीः जीन महीमा सुवीलासः ॥ प्र० ३
ज्युं पंकज सुर्य मुपीजीः वीकसे सुर्य प्रका
त्यूं मुज मन गहगहेजीः सुनी जीन चरी
हूलासः ॥ प्र० ४ ॥ पपइयोपी उ२ करेज
जान वर्षा ऋतु जेहः त्युं मोमीन नीशदी
रहेजीः जीन समरणसुं नेहः ॥ प्र० ५ ॥ का
भोगनी लालचाजीः थीरता न धरे मंनः वी
तुंम भजन प्रतापतीजीः दाजे दूर मत वं
॥ प्र० ६ ॥ भवनीध पार उतारीयेजीः भ
वछल भगवांनः वीनेचंदकी वीनतीजीः मां
कृपानीधांनः ॥ प्र० ७ ॥

॥ ढाल ६ ॥

पदम प्रभु पावन नांम तीहारोः पतीत उद
हरण हारोः ॥ प० टेक ॥ जद पीजी वर भील

क्रसाइः अती पापीष्टज मारोः तद पीजी वहिं स्यातज प्रभु न्नजः होत हींस्यासु न्यारोः ॥ प० १ ॥ गोत्रांमण प्रमदा वालककीः मोटी हिस्या चारोः तेहनो कर्णहार प्रभु न्नजलेः होत हिंस्यासु न्यारोः ॥ प० २ ॥ वेश्य चूगल वीनाल जुवारीः चोर महा वटपारोः वो इत्या-दीक न्नजे प्रभु तोनेः तो नीवृते ससारोः ॥ प० ३ ॥ पाप परालको पूजवन्यो अतीः मांनुं मेर अकारोः ते तुमनांमहुंता सनसेतीः सहे जे पर जलत संसारोः ॥ प० ४ ॥ परम धरमको मर ममहारसः सो तुम नाम उचारोः यांसम मंत्र नही कोइ दूजोः त्रीभुवन मोहनगारोः ॥ प० ५ ॥ तो सुमरण वीनइ नकली युगमेः अवर न कोइ आधारोः मे वली जाउं तो समरण परः दीन २ प्रीत वधारोः ॥ प० ६ ॥ सुसमा रांणीको अग जाततुंः श्रीधर राय कूमारोः

वीनेचंद कहे नाथ नीरंजणः जीवन प्राण हमांरोः ॥ प० ७ ॥

॥ ढाल ७ ॥

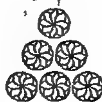
प्रतीष्ट सेन नरेसरको सुतः पृथ्वी तुम्ममहेतारीः सुगण सनेही साहेव साचोः सेवगने सुपकारीः ॥ श्री० १ ॥ श्री जीनराज सुपासः पूरो आस हमारीः ॥ टेक० ॥ धर्म कांम धन मुक्त इत्यादीकः मनवछीत सुप पूरोः वार २ मुज वीनती एहीः भव २ चिंता चूरोः ॥ श्री० २ ॥ जगत सीरोमण भक्ती तीहारीः कल्प वृक्ष समजाणुंः पूर्ण बृम प्रभु परमेश्वरः भव २तने पीछाणुंः ॥ श्री० २ ॥ हूं सेवग तुं साहीव मेरोः पावन पुरष वीज्ञांनीः जन्म २ जीत तीथ जाउं तोः पालो प्रीत पूरांणीः ॥ श्री० ४ ॥ तारण तारण असरण शरणकोः वीर दइ सो तुमं सोहेः तो

सम दीनदयाल जगतमेः इन्द्र नरेंद्रन कोहेः ॥ श्री० ५ ॥ स्वयंभु रमण वडो समुद्रामेः सेल सुमेर वीराजेः तुग कूर त्रीभुवनमे मोटोः भक्ती कीयां दूष भाजेः ॥ श्री ६ ॥ आगम अगोचर तुं अविनासीः अलक अर्पंभ अरुपीः चाहत दर्शन वीने चंद तेरोः सत चीताणद-सरुपीः ॥ श्री ७ ॥

॥ ढाल ८ ॥

जय २ जगत सीरोमणीः हूं सेवकने तुं धणी अवतो सुंगाभी भणीः प्रभु आसा पूरो हम तणीः १ मुज महेरकरोः चंदा प्रभु जगजीवन अतरजामीः भवदूष हरो, सुणीये अर्ज हमारी, त्रीभुवन सांमी. ॥ २ ॥ चंदपूरी नगरी हती, महासेन नामे नरपती; राणी श्री लिक्षमावती, तसु नंदन तुं चढती रती. ॥मु० ३॥ तु सर्वज्ञ

महाज्ञाता, आत्म अनुभवको दाता; तुमतुठां लहीये साता,धनरजे जगमें तुम ध्याता.॥ म० ४ ॥ सिवसुप प्रार्थना करसुं, उजल ध्यान हीये धरसुं; रसना तुम महीमा करसुं, प्रभु इनवीध भवसायर तीरसुं. ॥ मु० ५ ॥ चंद चिकोरनके मनमे, गाज अवाज हूवे घनमे; पीयु अभी-लाषा भीया तनमे, ज्यूं वसीये प्रभू मेरा चीत मे. ॥ मु० ६ ॥ जो सुभ नीजर साहव तेरी, तो मानो प्रभू वीनती मेरी; काटो कर्म भूम फेरी, प्रभू पुनरपी नही परुं भवफेरी. ॥ मु० ७ ॥ आत्मज्ञांन दसा जागी, प्रभू तुंम सेती लावन्या लागी; अन्य देव भूमना भागी, वीनेचंद तीहारो अनूरागी. ॥ मु० ८ ॥



॥ ढाल ए ॥

काकंदी नगरी ज्ञली हो, श्री सुग्रीव ज्रूपाल; रामातसु पटरागणी हो, तसु सुत पर्म कृपाल. ॥ १ ॥ श्री सुवद् जीनेश्वर वंदीये हो, टेरः त्यागी प्रज्रूता राजनी हो, लीधो सजम-ज्ञार; निज आतम अनुज्ञावथी हो, प्रज्रू पांम्या पद अवीकार. ॥ श्री० २ ॥ अष्ट करमनो राजवी हो, मोह प्रथम क्षय कीन, सुद समकीत चारीत्रनो हो, परमपायक गुण लीन. ॥श्री०३॥ ज्ञांनावर्णि दर्शनावर्णी हो, अंतराय कीयो अंत; ज्ञांन दर्शन वले एत्रीहूं हो, प्रगट्या अनंत. ॥ श्री० ४ ॥ अवाबाह सुष पामीया हो, वेदनी कर्मष पायः अवगाहना अटल लही हो, आउषय करने जीनराय. ॥ श्री०५ ॥ नांम कर्मनो क्षेकरी हो, असुर्ति कहायः अगरु लघूपणो अनुज्ञव्यो हो, गोत्रकर्मथी मुकाय.

॥ श्री० ६ ॥ अष्टगुणां कर ओलख्यो हो, ज्योती रुप भगवंतः वीनेचंदके उर वसो हो, अहोनीस प्रभू पूफदंत. ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल १० ॥ जदवारी राग ॥

श्री द्रढरथ नृपती पीता, नंदा थारी मायः रोम२ प्रभू मोभणी, शितल नांम कहाय. ॥ १ ॥ जय२ जीन त्रीभूवन धणी, करुणानीधी कीरतारः सेव्यां सरुतरु जेहवो, वंछीत सुष दातार. ॥ ज० २ प्रांण पीयारो तुं प्रभू, पतीवरता पती जेमः लगन निरंतर लग रही, दीन२ इधक प्रेम. ॥ ज० ३ ॥ सीतल चंदननी परे, जपता नीसदीन जापः विषय कषायनी उपनी, मेटो भवदूष ताप. ॥ ज० ४ ॥ आरतरुद्र परणांमथी, उपजे चिंता अनेकः ते दूषकाए मांनसी, आपो अवीचल विवेक.॥ ज०५ ॥ रोगा

दीक पुध्यात्रीपा, शस्त्र अस्त्र प्रहारः सकल सरीरी दूप हरो, हीतसुं वीरद विचार: ॥ ज० ६ ॥ सुप्रसन होय सीतल प्रभू, तुं आसा विश्रांमः विनयचंद कहे मोभणी, दीजे मुक्ती मुकांम. ॥ ज० ७ ॥

॥ ढाल ११ ॥

चेतन जांण कल्याण करणको, आंण मिल्यो अवसररेः शास्त्र प्रमांण पीछाण प्रभू गुण, मन चंचल थीर कररे. ॥ १ ॥ श्रीयंश जीनेंद्र सीमररे. टेर० सास उसास विलास भजनको, द्रढ विसवास पकररेः अजपाभ्यास प्रकाश हिये वीच, सोसी मरण नीजवररे. ॥ ॥ श्री० २ ॥ कंद्रप क्रोध लोभ मद माया, ए सवही परहररे; सम्यक द्रष्टी सहीज सुप प्रगटे, ज्ञान दसा अनुसररे. ॥ श्री० ३ ॥

झुठ प्रपंच जोवन तन धन अरु, सज्जन सनेही धररे; ठीनमे ठोरू चले परन्नवकूं, बांध सुन्ना सुन्न थररे. ॥ ध०श्री० ४॥ मांणस जन्म पदारथ जीनकी, आसा करत अमररे; ते पूर्व श्रुकृत कमायो, धर्म मरम दील धररे. ॥ ४ श्री० ५ ॥ विश्वसेन नृप वीश्रा राणीको, नंदन तुम वीसररे, सहेजे मिटे अज्ञान अविद्या, न्नक्तिपंथ पग न्नररे. ॥ ४ श्री० ६ ॥ तुं अविकार विचार आत्म गुण, न्नम जंजालमपररे; पुदगल चाय मिटाय विनेचंद, तुं जीन तेन अवररे. ॥ ४ श्री० ७ ॥

॥ ढाल १२ ॥

प्रणमुं वासपुज्य जीननायक, सदा सहायक तुं मेरो, विषमी वाट घाट न्नय थानक, परमाश्रय सरनो तेरो. ॥ प्र० १ ॥ घल दल प्रवल ड्डुप अनि दारुण, जो चोतर्प दीये घेरो; तो

ीण कृपा तुंमारी प्रभुजी, अरीयण हूय प्रगटे
ेरो. ॥ प्र० २ ॥ विकट पहाड़ उजाड़ विचाले,
ोर कूपात्र करे हेरो; तिण वीरीयां करी तोय
ीमरण, कोउयन ठीन सके फेरो. ॥ प्र० ३ ॥
ाजा पातस्या जो कोइ कोपे, अती तकरार
रे ठेरो; तदपीलु अनुकूल हूवे तो, ठीनमांहे
ुट जाय केरो ॥ प्र० ४ ॥ राक्स भूत पीसाच
ाकणि, साकनी भय नावे नेड़ो; दुष्ट मुष्ट
ल ठेड़ न लागे, प्रभू तुम नांम भज्यां गेरो;
। प्र० ५ ॥ वीस्फोटक कूष्टादीक सकट, रोग
असाध्य मिटे देहरो, विष प्यालो इम्रत होय
प्रगटे, जो विसवासजी नंद केरो ॥ प्र० ६ ॥
मात जया वसु नृपके नदन, तत्व जथारथ
ुध प्रेरो; वे कर जोड़ी विनेचंद विनवे,
ोग मिटे मुज भव फेरो. ॥ प्र० ७ ॥

॥ अ० ४ ॥ पन्नणे श्रीमुष सरस्वति, देवीआपो आप; कही न सके तुंमसता, अलष अजपा जाप. ॥ अ० ५ ॥ मनबुध वाणी तो विषे, पहूचे नही लीगार; साषी लोकालोकनो, निरवीकल्प निर्वीकार. ॥ अ० ६ ॥ मा सुजसा सिहरथ पीता, तसुसुत अनंत जीनंद; विनेचंद अब ओलष्यो, साहीब सहेजानंद. ॥ अ० ७ ॥

॥ ढाल १५ ॥

धर्म जिनेसर मुज हिवरे वसो, प्यारा प्राण समान; कबुह न विसरुं हो चीतारुं सही, सदा अषंरुत ध्यान. ॥ ध० १ ॥ ज्यूं पणीहारी हो कूंभ न वीसरे, नटवो वरत निधांन; पलक न वीसरे हो पदमनी पिउ भणी, चकवो न विसरे भांन. ॥ ध०२ ॥ ज्यूं लोभी मन धनकी लालसा, भोगीके मन भोग; रोगीके मन माने

उपधी, जोगीके मन जोग ॥ ध० ३ ॥ इण पर लागी हो पूरण प्रीतमी, जाव जीव परयंतः भवे२ चाहूं हो नपके आंतरे, भयभंजन भग-वंत. ॥ ध०४ ॥ कांम क्रोध मद मठर लोभथी, कपटी कूटल कठोरः इत्यादिक अवगुण कर हूं भयों, उदे कर्मके जोर. ॥ ध० ५ ॥ तेज प्रताप तुमारो प्रगटे, मुज हीयमांमे आयः तो हुं आतमगुण संभालने, अनंत वल कही वाय. ॥ ध०६ ॥ भानुनृप सुव्रताजीननी तणो, अग जात अभीरांमः विनयचदने वलभ तुं प्रभु, सुध चेतन गुणधांम. ॥ ध० ७ ॥

॥ ढाल १६ ॥ रसीयानी

वासुसेन नृप अचला पटरागनी, तसुसुत कूल सीणगारहोः जीनेसरः जनमत संत्री करी निज देशमे, मीरगी मार निवारहो ॥जी० १॥

निज रुपमे लागी; तुंमही मम एकता जाणुं, एकत ज्रमें कल्पना मांनु. ॥ कूं० ६ ॥ श्रीदेवी सुर नृप नंदा, अहो सर्व इश्वर सुप कंदा; विनेचंद लिन लुम गुंणमे, न व्यापे अवीधा जनमे. ॥ कूं० ७ ॥

॥ ढाल १८ ॥

तुं चेतन ज्ञज अरनाथने, ते प्रज्ञु त्रिज्ञुवन राय; तातसु दरसन देवी माता, तेहनो पुत्र कहाय. ॥ १ ॥ साहव सीधो, अरहनाथ अवीनासीः सिव सुप लीधो, विमलवीज्ञांन विलासी. ॥ सा० २ ॥ कोरु जतन करतां नही पांमे, एहवी मोटी मुमः तेजीन ज्ञक्तकरने लहये, मुक्ती अमोल कटुम.॥ सा०३ ॥ समकीत सहीत कीया जिनज्ञक्ती, ज्ञान दर्शन चारीत्रः तप विरज उपीयो गतीहार, प्रगटे परम पवित्र.

॥ सा० ४ ॥ स उपयोग सरुप चितानंद, जीनवरने तुं एकः देत अवीदयावी भरम मेटो, वाधो सुप विवेक. ॥ सा० ५ ॥ अलप अरुप अपंकृत अविचल, आगम अगोचर आपः नीरवीकलपनी सकलंक निरजन, अदभुत जोत अमाप. ॥ सा० ६ ॥ अलप अनुभव इमती धांको, प्रेम सहीत नीत पीजेः हु तु ठोरू विनेचंद अतस, आतमरांम रमीजे. ॥ सा० ७ ॥

॥ ढाल १९ ॥

॥ लावणी ॥

मलीजीन वाल ब्रुमचारी, कून्न पीता परभावती मैयाः जीनकी कुमारी. टेरः मालती कूप कदरा मांही, उपना अवतारीः मालती कूशम मालनी वंछा, जननी उरधारी. ॥म० १॥ तीणथी नांम मलीजिन थाप्यो, त्री भुवन

गोढथी, एहवी अनुग्रहकरो परीब्रमके. ॥ श्री० ३ ॥ सादपणो नही संगर्यों, श्रावग वृत नही कीया अंगीकारतो; आदर्या तो न अराधीया, तेहथी रुलीयो हूं अनंत संसारतो. ॥ श्री ४ ॥ अवसमकीत वृत आदरु, तदपी अराधी उतरुं नवपारतो; जनमजीतव सफलो करुं, इणपर वीनवूं वार हजारतो. ॥ श्री० ६ ॥ सुमती नराधीप तुंम पीता, धनश्र श्रीपदमावती माय तो; तसुसुत श्रीन्नवन तीलकतु० वंद तवीने चंदसीसन मायतो० ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल २१ ॥ ख्यालकी ॥

वीजेसेन नृप विप्रा रांणी, नमीनाथ जीन जायो; चोष्ट इंद्र मील कीयो ओछव, सुरनर आणंद पायोरे. ॥ १ ॥ सुग्यांनी जीवा, न्नजलेरे जीन इकवीसमाः टेरः न्नजन कीयां न्नवश्नां

दुक्रत, दुष दूजाग मीट जावे; कांम क्रोध मद मछर त्रसा, दूरमती नीकट न आवेरे. ॥ सु० २ ॥ जीवादीक नव तत्व हिये धर, गेय हेय समजीजे; तीजी उपाधेय ओलषने, समकीत निरमल कीजेरे. ॥ सु० ३ ॥ जीव अजीव वदते-तीनु, गेह जथा रथ जांनुं, पुन्य पाप आश्रव परहरीये, हेय पदारथ मानुंरे. ॥ सु० ४ ॥ संवर-मोक्ष निरजरा, नीजगुण उपादे आदरीये, कारण कारज समज भली वीध, भीन श्नीरणो करीयोरे. ॥ सु० ५ ॥ कारन ज्ञांनसरुप जीवको, कारज कियो पसारो, दोनुं साषी सुध चेतन, आपो षोज त्यारोरे. ॥ सु० ६ ॥ तुसो प्रभु प्रभु सो तुंहे, द्वैत कल्पनामेटो, सत चेतन आनंद विनेचद, परमारथ प्रभु भेट्यारे. ॥ सु० ७ ॥

॥ ढाल २२ ॥

समुद्र वीजे सुत श्रीनेमीसर, जादवकूलनो

हार; परणीने कीम परहरो, थांरो कीम नीकले जमवार. ॥ १ ॥ जंबू कयो मानले रे जाया, मत ले संजमभार. टेरः ए आवुइं सुंदरी जंबू, तुम वीना वीलषी थाय; रवी आथम्यां जीण-परे, थारो वदन कमल कुमलाय. ॥ जं. २ ॥ सतीहीणा छे मानवी माता, मीथ्यातमे भर-पूरः रुपे रमणी जे रमे, ज्यांने दूरगत नही छे दूर. ॥ ३ ॥ माता मोरी सांभलो, जणनी लेसुं संजमभारः टेरः पाली पोसी मोटो कीयो, जंबू इम कीम दो छीटकाय; मात पीताने मेलो रोवता, थारे दया नही दिलमाय. ॥ जं. ४ ॥ एक लोटी पाणी पीउ, जीणमे मातपीता अनेक; सगलांरी दया पालसुं, आप समांणा लेष. ॥ माः ५ ॥ थे मारे आंधा लाकडी; थे मारे प्रांण आधार; तुज वीना मारे जग सुनो, भावे जांण मजांण. ॥ ज. ६ ॥ मातपीता मेला-

वर्‍यो, मीलीया अनंती वार; तीर्ण तार्ण एको नही, पूत पीता परीवार. ॥ जं०७॥ ए आंवुही सुंदरी, सुष वीलसो ससार; दीन णठा पछीया पठे, थे लल लीजो सजमभार. ॥ जं० ८ ॥ रतन जरुतनो पिंजरो, सुवो तो जाणे बंद; सुष वीलसे संसारना, ज्ञानी जाणे फंद. ॥मा० एं ॥ आंवुइ कांमणी जंबू, समजाइ एकण रात; जीनजीनो धर्म उलष्यो, संजम लेसी मोरी सात. ॥ मा० १० ॥ मोह मती राषो मारा मातजी, मोह कीयां बधे कर्म; आहट दोहट मन मत करो, थे तो करो श्रीजीनधर्म. ॥ मा० ११ ॥ मात पीताने तारीया, तारी आवुही नार; सासु ससराने तारीया, जबू लीनो संजमभार ॥ जं० १२॥ पांचसे चोरांने तारीया जंबू, लीनो संजमभार; इग्यारे जीव सुगते गया, ज्यारे वरत्या जेजेकार. ॥ जं० १३ ॥ जंबू

पुरण कृपा वीनेचंद प्रजुकी, अवते उलष पामी. ॥ श्री० ७ ॥

॥ ढाल २३ ॥

अश्वसेन नृप कूलतीलोरे, वांमादेवीनो नंद; चिंतामण चीतमे वसेरे, दूरटले दूषकंद. ॥ १ ॥ जीवरे तुं पास जीनेसर वंद. टेरः जरू चेतन मीस्र तपणेरे, कर्म शुन्नाशुन्न थाय; तेवी न्नम जग कल्पनारे, आत्म अनुन्नव न्याय. ॥ जी० २ ॥ वेमी न्नय माने जथारे, सुंनधर वेताल; स्यूमुर्प आत्म वीषेरे, न्नांळ्यो जग न्नम-जाल. ॥ जी० ३ ॥ सर्प अंधारे राशलीरे, रुपो-सीप मंजार; मार्ग आज वर्णवारे, तुं आत्म संसार. ॥ जी० ४ ॥ अगन वीषे नही जो मणीरे, मणीसे अगन न होय; सुपनेकी संपत नहीरे, ज्यूं आत्ममे जग जोय. ॥ जी० ५ ॥ वांज पुत्र जनमे नहीरे, संग सुसे नीरनाह; कूस मन

लगि व्योममरे, ज्यूं जगत न आतम मांह.
॥ श्री० ६ ॥ अजोनी छे आतमारे, हू निचे
त्रीहुं काल; वीनेचंद अनुभव जगीरे, तुं नीजरुप
संभाल. ॥ जी० ७ ॥

॥ ढाल २४ ॥

धन२ जनक सिधारथ राजा, धन त्रसलादे
मातरे प्रांणी; ज्यां सुत जायो गोदपे लायो,
वृद्धमान वीख्यातरे प्रांणी. ॥ १ ॥ श्रीमहावीर
नमो वरनांणी, सासण जेहनो जांणरे, प्रवच-
नसार विचार हीयामे, कीजे अर्थ प्रमांणरे
॥ श्री० २ ॥ सुत्र अने आचार तपसीया, च्यार
प्रकार समाधाररे; ते करीये भवसागर तरीये,
आगमभाव अराधरे. ॥ श्री० ३ ॥ जो कंचन
त्रीहूं काल कहीजे, भुषन नाम अनेकरे, त्यु
जग नाम चराचर जोनी, हे चेतन गुण ते करे.
॥ श्री. ४ ॥ अपणो आपवीपे थीर आतम, सोह

भल चेतीयोरे भले गया मोक्ष मजार. ॥टेर॥
॥ ईती संपूर्णम् ॥

॥ नं० १३० ॥

॥ ठाकूर भले वीराजोजी. ए राग. ॥

साहेब भले वीराजोजी, चोवीसे महाराज; मुक्तीमे भले वीराजोजी: टेर: रुषभ अजीत संभव अभीनदन, सुमती पदम सुपास; चंदा प्रभुने सुवद जीनेसर, सीतल दो वीसवास. ॥ सा० १ ॥ श्री श्रेयांस वासपुज्य समरो, वीमल वीमल मतीवंत; अनंतनाथ प्रभू धर्म जीनेसर, शॉत करो श्रीसंत. ॥ सा० २ ॥ कूंथुनाथ प्रभू करुणा सागर, अरहनाथ जगदीस; मलीनाथ श्रीमुंनीसुव्रत, नीत्य नमावूं सीस. ॥ सा० ३ ॥ इकवीसमा श्रीनमीनाथ नीरुपम; रीष्ट नेमी जगधार; तोरणसे पाछा फीरया, प्रभू

सीवरमणी भरतार. ॥सा०४॥ पारस२ सारषा, प्रभूना वास रीषानाथ; वृध्मांन सासनका सांमी, प्रणमुं जोरी हात. ॥ सा० ५ ॥ तुंम वीनां दूष पायो अनंता, जनम मरण जंजाल; तीलोक रूष कहे जीम तीम करने, तारो दीन दयाल. ॥ सा० ६ ॥

इति समापतम

॥ कूरुलीया ॥

सुभ दीन चतुर मास कीयो, एमदावादके माय, सांमीजी माहाराजका, दर्शन कीयां सुष थाय. २ दयाल मुंनी दीपत एसे, सरद पुनमकी रेण; चंद्रसा चलकत जेसे, केसु कवीता कहे. श्रावक नीत वंदन जाते, करते मोटा पाप, सवीनर संपत पाते १